जिनवाणी

नमस्कारमंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच णमुक्कारो सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

दिसम्बर, 2001 मार्गशीर्ष, 2058

अलंकारों के सौंदर्य शिल्प!

देश के सुविख्यात स्वर्ण आभूषण प्रतिष्ठान

" रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स "

जलगाँव के यहाँ।

सोने - चांदी के यह सुंदर अलंकार शिल्प!

अलंकारों के सैंकडो विविधतम नये नमूने, एक से बढकर एक आकर्षक कलात्मक कारीगरी से सजे अनगिनत डिजाईन्स।

कुंदन-जडाव, मीनाकाम, ऑक्साईड पॉलीश, छिलाई व कास्टींग काम की उच्चतम श्रेणी।

हीरों के आभूषणों की नई विशाल मालिका।

चांदी में बने नये मनमोहक वैभवशाली बर्तन हाजिर स्टॉक में उपलब्ध हैं।

गहनों की 'वापसी विश्वसनीयता' स्पष्ट रूपसे बिल पर और अलंकारों पर भी।

व्यापारियों के लिए सोने गहने एवं चांदी पात्रों की होलसेल बिक्री सेवा शुरू है।

रतनलाल सी. बाफना, ज्वेलर्स

पारस महल
चांदी बर्तन शोरुम
'शुद्ध आहार शाकाहार'

सुभाष चौक जलगाँव
दूरभाष : २२३९०३, २२५९०३,
२२२६२९, २२२६३०

नयनतारा
स्वर्णालंकार शोरुम
डायमंड शोरुम
(रविवार अवकाश)

चेतावनी : हमारी कहीं भी शाखा एवं एजंट नहीं!

जिनवाणी

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं करेंति जे भावेण।
अमला असंकिलिट्ठा, ते होंति परित्तसंसारी।।
मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

- **प्रकाशक**
  प्रकाशचन्द डागा
  मंत्री– सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
  दुकान नम्बर 182.183 के ऊपर, बापू बाजार,
  जयपुर–302003 (राज.), फोन नं. 565997
- **संस्थापक**
  श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़
- **प्रधान सम्पादक**
  डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी–एच.डी.
- **सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र**
  3 K 25, कुड़ी भगतासनी
  हाउसिंग बोर्ड
  जोधपुर– 342005(राज.)
  फोन नं. 0291–747981
- **सम्पादक मण्डल**
  डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी–एच.डी
- भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
  रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
- **सदस्यता**

स्तम्भ सदस्यता	**11000 रु.**
संरक्षक सदस्यता	**5000 रु.**
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

visit us at:www.jinwani.com

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

मणोगयं वक्कगयं,
जाणित्ताऽयरियस्स उ।
तं परिगिज्झ वायाए,
कम्मुणा उववायए।।

–उत्तराध्ययन सूत्र 1.43

भाव मनोगत और वाक्यगत,
गुरुवाणी का ग्रहण करे।
भाव समझकर कार्यरूप में,
आज्ञा का स्वीकार करे ।।४३।।

दिसम्बर 2001
वीर निर्वाण सं. 2528
मार्गशीर्ष, 2058

वर्ष : 58 अंक :12

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस,
मोतीसिंह भोमियों का रास्ता,
जयपुर, फोन : 562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन/निबन्ध

चेत सके तो चेत रे मानव	: आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	10
पाँच समिति : एक चिन्तन	: श्री रमेश मुनि शास्त्री	16
पर्यावरण-संरक्षण में अनर्थदण्ड विरमणव्रत का महत्त्व	: डॉ. मंजुला बम्ब	20
आधुनिक विश्व में अहिंसा की प्रासंगिकता	: श्री दुलीचन्द जैन	25
महामंत्र णमोक्कार : स्वरूप एवं माहात्म्य (5)	: श्री जशकरण डागा	37
मेथी से हृदय की चिकित्सा	: श्री चंचलमल चोरड़िया	39
लड़ाई मजहब के नाम पर	: सुश्री शर्मिला जैन 'गोलेछा'	42

विचार/आगम-परिचय/तथ्य/संवाद

महावीर वाणी (श्रावक धर्म)	: संकलित	6
आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. : एक जीवन झाँकी	: जोधपुर प्रस्तुति	31
जिज्ञासा और समाधान	: संकलित	34
भगवान महावीर : 101 तथ्य (6)	: श्री राजेश जैन 'देवकर'	40
भ्रूण हत्या	: श्री राजेन्द्र सिंघवी	43
Let us know abcd.....z	: Shweta Kankaria	44
उत्तराध्ययन सूत्र : 35वाँ अध्ययन	: प्रो. चाँदमल कर्णावट	45

कथा/कविता/प्रसंग

पूज्य हीरागुरुगुणाष्टकम्	: पं. लक्ष्मण वासुदेव माण्डवगणे	7
राजस्थानी दोहे	: श्री दिलीप धींग 'जैन'	9
मुक्ति धाम	: श्री प्रकाश कर्णावट	15
नर जन्म व्यर्थ है	: श्री वृषभ काटोलकर	24
सुनहरा भोर आएगा	: डॉ. (श्रीमती) चन्दनबाला मारु	36
महत्ता की कसौटी	: सुश्री प्रज्ञा मोदी	47
छब्बीस सूत्री नियम–पत्र	: श्री दिलीप धींग 'जैन'	48

स्तम्भ/ अन्य

सम्पादकीय	: डॉ. धर्मचन्द जैन	3
साहित्य–समीक्षा	: डॉ. धर्मचन्द जैन	51
समाज–दर्शन	: संकलित	52
श्रद्धांजलि	: संकलित	75
साभार–प्राप्ति	: संकलित	78

सम्पादकीय

धर्म की भयावहता

डॉ. धर्मचन्द जैन

धर्म के दो रूप हैं– पहला क्रियाकाण्डात्मक और दूसरा आन्तरिक निर्मल वृत्त्यात्मक। इनमें धर्म का वास्तविक रूप तो आन्तरिक निर्मलवृत्ति से ही जुड़ा हुआ है, किन्तु उसकी उपलब्धि के लिए बाह्य क्रियाओं को भी साधन माना जाता है। बाह्य क्रियाएँ आन्तरिक शुद्धि का फल तब प्रदान करती हैं जब वे ज्ञानपूर्वक की गई हों। अज्ञानात्मक एवं अन्धश्रद्धायुक्त धर्म की बाह्य प्रवृत्तियों से कोई विशेष लाभ नहीं होता। कई बार तो धर्म एवं अधर्म में भेदक रेखा खींचना भी अत्यन्त कठिन होता है। ऐसी स्थिति में धर्म कब अधर्म का भयावह रूप ग्रहण कर ले, कुछ कहा नहीं जा सकता। धर्म का उपयोग जब मनुष्य में रहे हुए राग एवं द्वेष को उकसाने में किया जाता है तो वही धर्म 'अधर्म' का रूप ग्रहण कर लेता है।

राग का परिष्कृत रूप श्रद्धा है। श्रद्धा कब राग बन जाए, इसे पहचानना स्वयं के लिए भी कठिन है। धर्म का कार्य राग को श्रद्धा में बदलना है, अन्ध–श्रद्धा या उकसाने वाले कार्यों को प्रोत्साहित करने में नहीं।

विश्व में अनेक ऐसे धर्म हैं जो मनुष्य में रहे हुए रागद्वेष को अपने प्रति आसक्ति में एवं अन्य धर्मावलम्बियों के प्रति घृणा एवं द्वेष में बदलते रहते हैं। मनुष्य को इस कार्य में धर्म नेताओं एवं सहधार्मिकों का सम्बल मिल जाता है। धार्मिकों की यह प्रवृत्ति दो धर्मों के बीच संघर्ष को जन्म देती है। विश्वपटल पर हो रहे संघर्षों को भी इस रूप में देखा जा सकता है। संघर्ष का कारण अर्थ, अनीति, राजनीति, काम आदि हों, तो बात समझ में आती है, किन्तु धर्म ही पारस्परिक संघर्ष एवं तनाव का कारण बन जाए तो फिर उस संघर्ष से तारने वाला कौन होगा?

जितने भी धर्म हैं,वे स्थूल रूप में सामाजिक स्तर पर भाईचारे एवं मैत्रीभाव की बात कहते हैं, वैर–विरोध को भूलकर क्षमा का पाठ पढाते हैं, किन्तु तथाकथित धार्मिकों में धर्म का वास्तविक तत्त्व सम्यक्रूपेण प्रवेश नहीं कर पाता और वे धर्म से हुए तात्कालिक लाभों के कारण उसके प्रति राग कर बैठते हैं। यह राग उन्हें तो अच्छा लगता ही है, किन्तु धर्म –पुरोधाओं को भी यह बहुत भाता है। इसके साथ ही शुरू होती है अन्य धर्मावलम्बियों के साथ संघर्ष की कहानी। कई देशों में धार्मिकों का शासन है। वहां धर्म के नाम पर कितना अधर्म होता है, यह किसी से छिपा नहीं है।

धर्म कोई भी हो, विकृतियाँ सबमें आ सकती हैं। विकृतियों के आते ही धर्म में अधर्म का प्रवेश प्रारम्भ हो जाता है। धर्म का उपदेश देने वाले कई सन्त, महात्मा स्वयं ऐशो–आराम का जीवन व्यतीत करते हैं, वे भोली जनता को किस प्रकार ठगते हैं, यह भोली जनता रागवश नहीं समझ पाती। श्रद्धा राग का रूप ले लेती है। जैन धर्म में भी ऐसे प्रसंग आये हैं, इसलिए जैन संतों एवं आचार्यों ने बार–बार क्रियोद्धार किए हैं। उन क्रियोद्धारों का ही फल है कि जैन सन्त आज भी पद विहार करते हैं एवं अपेक्षाकृत संयमी जीवन जीते हैं।

क्रियोद्धार की चेतना सदैव अपेक्षित है। आचार्य, संघ–प्रमुख, अनुशास्ता आदि ही इस चेतना के प्रमुख स्रोत होते हैं। उनकी सजगता से ही साधु–साध्वियों की चर्या इस प्रकार की होती है कि वे स्वयं धर्माचण कर अन्यों/गृहस्थों को भी प्रेरणा दे पाते हैं।

एक बात यहाँ पर ध्यातव्य है कि कोरा बाह्य आचरण भी आध्यात्मिक ज्ञान के रस के बिना अधिक फलदायी नहीं होता। उससे बाह्य आचरण का झूठा अभिमान जन्म ले लेता है, जो दूसरों के साथ संघर्ष को जन्म देता है। जिनमें ज्ञानपूर्वक आचरण है, वहां संघर्ष नहीं हो सकता। वहां वैर–विरोध भी धराशायी हो जाते हैं। ज्ञान भी जैन दर्शन में 'ज्ञान' तब कहा जाता है, जब दर्शन अर्थात् दृष्टि सम्यक् हो। दृष्टि की सम्यक्ता भी तब बनती है जब आत्मिक निर्मलता हो, अनन्तानुबंधी कषायचतुष्क का क्षय, उपशम या क्षयोपशम हो। दर्शनमोह का भी नाश आवश्यक है। सम्यग्दर्शन की यह व्याख्या भले ही जैन दर्शन में उपलब्ध हो, किन्तु यह सर्वत्र लागू होने से सार्वत्रिक है। किसी भी धर्म-दर्शन को मानने वाला क्यों न हो, वह दृष्टि की निर्मलता एवं कषाय क्षय के बल पर सम्यग्दृष्टि बन सकता है।

जब तक कोई भी धर्म या सम्प्रदाय अपने ही धर्म एवं सम्प्रदाय को मानने वाले को सम्यक्त्वी एवं शेष सबको मिथ्यात्वी मानता रहेगा तब तक संघर्ष, घृणा, द्वेष एवं राग का अन्त आने वाला नहीं है। तब वह धर्म एवं सम्प्रदाय एक सांसारिक परिवार मात्र ही होगा, आकार बड़ा या छोटा हो सकता है। बहुत कठिन है यह जानना कि भीतर में सम्यक्त्व आया या नहीं, किन्तु जैन धर्म में पांच लक्षण बताये हैं– 1. शम 2. संवेग 3. निर्वेद 4. अनुकम्पा और 5. आस्था। ये व्यावहारिक लक्षण हैं जो मानव में 1. कषाय की प्रशमता एवं समता 2. वीतरागता के प्रति उत्साह 3. विषय भोगों से विरति 4. दुःखियों के प्रति अनुकम्पा 5. वीतरागियों के वचन पर आस्था एवं प्राणीमात्र के प्रति आस्तिक्य के द्योतक हैं। इन्हें देखकर या नहीं देखकर सम्यक्त्व एवं असम्यक्त्व का बोध किया जा सकता है।

जो धर्म मानव की भीतरी शुद्धि करता है वही धर्म इस संसार में ग्राह्य है एवं इस ओर जो सन्त एवं महापुरुष प्रवृत्त हैं वे ही पूज्य रहेंगे, इसमें सन्देह नहीं। धार्मिकों का बाह्य प्रलोभन भी कई बार मानव को आकृष्ट करता है, और वह अपनी अभिलाषा पूर्ति के कारण उस ओर प्रवृत्त होता है, किन्तु जब तक उसे भीतरी शुद्धि से नहीं जोड़ा जायेगा, तब तक वह धर्म के सही रूप से वंचित ही रहेगा। इसलिए आवश्यकता है धर्म के सही रूप को प्रस्तुत कर व्यक्ति की चेतना को शुद्ध करने की।

यहां आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा। उन्होंने आगन्तुकों को स्वाध्याय एवं सामायिक का सम्बल दिया। स्वाध्याय से भीतर के ज्ञानचक्षु खुलते हैं तो सामायिक से आन्तरिक शुद्धि होती है। समता एवं प्रशमता की ओर चरण बढ़ते हैं। पौष शुक्ला चतुर्दशी दिनांक 27 जनवरी 2002 को आचार्य

श्री का 92वाँ जन्म-दिवस उपस्थित हो रहा है। उन्हें इस अवसर पर इसलिए शत शत प्रणाम कि उन्होंने जन–जन को दोषमुक्त बनाते हुए आत्म-विकास के लिए स्वावलम्बी बनाया। उन्होंने आचरण को ज्ञान से जोड़ा तथा ज्ञान को भी आचरण से जोड़ते हुए विद्वानों को संबोधित किया–'यस्तु क्रियावान् पुरुष सः विद्वान्।' आचार्यश्री हस्ती का चिन्तन आज भी भ. महावीर के उपदेशों की सरणि को जीवित रखे हुए है।

बात धर्म एवं अधर्म की भेद रेखा से प्रारम्भ हुई थी। यह रेखा व्यक्ति के अन्तःकरण में कब कहां खिंचती है, इसे वह स्वयं ही जान सकता है। इसीलिए जैनधर्म में दृष्टि के सम्यक् होने को महत्त्व दिया गया है। जब तक दृष्टि सम्यक् न हो तब तक स्वयं का अधर्म भी धर्म जैसा प्रतीत होता है। धर्म का सच्चा प्रारम्भ तो सम्यक् दृष्टि आने पर ही होता है। वह फिर काम, लोभ, मान, यश आदि की पूर्ति को लक्ष्य नहीं बनाता, वह तो आत्मनिर्मलता, समता, शान्ति एवं निर्वाण को ही लक्ष्य में रखता है। यदि ऐसा होता है तो फिर धार्मिकों के मध्य न घृणा होती है और न द्वेष। राग भी छूटता है, किन्तु सत्य धर्म पर श्रद्धा बलवती होती जाती है।

रागद्वेष की ग्रंथि को तोड़ने के लिए धर्म है, किन्तु जब धर्म के बाह्य आडम्बर में रागद्वेष को उकसाया एवं पनपाया जाता है तो वह धर्म भयावह बन जाता है, क्योंकि वह मानव का कल्याण नहीं करके पारस्परिक संघर्ष एवं टकराव को जन्म देता है, जिसे 'सभ्यताओं का संघर्ष' जैसा नाम भी (अमेरिका द्वारा) दे दिया जाता है।

शीलव्रत का आराधन

आज का युग भोगप्रधान युग है। ब्रह्मचर्य का पालन मनुष्य को अत्यधिक कठिन लगता है। सरकार भी भोग के साधनों को बढ़ावा देकर जनसंख्या को सीमित रखना चाहती है। इससे अनेक प्रकार के रोगों को बढ़ावा मिला है। विश्वस्तर पर 1 दिसम्बर को एड्स दिवस मनाकर एड्स की समाप्ति की कामना की गई। जब तक मानव संयम का महत्त्व नहीं समझेगा, तब तक इन रोगों पर पूर्ण नियन्त्रण सम्भव नहीं है। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपने 63वें जन्म-दिवस चैत्र कृष्णा 8 संवत् 2057 पर यह पावन संकल्प किया था कि वे इस वर्ष में 63 आजीवन ब्रह्मचर्यव्रती बनायेंगे। आचार्य श्री का यह शुभ संकल्प शीघ्र ही पूरा हो गया। संख्या निरन्तर वृद्धिगत है। 76 शीलव्रतियों के नाम तो जिनवाणी के इस अंक में आगे प्रकाशित हैं। आचार्य श्री का यह पावन प्रयत्न अहिंसा, संयम एवं तप रूप धर्म को प्रतिष्ठित करता है। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 39वाँ दीक्षा-दिवस कार्तिक शुक्ला 6 को तप–त्याग की साधना के साथ उपस्थित हुआ। उनके निर्मल यशस्वी चारित्र पालन, निर्व्यसनता अभियान,सामायिक–स्वाध्याय की प्रवृत्ति से इस समय भारत का महाराष्ट्र प्रान्त लाभान्वित हो रहा है। यशस्वी आचार्यश्री के सभी पावन संकल्प पूर्ण हों, ऐसी शुभकामनाएँ।

महावीर वाणी

श्रावक–धर्म

धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति। -सूत्रकृतांगसूत्र 2.2.39

सद्गृहस्थ सदा धर्मानुकूल ही अपनी आजीविका चलाते हैं।

चत्तारि समणोवासगा–अद्दागसमाणे, पडागसमाणे।
खाणुसमाणे, खरकंटसमाणे।। -स्थानांगसूत्र 4.3

श्रमणोपासक की चार कोटियां है– दर्पण के समान–स्वच्छ हृदयवाला। पताका के समान– अस्थिर हृदयवाला। स्थाणु के समान–मिथ्याग्रही। तीक्ष्ण कंटक के सामन– कटुभाषी।

अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अट्ठे,
अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे।-उव. 6.9

हे आयुष्मन्! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन ही अर्थ रूप है, और यही परमार्थ है। अन्य सभी निस्सार है।

अगारि सामाइयंगाइं, सड्ढी काएण फासए।
पोसहं दुहओ पक्खं, एगरायं न हावए।। -उत्तराध्ययनसूत्र 5.23

श्रद्धाशील अगारी-गृहस्थ सामायिक के अंगों का काया से सम्यक्रूप से पालन करे। दोनो पक्षों में किये जाने वाले पौषध को एक दिन-रात के लिए भी न छोड़े।

सामाइएणं सावज्जजोगविरइं जणयइ। -उत्तराध्ययनसूत्र 29.8

सामायिक से जीव सावद्ययोग से विरति–निवृत्ति का उपार्जन करता है।

चउव्वीसत्थएणं दंसणविसोहिं जणयइ। -उत्तराध्ययनसूत्र 29.9

चतुर्विंशतिस्तव से जीव सम्यक्त्व की विशुद्धि को प्राप्त होता है।

वन्दणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ।
उच्चागोयं कम्मं निबंधई।–उत्तराध्ययनसूत्र 29.10

वन्दना से जीव नीच कुल में उत्पन्न होने जैसे कर्मों को क्षीण करता है और ऊँचे कुल में उत्पन्न करने वाले कर्म का अर्जन करता है।

पडिक्कमणेणं वयछिद्दाइं पिहेइ।।-उत्तराध्ययनसूत्र 29.11

प्रतिक्रमण से जीव व्रत के छिद्रों को रोक देता है।

काउस्सग्गेणं तीयपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ।।-उत्तराध्ययनसूत्र 29.12

कायोत्सर्ग से जीव अतीत और वर्तमान के अतिचारों की विशुद्धि करता है।

पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं निरुम्भइ। -उत्तराध्ययनसूत्र 29.13

प्रत्याख्यान से जीव आस्रव द्वार का निरोध करता है।

सज्झाए वा निउत्तेण, सव्वदुक्खविमोक्खणे। -उत्तराध्ययनसूत्र 26.10

स्वाध्याय करते रहने से समस्त दुःखों से मुक्ति प्राप्त होती है।

पूज्यहीरागुरु-गुणाष्टकम्

मंगलाचरण

श्री रत्नहस्तिगण-नूतनज्ञानसूर्यम्,
शान्तं प्रसन्नवदनं चतुरं सुधीरम्।
प्राप्तं बहुश्रुतपदं करुणावतारम्,
नित्यं नमामि सुप्रियंकरहीराचन्द्रम्।।
भक्त्या नमामि सुप्रियंकर हीराचन्द्रम्।।

—महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.

मिथ्यात्वपंककलुषीकृतमानसान् नृन्,
धर्मोपदेशकतकेन विशुद्धयन्तम्।
सन्दर्श्य संयमपथं सुगतिं नयन्तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यं।।1।।

मिथ्यात्व रूपी कीचड़ से मलिन मानवरूपी सरोवर को धर्मरूपी फिटकरी से विशुद्धि प्रदान करने वाले, संयम का मार्ग बता कर सद्‌गति की ओर ले जानेवाले श्री हीराचन्द्र गुरुवर को नित्य प्रति भावपूर्वक प्रणाम करता हूँ।

जित्वेन्द्रियाणि सकलानि मनो निवेश्य,
आत्मन्यथो यमपरं नियमैश्च युक्तं।
नित्यं च धर्मकरणे समयं नयन्तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यं।।2।।

जिन्होंने सब इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर, मन को आत्मा में लगा दिया है, जो अहिंसा, सत्य आदि यमों व स्वाध्याय, संतोष आदि नियमों से युक्त हैं और निरन्तर धर्मकार्यों एवं धर्माचरण में समय को व्यतीत कर रहे हैं, ऐसे श्री हीराचन्द्र गुरुवर को निरन्तर श्रद्धापूर्वक नमस्कार करता हूँ।

दुर्वादि-मत्त-गज—गण्ड विभेदनार्थ,
पंचाननं जिनवरागमतत्त्वविज्ञं।
रत्नत्रये नियमितार्पितचित्तवृत्तिं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यं।।3।।

दुर्वादी रूपी मदोन्मत्त हाथियों के गण्डस्थल को भेदने में जो सिंह के समान हैं, जिनेश्वर भगवान के कहे गये आगम तत्त्वों को अच्छी तरह जानने वाले, रत्नत्रय की आराधना में अपनी चित्तवृत्ति को नियमित रूप से समर्पित करने वाले श्री हीराचन्द्र गुरुवर को भक्तिपूर्वक नित्य प्रति नमन करता हूँ।

शास्त्राण्यधीत्य सततं श्रुतपारदृक्त्वं,
तत्त्वार्थवित्त्वमधिगम्य चकासतं शम्।
सद्देशनाविहितधर्मविभावनं तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यं।।4।।

निरन्तर शास्त्रों का गहराई से अध्ययन स्वाध्याय करके श्रुत के रहस्य

रूपी अतल गहराइयों को देखने वाले, तत्त्व के गूढ़ अर्थ को जानकर समझ कर उससे प्राप्त ज्ञान के प्रकाश में सद्देशनायुक्त धर्म की प्रभावना करने वाले कल्याण कारक श्री हीराचन्द्र जी गुरुवर को सदा भावपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

दृष्ट्या जनान् करुणया परिनन्दयन्तं,
वाण्या सुधामधुरया परितोषयन्तम्।
भावं च धर्मचरणे परिवर्धयन्तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यम्।।5।।

अपनी करुणामयी दृष्टि द्वारा लोगों को आनन्द प्रदान करने वाले, अमृत तुल्य मधुर वाणी से जन समुदाय को पूर्ण संतुष्ट करने वाले और धर्माचरण में लोगों के भावों को निरन्तर अभिवर्द्धित करने वाले श्री हीराचन्द्र गुरुवर को नित्य भाव युक्त नमन करता हूँ।

योगत्रयं शुभतरं समितीश्च पंच,
क्षान्त्यादि धर्मनिचयं सुमहाव्रतं च।
यः सेवते प्रशमभावरतोऽनिशं तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यम्।।6।।

जो प्रतिदिन मन, वचन और काया के अत्यंत ही शुभ योगों का, पांचों समितियों का, क्षान्ति आदि दस प्रकार के साधु–धर्म का और पांचों महाव्रतों का प्रशम भाव में रत रहकर, अप्रमत्त भाव से हमेशा आचरण एवं पालन करते हैं, उन श्री हीरागुरुवर को मैं सदैव भावपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

मांसाशनादिसकलव्यसनेषु सक्तान्,
सम्यक् प्रबोध्य समयं सुपथे प्रवृत्तान्।
दृष्ट्वानिशं मनसि मोदवहं महान्तम्,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यम्।।7।।

मांस भक्षण, मदिरा पान आदि सभी सप्त कुव्यसनों में लिप्त आसक्त जनों को आप द्वारा सम्यक् रीति से (अच्छी तरह से) धर्म का स्वरूप समझा कर और सिद्धान्त व सन्मार्ग में प्रवृत्त हुआ देखकर जो मन में अत्यन्त आनन्दित होते हैं, ऐसे महान् उपकारी श्री हीराचन्द्र गुरुवर को मैं सदा नमस्कार करता हूँ।

दुष्प्रापसिद्धगतिमार्गविबोधनार्थं,
जैनागमादधिगताखिलतत्त्वसारम्।
संसेव्य संयमधनं कृतनिर्जरं तं,
हीराविधुं गुरुवरं प्रणमामि नित्यम्।।8।।

अत्यन्त कठिनता से प्राप्त होने वाले,ऐसे सिद्ध गति के मार्ग को जानने के लिए जिन्होंने जिनेश्वर भगवान् द्वारा प्रणीत आगमों में निहित तत्त्वों के सार को सम्पूर्ण रूप से जान लिया और विशुद्ध संयम की आराधना कर कर्मों को निर्जरित कर रहे हैं, उन तृतीय पद के धारक श्री हीराचन्द्र गुरुवर को मैं सदा भावपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

माहात्म्य– स्तोत्राष्टकमिदं पुण्यं, प्रातः सायं पठन् नरः।
संप्राप्नोति परां शान्तिं, प्रशान्तमनसा धिया।।

इस पुण्य कारक स्तोत्राष्टक का जो मनुष्य प्रातःकाल एवं सायंकाल शांत मन एवं प्रसन्न बुद्धि से पठन करता है,उसको परम शांति की प्राप्ति होती है।

–रचयिता– पं. लक्ष्मण वासुदेव मांडवगणे,जलगांव

राजस्थानी दोहे

श्री दिलीप थींग 'जैन'

समकित

होना रो हूरज उगै, नवो–नवो परभात।
समकित प्रगट्या रे पछै, कदी न वै वै रात।।

शील

शील संजम में मगन रे, मन में नी है आस।
उण रा तप रा ताप सुं, हूरज दे परकास।।

मैनत

जी भर ने मैनत करै, खूण पसीनो एक।
उण रा पुण्य प्रताप सुं, देस चालर्‌यो देख।।

उपकार

छोड़ सवारत नित करै, दूजा रो उपकार।
असा मनख थोड़ा मिलै, धरती रा सिणगार।।

प्रेम

सबरो अलग सभाव वै, सबरो अलग विचार।
प्रेम सवाउं राखणो, यो जीवण रो सार।।

अहिंसा

जसो जीव अपणो हुवै, वसो इ सबरो होय।
कदी कणी भी जीव ने, नी मारो रे कोय।।

चारित्र

धण वैभव सुं कई हुवै, नी वै जदी चरित्र।
कदी अने नी खोवणो, चरित्र हांचो मित्र।।

गुण

सुन्दरता कई काम री, बना गुणां सुं यार।
गुण ने गैणा मानणा, जीवन झिलमिल हार।।

–बम्बोरा–313706, जिला– उदयपुर (राज.)

प्रवचन

चेत सके तो चेत रे मानव

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

मानव-जीवन को आगमों में दुर्लभ बताया गया है। मानव जीवन प्राप्त हो जाने पर भी धर्मश्रवण एवं धर्मसाधना में पराक्रम की पात्रता मिलना अतीव कठिन है। जिन्हें सब प्रकार की अनुकूलता मिली है, वे इस जीवन के महत्त्व का आकलन नहीं कर पाते और सांसारिक वस्तुओं एवं विषयों की आसक्ति में जीवन गवां देते हैं। आचार्यप्रवर द्वारा 30 सितम्बर 2001 को धुलिया के जैन स्थानक में फरमाया गया प्रस्तुत प्रवचन मनुष्य को जाग्रत होने एवं धर्मसाधना में अप्रमत्त होने की प्रेरणा कर रहा है। प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन जी मेहता, जोधपुर ने किया है।–**सम्पादक**

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय–अनमोल वाणी के अनुसार चमड़े के शरीर वाला मानव 'चरम शरीरी' हो सकता है। काम के कीचड़ से जन्म लेने वाला मानव धर्म की शरण ग्रहण करके भव-भ्रमण का अन्त कर सकता है। अपनी भाषा में कहने की बजाय आचार्य भगवन्तों की भाषा में कहूँ–

देवा विसयपसत्था नेरइया विविहदुक्खसंतत्ता।
तिरिया विवेगविकला, मणुयाणं धम्मसामग्गी।।

(देव विषयों में आसक्त हैं, नारक विविध दुःखों से संतप्त हैं, तिर्यंच विवेक रहित हैं इसलिए धर्म की समग्रता (सामग्री) मनुष्यों को ही प्राप्त है)

कहते हैं– पाँच इन्द्रियों के सुख भोग मे लीन रहने वाले, वैक्रिय जैसा विशिष्ट शरीर प्राप्त करने वाले, भूत–भविष्य रूपी पदार्थों को जानने की शक्ति रखने वाले देव भोगों में इतने आसक्त हैं कि अपने पल्योपम–सागरोपम जैसे सुदीर्घ काल को सार्थक बनाने की बजाय उपार्जित की गई पुण्यवानी की पूंजी समाप्त कर देते हैं। नरक में रहने वाले नारकी जीव देह की, क्षेत्र की, रोग की वेदनाओं और परमाधामी देवों द्वारा दी जा रही विकराल वेदनाओं से इतने संत्रस्त हैं कि वहां एक श्वास भी सुख से नहीं ली जा सकती। इस प्रकार नारकी के जीव संत्रस्त हैं, दुःखी हैं। साधना के लिए न चिन्तन कर सकते हैं, न उन्हें अवसर ही प्राप्त है। कुछ तिर्यंच जीव असन्नी हैं। उन्हें अपने–पराये का, धर्म–अधर्म का, हित–अहित का बोध नहीं होता। ऐसे असन्नी जीव भी साधना के क्षेत्र में अपने कदम नहीं बढ़ा सकते।

साधना के लिए मात्र एक गति बच गई है–मनुष्य गति। मैं तो कहूँ– तीर्थंकर भगवन्तों ने आपको-हमको बचा लिया। किसलिए बचा लिया? आप जानते तो हैं किन्तु बोलते नहीं। कोई बात नहीं, मैं ही कह दूँ– तीर्थंकर भगवन्तों ने आपको-हमको धर्म-साधना करने के लिए बचा लिया। अब आपको अपने आपके लिए चिन्तन करना है कि 'क्या मैं वस्तुतः धर्म-साधना कर रहा हूँ?' आप जरा चिन्तन तो कीजिये। धर्म-साधना कल्पवृक्ष की तरह सम्पूर्ण इच्छाओं की पूर्ति करने

वाली है।

मानव जन्म मिलने मात्र से भी धर्म साधना नहीं होती। सबको शारीरिक, मानसिक अनुकूलताएँ नहीं मिलती हैं। इस मानव जन्म को पाकर भी असंख्य जीव ऐसे हैं जो जन्मते ही मर जाते हैं। कहलाने के लिए वे भी मानव कहलाते हैं, किन्तु कर्त्तव्य से, धर्म से वे शून्य रह गये हैं। आगम की भाषा में अनेक मानव महामोही, तीव्र आसक्ति युक्त और गाढ़ राग-रोष वाले होते हैं। उन्होंने जन्म पाया, चिन्तामणि जैसा अनमोल रत्न पाया, फिर भी वे बर्बादी की ओर बढ़ रहे हैं। जितने भी हिंसक हैं, डाकू हैं, तस्कर हैं, व्यभिचारी हैं, मोह माया की तीव्र आसक्ति वाले हैं उनकी आसक्तियाँ इतनी गहरी हैं कि जिनका कोई हिसाब नहीं। सत्ता पाने के लिए प्राण तक ले लेते हैं, पुत्र के अंग भंग कर देते हैं। सत्ता के लोभी ऐसे मानव भी हैं जो महाभारत खडा कर देते हैं। कुछ धन की आसक्ति वाले—मुम्मण सेठ की तरह लूखा खाते, फटा पहनते, भयंकर सर्दी में पर्वत पर जाकर चन्दन इकट्ठा करते और रत्नों का बैल बनाते—बनाते जीवन समाप्त कर जाते हैं, किन्तु धर्म- साधना नहीं कर पाते। कुछ ऐसे भी मनुष्य हैं जो सागर सेठ की तरह रत्नद्वीप पर जाकर जेबों में, हाथों में, मुंह में रत्न भर कर लाने की चेष्टा करते—करते सागर में समा जाते हैं। हार—हाथी के लिए करोड़ों का विनाश करने वालों के भी उदाहरण हैं। हिटलर, सिकन्दर, गजनवी न जाने कितने लोग हैं जो अथाह धनराशि एवं वैभव एकत्रित करके भी खाली हाथ चले गये।

तीव्र आसक्ति वाले कभी कुछ पाते नहीं, खोते हैं। जोड़ते नहीं, तोड़ते हैं। मिलाते नहीं, मर जाते हैं। तीव्र द्वेष वाले उग्रवादी या आतंककारी बनकर निर्दोष लोगों के प्राण लेकर भंयकर कर्मों का अर्जन करते हैं। मानव बम के विस्फोट के साथ वे खुद मरते हैं एवं कइयों को मारते हैं। ईर्ष्या-द्वेष का जनून ही ऐसा है। आज कोई भी देश अमन-चैन में नहीं। ऐसे मानवों को क्या कहा जाय? वे तन से मानव हैं, किन्तु मन से दानव। शरीर से तिरने वाली गति पाई है, किन्तु कर्मों से डूबने का काम कर रहे हैं। ऐसे मानवों का जीवन महारंभी, महाप्ररिग्रही और तीव्र कामनाओं—ईर्ष्याओं—अभिलाषाओं के कारण बर्बादी की ओर बढ़ता जाता है। अपने आत्मगुण प्रकट करने की बजाय बर्बादी के रास्ते जाने वाले मानव, मानव नहीं दानव हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो न व्यवहार में कुछ कर पाते हैं, न परमार्थ के लिए। वे मात्र मानव जूण (योनि) पूरी करते हैं।

आगम में मृगा लोढा का जीवन पढ़ने में आता है। वह राजघराने में जन्मा। उत्तम कुल और आर्य क्षेत्र मिला, लेकिन शरीर कोढ़ी और भयंकर व्याधियों से ग्रस्त था। जो कुछ भी खाता दुर्गन्धयुक्त रस्सी में परिवर्तित हो जाता। दुर्गन्ध से युक्त शरीर देखकर उसे जमीन तल में बने भोंहरे में निवास करा दिया गया, फिर भी वहां से निकलने वालों का श्वासोच्छ्वास दूभर होने से नासिका पर पट्टी बांधकर जाना पड़ता। उसका मानव जन्म, आर्य क्षेत्र, उत्तम कुल और राजघराने में जन्म लेना क्या काम आया?

कुछ ऐसे मानव मेरे देखने में आए हैं जो शारीरिक दृष्टि से अशक्त होते हैं। बालोतरा चातुर्मास में वहां के मंत्री के पुत्र को देखा। अठारह साल के लगभग उसकी उम्र थी, पर जीवन कैसा? पलंग पर सोया ही रहता था। वह न हाथ उठा सकता था, न पैर हिला सकता था। खाना खिलाना, शौच–स्नान–पैशाब आदि सभी कार्य घरवालों को कराने पड़ते थे। गति मानव की पर.....। पुण्यवानी के कारण अच्छा घर मिला, आर्य क्षेत्र मिला, पर मानव जन्म पाकर भी वह कुछ करने लायक नहीं था।

इन्दौर चातुर्मास में एक बच्चा वर्द्धमान जी चाणोदिया के यहां पालने में सोया देखा। उसके प्राण भी पालने में निकले। ऐसे कई हैं जिन्हें मानव तन मिला, अच्छा क्षेत्र मिला, उत्तम कुल मिला, पर वे न व्यवहार का कार्य कर सके, न परमार्थ का। कइयों को सुन्दर तन मिला, स्वस्थ शरीर और पूर्ण इन्द्रियां मिलीं, पर बुद्धि का विकास नहीं होने से वे कुछ नहीं कर सके। मैंने एक माताजी से सुना। जोधपुर में मनोहरमल जी सिंघवी की मातुश्री चौदह वर्ष तक कौमा में रहीं। न खाना मांगती, न पानी। दीर्घ शंका–लघु शंका का भी ख्याल नहीं। परिवार वाले आवश्यक कार्य करा देते तो ठीक, अन्यथा वहीं बेहोशी। महामंदिर में कांकरिया परिवार पीपाड़ में बोहरा परिवार, में भी ऐसे उदाहरण रहे।

संसार में न जाने कितने ऐसे लोग हैं जिन्हें या तो कोई रोग घेर लेता है या इन्द्रियों की अविकसितता से वे ग्रस्त होते हैं, या बुद्धि की कमजोरी उनमें रहती हैं, इसलिए वे मानव-जन्म पाकर भी धर्मसाधना नहीं कर पाते। पोलियोग्रस्त भी कई हैं जो चाहते हुए भी साधु-जीवन अंगीकार नहीं कर पाते।

कुछ ऐसे भी मनुष्य हैं जो आपकी दृष्टि में भोले हैं। शक्ल–सूरत से अच्छे भले दिखते हैं, राजकुमार सी शरीर सम्पदा है। शरीर की बनावट और संहनन सब ठीक है, पर भोले हैं। माँ कौन और बहन कौन, इसका भी भान नहीं। उनकी दिमागी शक्ति नहीं, इसलिये माँ को गाली निकाल दे और दुश्मन को गले लगा ले, ऐसा भी सम्भव है। जन्म तो पाया, पर सर्वश्रेष्ठ मानव जीवन के लाभ से वंचित रहने वाले इस तरह कई हैं। कई रोगग्रस्त हैं, तो कई मति से भ्रमित हैं। कुछ आवेश से आवेष्टित हैं तो कुछ भूतप्रेत की बाधा से पीड़ित हैं। ऐसे लोग अपने शरीर संबंधी व्यवहार का काम नहीं कर सकते तो साधना क्या करेंगे?

लाखों लोग ऐसे हैं जिन्हें घर और दुकान की ही चिंता है। घर में समृद्धि कैसे रहे, दुकान में काम की बढ़ोतरी कैसे हो, जीवन कैसे चलाया जाय उनका सोचना इतने तक ही सीमित रहता है। शास्त्र की भाषा में कहूँ– ऐसे मानव मानव होते हुए भी तिर्यंच के समान हैं। आपको मेरी बात से चोट लग सकती है, मेरे वचन उद्वेलित कर सकते हैं, पर ऐसे मानवों में और तिर्यंचों में क्या अन्तर?

आहार–निद्रा–भय–मैथुनंच, सामान्यमेतद् पशुभिर्नराणां।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो, धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।।

आहार, निद्रा, भय, मैथुन तिर्यंचों में भी है और मानवों में भी। पेट भरने की

चिन्ता करना, भय आने पर भाग जाना, समय होने पर सो जाना और काम-क्रीड़ा कर लेना अगर यही मनुष्य जीवन है तो तिर्यंच में और मनुष्य में फर्क ही क्या? सींग-पूछ वालों में और दाढ़ी-मूंछ वालों में क्या अन्तर है? पेट जानवर भी भरता है। बया चिड़िया भी घौंसला बनाती है। कुतिया घुसाली तैयार करती है। हिरनी अपने बच्चे को बचाने का स्थान ढूंढ निकालती है। सिंह भी आ जाय तो हिरनी अपने बच्चों के बचाव का प्रयास करती है। जो काम तिर्यंच करें, वही काम मनुष्य करे तो उसमें क्या विशेषता? पेट पालने का काम जानवर भी करता है और वही मनुष्य करे तो...? कोई अन्तर नहीं।

कुछ लोग हैं जो कहते हैं– "महाराज! टाइम पास करां हां।" मैं ऐसे लोगों को जानता हूं। गुरु चरणों में कई बार सुनने का काम पड़ा है। लोग ताश खेलते हैं, शतरंज खेलते हैं और भी अन्य खेल खेलते हैं। शास्त्र की भाषा में कहूं– वे समय ही नहीं बिताते, कर्मबन्ध भी करते रहते हैं। आपने सुना होगा– कालशोकरिक कसाई मैल का भैंसा उतारने वाला होने के कारण हत्यारा कहला सकता है तो क्या शतरंज में राजा–रानी मारने वाला पाप कर्म का बंध नहीं करता? घोड़े पर हाथी और हाथी पर वजीर मारने वाला क्या कर रहा है? आप प्रवचन सभा में बैठे भले ही कह दें– वे कर्म बंध कर रहे हैं, पर क्या यह बात आपके जीवन में नहीं है?

आप बुजुर्ग हैं और आपके पास समय है तो बाल–बच्चों को संस्कार दें, स्वयं धर्म का आराधन करें, पर इस अनर्थदण्ड के पाप का भार तो न बढ़ायें। एक से दूसरी सामायिक का कहा जाये तो आपका मन नहीं लगता और ताश खेलते घंटों पूरे हो जाते हैं, उसका पता नहीं चलता। ताश खेलते-खेलते कभी घर से बुलावा भी आज जाय तो जवाब मिलता है– "ठहर, दो-तीन बाजी खेलने आवूं।" ताश छोड़ने का मन नहीं होता। यहां एक से दूसरी सामायिक कर भी लें तो पांच बार घड़ी पर नजर जायेगी।

यह बात ध्यान में ले लें कि दुर्लभ मानव तन पाकर यदि इसे सार्थक नहीं किया तो पछताना पड़ेगा। गीत उनके गाये जाते हैं जो जीवन निर्माण कर जाते हैं। जीवन को बर्बाद करने वालों के कोई गीत नहीं गाता।

मैं कभी-कभी सोचता हूँ– कई भाई ऐसे हैं जिनकी उम्र सत्तर वर्ष को पार कर गई, परन्तु आसक्ति कम नहीं हुई। कभी आंख खुलती है, कभी नहीं। मरणासन्न स्थिति में हैं। मारवाड़ी भाषा में कहूं– धरतियां कर दिया। ऐसे व्यक्ति भी आसक्ति में डूबे रहते हैं। जब भी आंख खुलती है पूछते हैं– 'बड़ा कहां? बड़ा लड़का सोचता है– जाते-जाते पिताजी को मेरे पर प्रेम आया है। वह कहता है–'पिताजी! मैं आपकी सेवा में यहीं खड़ा हूँ। दो मिनट बाद फिर आंख खुलती है। पूछते हैं– 'मंझला कहां? बीच वाले बेटे का उत्तर मिलता है– 'मैं यहीं हूँ। कुछ समय बाद जब फिर आंख खुली, पूछ लिया– 'छोटा कहां? छोटा सोचने लगा–

जाते-जाते पिताजी मुझे खजाना कहां है, बताकर जाना चाहते हैं। वह हर्षित मन से कहता है– 'मैं आपके पास हूँ।' "नालायकों, तुम तीनों यहीं हो तो फिर दुकान पर कौन है?"

बुढ्ढा अन्तिम यात्रा की तैयारी में है, मरणासन्न है, फिर भी कैसी आसक्ति? यह मानव जीवन का सार नहीं है। तीर्थंकर भगवन्तों ने इसलिये मनुष्य को देवानुप्रिय नहीं कहा। **चौरासी लाख जीवयोनि में मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ कहा, उसके पीछे न आपका धन कारण है, न आपकी प्रतिष्ठा। आप देवानुप्रिय हैं धर्मसाधना की वजह से।** अन्यथा आपके पास क्या है? जो देवता नहीं कर सकते, वह आप कर सकते हैं, इसलिए तीर्थंकर भगवन्तों ने आपको देवानुप्रिय कहा है।

मेरी बात आप समझ तो रहे हैं, पर आप अपने अन्तर्मन से पूछें, अपने आपसे बात करें। आपने पत्नी से बात की, पुत्र से बात की, नौकर से बात की, पर क्या कभी अपने आपसे बात की? **आप आए थे तब क्या साथ लाए थे और जाओगे तब क्या साथ ले जाओगे, इस पर कभी सोचा भी है?** इस दुर्लभ मानव-जन्म को पाकर धर्म साधना नहीं की तो फिर कहां करोगे?

मैं सुनता हूँ– देखता हूँ कभी कोई मर जाता है तो लोग बोलते हैं– राम नाम सत्य है, अरिहन्त नाम सत्य है। कब? कंधे पर चढ़ने के बाद? राम नाम सत्य या अरिहन्त नाम सत्य शब्द किसके लिये हैं? क्या उस मुर्दे के लिए जो सुनता नहीं? आप किसे सुनाते हैं? जो सुनते हैं, सुन रहे हैं उनके लिए नगद–नारायण सत्य और चले गये उनके लिए अरिहन्त नाम सत्य।

मानव यदि जीवन की अंतिम श्वास तक परिवार, धन, मकान और दुकान का ही चिन्तन करता रहे तो उसकी क्या गति होगी, कभी इस पर सोचा है? वह सेठ जो मरणासन्न है उसे क्या याद आ रहा है? आप कभी अपने मन से बात करना। आप चाहे व्यवहार क्षेत्र में हों या धर्म क्षेत्र में। आपने अच्छा खानदान पाया, धर्म गुरुओं की सन्निधि प्राप्त की, फिर भटकने का कारण क्या?

आप अपने आपको श्रावक मान रहे हैं तो सोचें– आप श्रावक हैं या नहीं? जरा अपने आपसे बात तो करें। **आप कहते क्या हैं और करते क्या हैं, इस पर सोचने की जरूरत है।** आप यह नहीं सोचें कि महाराज तार देंगे। महाराज मार्ग बताने वाले हैं। तारने का काम तो आपका आचरण करेगा। हम ही क्या, तीर्थंकर भगवन्त भी मार्ग बताने वाले हैं, तारने वाले नहीं। गुरु तो दीपक की तरह प्रकाश करने वाले हैं, चलना तो आपको ही पड़ेगा।

मैं शास्त्र की नहीं, आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव की भाषा में कहूँ। वे फरमाते थे– "ये श्रावक गुडल्यां चाले। अब वांने खड़े करवाने की जरूरत है।" साठ साल के हो गये फिर भी संतों का सहारा चाहिये, स्वयं होकर चलने को तैयार नहीं। आश्चर्य है– आप संतों का चातुर्मास करवाकर उन्हें अपने अनुकूल करने की सोचते हैं। चातुर्मास है तब तक तो फिर भी कुछ धर्म-साधना का रूप दिखता है और चातुर्मास बीतने के बाद वही रंग–वही ढंग तो..........?

आपके अपने जीवन में कैसे–कैसे महान् संतों का समागम हुआ, जरा सोचो तो सही। क्या आपका मन धन से हटकर धर्म की ओर लगा? आस्रव से हटकर आप संवर साधना में कितने आगे बढ़े? कभी महीने में एक दया करने को कहा जाय तो उसमें भी मनुहार करायेंगे। "अन्नदाता, आपरो मन है तो करा दो।" दया करेंगे उसका एहसान भी महाराज पर। कई तो कहते हैं– बाबजी! मुझे तो संवर करा दें। आप जरा चिन्तन तो करो– आपका तिरना कैसे होगा?

जिन्दगी में एक गलती करने वाला गोशालक। उसने भगवान की वाणी के अनुरूप कहने के बजाय विपरीत कह दिया। गोशालक को एक–एक नरक में दो–दो बार जाना पड़ा। गोशालक ने क्या किया? गोशालक ने आगम मान्यता बदलने की कोशिश की। खुद से नहीं होता तो कोई बात नहीं, पर आगम मान्यता में परिवर्तन करना उसके लिए भटकने का कारण बन गया।

आप भाग्यशाली हैं आपको अच्छा कुल मिला, आर्य क्षेत्र मिला और संत समागम के साथ वीतराग भगवन्तों की वाणी सुनने को मिल रही है। आप जीवन के उत्तरार्द्ध में भी ज्ञान–क्रिया का संगम पकड़ कर चलें तो आप दरिद्र नहीं रहेंगे।

सामायिक कम हों, ज्यादा हों, शुद्ध होनी चाहिए। आज कई हैं जो सामायिक तो करते हैं लेकिन शुद्धता का विवेक नहीं रखते। सामायिक कर रहे हैं, ऊपर पंखा चल रहा है। सामायिक में पंखा नहीं लगना चाहिये तो जवाब मिलता है– हमने तो लगाया नहीं, किसी ने लगा दिया, उसका हम क्या करें। जीवों की विराधना के प्रति जानकारी ही नहीं। आप थोड़ा करें, किन्तु अच्छा करें। आपके शब्दों में कहूँ तो क्वांटिटी की बजाय क्वालिटी होनी चाहिये।

मैं आगम वचनों के अनुरूप कहूँ तो– एक नवकारसी नरक के बंध को तोड़ सकती है और भावना के बिना महाव्रत का आचरण भी कर्मबन्ध नहीं तोड़ सकता। आप चाहे थोड़ा करें, शुद्ध करें। आप शुद्ध साधना करेंगे तो मानव जीवन को सार्थक कर सकेंगे, इसी मंगल भावना के साथ।

मुक्ति धाम

श्री प्रकाश कर्णावट

विद्या विनय से जागती, यूँ समकित तू जाण।
चारित्र बिन मुक्ति नहीं, यो मुक्ति रो धाम।।

फल तो कड़वा क्रोध ना, मान सूँ सब न्हासे।
तप ना होवे फल घणा, जो मानवता राखे।।

पापों से पापी बढ़े, पाप पापी करनारा।
समकित से चारित्र बढ़े, सब कर्म नाशनहारा।।

मानवता से विनय बढे, विनय से बढ़े हे तप।
यों जो बढ़ते जायेंगे, मुक्ति मिलेगी झट।।

–इजरायल

पांच समिति : एक चिन्तन

श्री रमेशमुनि शास्त्री

(उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी के शिष्य)

"जयणा योग"– जैन योग का एक परम विशिष्ट योग हे। इसमें न प्राणायाम की क्रियाओं की अपेक्षा रहती है और न आसनसिद्धि पर बल प्रदान किया जाता है। साधक इस योग में प्रवृत्ति एवं निवृत्ति दोनों ही अवस्थाओं में साधना कर सकता है। इस साधना में सतत रूप से जागरूकता अपेक्षित है। साधक असद् प्रवृत्तियों से अपने आपको बचाता हुआ यतनाशील अथवा सावधान रहे, सहज समाधिपूर्वक जीवन यात्रा सम्पन्न करे, इसीलिये इसे "जयणायोग" अथवा सहज योग की संज्ञा से अभिहित किया गया है।

यह स्पष्ट है कि यतना का ही अपर नाम 'समिति' है और मन,वचन एवं काय को वश में रखना गुप्ति है। समिति–गुप्ति इन दोनों को 'अष्टप्रवचन माता' भी कहा जाता है।[1] ये अष्टविध प्रवचन माता श्रमणयोगी का वह योग है, जो उसे मोक्ष महल तक पहुंचाने में सर्वथा समर्थ है। श्रमणाचार की अपेक्षा से भी इसका महत्त्व है और योग मार्ग की दृष्टि से भी। श्रमणयोगी के लिये इसकी समीचीन परिपालना आवश्यक ही नहीं, अपितु अनिवार्य भी है, क्योंकि ये श्रमण के महाव्रतों का माता के समान रक्षण और पोषण करती हैं। माता की महिमा जितनी लौकिक जीवन में है आध्यात्मिक जीवन में उतनी ही इन अष्टविध प्रवचन माताओं की है। वास्तव में ये प्रवचन माताएँ अध्यात्म जगत् की जगदम्बा हैं और जिन भगवान जगत् पितामह हैं।[2] इह लौकिक जीवन में मानव पर जितना उपकार है, उससे अनन्त गुण अधिक आध्यात्मिक जीवन में इन प्रवचन माताओं का रहा है। इस तथ्य की अनुभूति का एकमात्र अधिकारी मुमुक्षु मानव ही है।

यह पूर्णतः प्रगट है कि मन, वचन और काय की प्रवृत्ति संसाराभिमुखी है और राग–द्वेष कषाय की ओर रहती है। गुप्तियों के माध्यम से श्रमणयोगी कषाय रूपी वासनाओं से अपनी आत्मा की रक्षा अर्थात् गोपन करता है,[3] आध्यात्मिक भाव में स्थापित करता है[4] और समितियों के द्वारा शुभ प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख होने का अभ्यास प्रबल होता है। शुभाचरण का सम्यक् पालन होता है।[5] वास्तव में शुभ और शुद्ध में प्रवृत्ति करने का प्रमुख साधन 'समिति' है।

इसी सन्दर्भ में यह ज्ञातव्य है कि समिति का वर्गीकरण पांच प्रकार से हुआ है। उनके नाम ये हैं[6] –

1. ईर्या समिति 2. भाषा समिति 3. एषणा समिति 4. आदान निक्षेपण समिति 5. प्रतिष्ठापना समिति।

01. ईर्या समिति– ईर्या समिति विशेष रूप से काया से संबंधित है। गमनागमन संबंधी जितनी क्रियाएं हैं, समस्त ईर्या समिति के अन्तर्गत परिगणित की जाती हैं। यतनापूर्वक सावधानी से गमनागमन संबंधी क्रियाएं करना ईर्या

समिति है।[7] ईर्या समिति का पालन भी चार प्रकार से होता है।[8]

1. **आलम्बन**– साधक के लिये रत्नत्रय ही आलम्बन है। यह रत्नत्रय सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र के रूप में है[9] और यही मोक्ष मार्ग है।[10]

2. **काल**– दिन में देखकर चलना और रात्रि में पूंजकर गमन करना।

3. **मार्ग**– उन्मार्ग में गमन न करना। क्योंकि उन्मार्ग में जीवों की विराधना की आशंका रहती है।

4. **यतना**–यतना चार प्रकार की है। द्रव्य से देखभाल कर गमन करे। क्षेत्र से युगमात्र की भूमि देखकर चले। काल से जहां तक चले, देखकर चले। भाव से उपयोग सहित गमन करे।

02. **भाषा समिति**– राग-द्वेष, भय, मुखरता एवं विकथा से रहित, परिमित, निर्दोष एवं विवेकपूर्वक बोलना भाषा समिति है। इसका पालन चार प्रकार से किया जाता है।[11] वे ये हैं।

1. **द्रव्य से**– कर्कश, कठोर, छेदक, भेदक, सावद्य प्रभृति भाषा नहीं बोलना।

2. **क्षेत्र से**– मार्ग में चलते समय वार्तालाप नहीं करना।

3. **काल से**– एक प्रहर रात्रि व्यतीत हो जाने के अनन्तर उच्च स्वर में नहीं बोलना।

4. **भाव से**– राग-द्वेष से रहित, सत्य, तथ्य एवं निर्दोष रूप से बोलना।

03. **एषणा समिति**– आहार आदि की गवेषणा, ग्रहणैषणा तथा परिभोगैषणा में आहार आदि के सर्व दोषों का निवारण करना, एषणा समिति है। इसके पालन के चार प्रकार हैं,[12] यथा–

1. **द्रव्य से**– बयालीस आहार के एवं पांच मांडला के सहित छियानवे दोषों से रहित आहार आदि का सेवन करना।

2. **क्षेत्र से**– दो कोस के उपरान्त ले जाकर आहार पानी का सेवन नहीं करना।

3. **काल से**– दिन के प्रथम प्रहर में लाया हुआ आहार उसी दिन के अन्तिम प्रहर में सेवन न करना।

4. **भाव से**– राग-द्वेष से रहित होता हुआ संयोजना आदि दोषों से रहित रहकर आहार करना।

04. **आदान-निक्षेपणा समिति**– सामान्य और विशेष दोनों प्रकार के उपकरणों को प्रतिलेखना करके तथा प्रमार्जना करके लेना और रखना आदान निक्षेपणा समिति है।[13] प्रस्तुत समिति का पालन भी चार प्रकार से किया जाता है–

1. द्रव्य से– भाण्ड, उपकरण आदि यतनापूर्वक ग्रहण करे और रखे।

2. क्षेत्र से– किसी गृहस्थ के घर में रख कर अन्यत्र विहार न करे, क्योंकि ऐसा करने से उपकरणों की प्रतिलेखना नहीं होती है।

3. काल से– प्रातः और सन्ध्या दोनों समय उपकरणों की विधिपूर्वक प्रतिलेखना करें।

4. भाव से– उपकरणों को अपनी धर्मयात्रा में केवल सहायक माने, उनके प्रति ममता एवं मूर्च्छा नहीं करे।

05. **परिष्ठापनिका समिति**–जीव जन्तु से रहित प्रासुक भूमि पर मल-मूत्र, श्लेष्म, कफ आदि का विसर्जन करना परिष्ठापनिका अथवा व्युत्सर्ग समिति है।[14]

यह विसर्जन स्थण्डिल भूमि में किया जाता है। स्थंडिल भूमि चार प्रकार की होती है। अनापात असंलोक, अनापात संलोक, आपात असंलोक और आपात संलोक। उक्त समिति का परिपालन भी चार प्रकार से किया जाता है–

1. द्रव्य से– विषम, दग्ध, बिल प्रभृति स्थान पर विसर्जन नहीं करें।

2. क्षेत्र से– परिष्ठापन क्षेत्र के स्वामी की एवं यदि उस स्थान का कोई स्वामी न हो तो शक्रेन्द्र की आज्ञा लेकर उक्त वस्तुओं को परठे।

3. काल से– दिन में अच्छी तरह देख कर और रात्रि में पूंज कर परठे।

4. भाव से– शुभ शुद्ध उपयोग पूर्वक परठे।

वास्तव में ये पांचों समितियां सम्यक् प्रवृत्ति रूप हैं। मात और माता ये दो विशेषण समिति–गुप्ति के लिये प्रयुक्त हैं।[15] वास्तविकता यह है कि चारित्र रूप समितियों एवं गुप्तियों में प्रवचन रूप द्वादशांग अन्तर्भूत कहा गया है।

सारपूर्ण भाषा में यही कहा जा सकता है कि समितियों द्वारा श्रमणयोगी अपनी समग्र प्रवृत्तियों को विवेकपूर्वक करता है। इन प्रवृत्तियों के समय भी वह शुभ भावों में रमण करता है और योग मार्ग का अवलम्बन करता है। ये सम्यक् प्रवृत्तियां मोक्ष मार्ग में साधक होती हैं।

संदर्भ–

1. (क) उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 24, गाथा 1 (ख) योग शास्त्र 1/45
2. नन्दीसूत्र–स्थविरावली, गाथा 1
3. उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 9 गाथा 20
4. (क) आर्हत् दर्शन दीपिका– 5/642 (ख) ज्ञानार्णव– 18/4
5. (क) योगशास्त्र– 1/45 (ख) राजवार्तिक– 9/5/2/593/34 (ग) नियमसार तात्पर्य वृत्ति–61 (घ) प्रवचनसार तात्पर्य वृत्ति–240/332/21 (ङ) द्रव्यसंग्रह टीका 35/101/3
6. (क) चारित्र पाहुड गाथा 37 (ख) मूलाचार गाथा 10,301 (ग) तत्त्वार्थसूत्र 9/5 (घ) सर्वार्थ सिद्धि 9/5/411/9 (ङ) द्रव्य संग्रह टीका 35/101/5

7. (क) मूलाराधना 6/1191 (ख) उत्तराध्ययन सूत्र 24/4 (ग) ज्ञानार्णव 18/5-7 (घ) नियमसार गाथा 61
8. उत्तराध्ययन सूत्र 24/5-8
9. स्थानांग सूत्र– 3/4/114
10. तत्त्वार्थ सूत्र 1/1
11. (क) उत्तराध्ययन सूत्र 24/11 (ख) ज्ञानार्णव 18/11
12. (क) उत्तराध्ययन सूत्र 24/12 (ख) पिण्डनिर्युक्ति पत्र 34/2/2
13. (क) मूलाचार 14, 319,320 (ख) नियमसार 64 (ग) भगवती आराधना 1198 (घ) तत्त्वार्थ सार अधिकार 6/10 (ङ) चारित्रसार 74/2 (च) ज्ञानार्णव 18/12,13 (छ) अनगार धर्मामृत 4/168/496
14. (क) उत्तराध्ययन सूत्र 24/15 (ख) ज्ञानार्णव 18/14 (ग) मूलाचार–15, 321–325 (घ) नियमसार 65 (ङ) भगवती आराधना 1199 (च) तत्त्वार्थ सार 6/11 (छ) अनगार धर्मामृत 4/169/497 (ज) चारित्र सार 74/3
15. (क) समवायांग वृत्ति–समवाय 8 (ख) बृहद् वृत्ति–पत्र 514

पाठक-पत्र

मैं जिनवाणी का नियमित पाठक हूँ। प्रतिमाह जिनवाणी की प्रतीक्षा रहती है। अक्टूबर 2001 की जिनवाणी तो संग्रहणीय है। आचार्य श्री का युवकों से आह्वान 'अपने चरित्र को ऊँचा उठाइए' मन को झकजोर देने वाला एवं प्रत्येक के लिए विचार करने योग्य है। सबके लिए सोच का एवं मनन का विषय है। व्यावहारिक तथ्य उजागर किए हैं। लेख को पढकर सारी वर्तमान सच्चाइयाँ आचार्यप्रवर ने समाज के सामने रख दी है, कलई खोल दी है। अब भी नहीं सुधरे, विचार गम्भीर नहीं किया तो आने वाला समय क्या रंग लायेगा, क्या परिणाम होंगे सोच भी नहीं सकते। साथ ही शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. का 'संघ का उन्नयन : कर्त्तव्य पालन से' प्रवचन ने इस अक्टूबर 2001 की जिनवाणी में चार चाँद लगा दिए है।

– नरेन्द्र कक्कड़, 76 पृथ्वीराज नगर, जयपुर

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका जैन धर्म जगत् में अपना विशेष स्थान रखती है। इसमें वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नवीन एवं आगम–सम्मत लेख प्रकाशित होते हैं, जो प्रत्येक साधक के लिये उपयोगी हैं। एक बार कोई साधक इसे पढ ले तो निरन्तर पढ़ने की लालसा बनी रहती है। जब भी हमारे क्षेत्र में किसी भी सम्प्रदाय के सन्त–मुनिराज एवं महासतियां जी पधारते हैं, जिनवाणी पत्रिका की मांग करते हैं। वीतराग वाणी को जन–जन तक पहुंचाने का महान् कार्य इस पत्रिका के माध्यम से किया जा रहा है।

–कन्हैयालाल बोरदिया, स्वाध्यायी, रायपुर जिला– भीलवाड़ा(राज.)

पर्यावरण-संरक्षण में अनर्थदण्ड विरमण-व्रत का महत्त्व

■ डॉ. मंजुला बम्ब

पर्यावरण दूषित होने की समस्या आज हमारी और हमारे देश की सबसे बड़ी समस्या है। दूषित पर्यावरण आज समस्त प्राणियों के स्वास्थ्य पर कुप्रभाव डाल रहा है।

'परि+आवरण' इन दो शब्दों की संधि से 'पर्यावरण' शब्द बना है, जिसका अर्थ है चारों तरफ फैला आवरण या घेरा। इसका अभिप्राय यह हुआ कि हमारे चारों तरफ जो है वह 'पर्यावरण' है। पर्यावरण पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और वनस्पति (पंच स्थावर) विकलेन्द्रिय (कीट, पतंगे, चींटी, भ्रमर और कृमि आदि), पशु-पक्षी एवं मानव इन सबसे मिलकर बना है। प्रकृति में इन सबकी अवस्थिति इस प्रकार सुव्यवस्थित है कि पृथ्वी पर संतुलित वातावरण बना रहे।

पिछली शताब्दी में मनुष्य ने जबसे प्रकृति पर विजय-प्राप्ति के लिये वैज्ञानिक आविष्कार कर उपलब्धि अर्जित की है, सभ्यता का विकास किया है, सुख सुविधा के साधन जुटाये हैं, असीमित जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये औद्योगिक क्रान्ति की है, बस! तभी से प्रकृति का सदियों पुराना संतुलित पर्यावरण विखण्डित होता गया। फलस्वरूप वन कटने लगे, प्रकृति में प्रदूषण आने लगे। पर्यावरण की शुद्धता में सहायक वृक्षों को काटने तथा कल कारखानों और बेशुमार बढ़ते वाहनों से निकलने वाले धुएँ के प्रदूषण से सारा पर्यावरण दूषित हो रहा है। इसके अलावा पर्यावरण को दूषित करने वाले कारक हैं– जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मृदा (भूमि) प्रदूषण आदि।

प्रदूषण से बचने के अनेक उपायों में से एक उपाय है– 'अनर्थदण्ड विरमण व्रत'। जैन धर्म में आवश्यक सूत्र में वर्णित बारह व्रतों में से आठवाँ व्रत 'अनर्थदण्ड विरमण-व्रत का पालन पर्यावरण-रक्षण में सहायक बनता है।

व्रत किसे कहते हैं? अशुभ क्रियाओं को छोड़ने और शुभ क्रियाओं में प्रवृत्त होने को व्रत कहते हैं। उपासकदशांग सूत्र में वर्णित आनन्द श्रावक यदि अणुव्रतों और शिक्षाव्रतों को मस्तिष्क तक ही रखता और आचरण में न लाता तो उसके जीवन का उत्थान न होता। वह व्रतों को और उनके अतिचारों को समझता है और समझने के साथ अंगीकार भी करता है। वह व्रतों के दूषणों को जानकर उनका त्याग करता है। व्रत के दोषों का त्याग किये बिना निर्मल व्रत-पालन संभव नहीं है।

अनर्थदण्ड का अर्थ है ऐसे कार्य जिनसे व्यर्थ ही दूसरे को एवं अपने को हानि पहुँचती है, किसी का लाभ नहीं होता। जिसके बिना गृहस्थ का काम नहीं चलता, जो गृहस्थ जीवन में अनिवार्य है, ऐसी हिंसा का भले ही वह त्याग न कर सके, किन्तु निरर्थक हिंसा के पाप का त्याग तो उसे करना ही चाहिये। जिस हिंसा से किसी प्रयोजन की पूर्ति न होती हो, उसके भार से अपनी आत्मा को भारी एवं मलिन बनाये रखना बुद्धिमत्ता नहीं है। आनन्द श्रावक ने अनर्थदण्ड का त्याग और संकल्प किया कि वह निरर्थक हिंसा एवं असत्य का व्यवहार नहीं करेगा। इस

संकल्प की पूर्ति के लिये उसने इस व्रत के अतिचारों का भी त्याग किया। यहाँ पर बारह व्रतों का स्वरूप नहीं बतलाकर आठवें व्रत अनर्थदण्ड का संक्षिप्त स्वरूप ही बतालाया जा रहा है। अनर्थदण्ड चार प्रकार का है–

1. **अपध्यानाचरित**– मन में बुरे विचार लाना। बहुत बार हम खाली बैठे दूसरे के बारे में बुरी बातें सोचते रहते हैं। इससे कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। व्यर्थ ही मन में मलिनता आती है। यह ध्यान अप्रशस्त (बुरा चिन्तन) है, बुरा है। व्यर्थ के बुरे संकल्पों में चित्त को एकाग्र करने से जो अनर्थदण्ड होता है उसको अपध्यानाचरित अनर्थदण्ड कहते हैं। अपध्यान के दो भेद हैं–

(क) आर्त्तध्यान– मनोज्ञ वस्तु के वियोग और अमनोज्ञ के संयोग आदि कारण से चित्त की चंचलता।

(ख) रौद्रध्यान– हिंसा, झूठ, चोरी संबंधी तथा धन आदि की रक्षा में मन को जोड़ना।

2. **प्रमादाचरित**– असावधानी के कारण दूसरे को हानि पहुँचाना, प्रमाद का आचरण करना। प्रमाद से आत्मा का पतन होता है। प्रमाद पाँच हैं– मद, विषय, कषाय, निद्रा और विकथा। प्रमाद सभी के लिये त्याज्य है। प्रमादपूर्वक अनेक क्रियाएँ होती हैं, यथा– बिना देखे चलना, फिरना, वस्तु को उठाना, रखना, पानी, तेल, घी आदि के बर्तनों को उघाड़ा रखना इत्यादि। इससे जीव हिंसा भी होती है।

3. **हिंसा प्रदान**– हिंसा में सहायक होना। जिनसे हिंसा होती है, जीवों का घात होता है, ऐसे अस्त्र–शस्त्र, आग, विष आदि हिंसा के साधन अन्य विवेकहीन व्यक्तियों को दे देना, हिंसा में सहायक होना है।

4. **पापोपदेश**– पाप कर्म का उपदेश देना। जिस उपदेश से और जिन कार्यों से पाप कर्म में प्रवृत्ति हो, पाप कर्म की अभिवृद्धि हो,उपदेश सुनने वाला पाप कर्म करने लगे वह उपदेश अनर्थदण्ड रूप है।

इस व्रत के पांच अतिचार हैं, वे निम्नलिखित हैं–

1. **कंदर्प**– काम-विकार उत्पन्न करने वाली बातें करना। काम–वासना प्रबल करने वाले तथा मोह उत्पन्न करने वाले शब्दों का हास्य में या व्यंग्य में, दूसरे के लिए उपयोग करना।
2. **कौत्कुच्य**– आँख, नाक, मुँह, भृकुटि आदि अपने अंगों को विकृत बनाकर भाण्ड एवं विदूषक की भांति चेष्टाएँ करना।
3. **मौखर्य**– बिना प्रयोजन के अधिक बोलना, अनर्गल बातें करना, व्यर्थ की बकवास करना और किसी की निन्दा, चुगली करना।
4. **संयुक्ताधिकरण**– शास्त्रों को असावधानी के साथ रखना, जिससे दूसरों को नुकसान पहुँचने की संभावना हो। कूटने और पीसने आदि के काम में आने वाले घर के साधनों का जैसे–ऊखल, मूसल, चक्की आदि वस्तुओं का अधिक तथा निष्प्रयोजन संग्रह करके रखना।

5. उपभोगपरिभोग की अमर्यादा– खाने-पीने तथा काम में आने वाली वस्तुओं को व्यर्थ ही बढ़ाना, उनमें अत्यन्त आसक्त रहना, उनका बार–बार उपयोग करना।

मनुष्य यदि अपने जीवन को विवेकशून्य और प्रमत्त रखता है तो वह बिना प्रयोजन भी हिंसादि कर बैठता है।मनुष्य यदि मन, वचन और काया को सदा संयत रखता है, प्रत्येक क्रिया विवेक तथा यतना से करता है तो विवेकपूर्वक की गयी क्रिया से ही वह शुद्ध पर्यावरण का संरक्षण कर सकता है, साथ ही अपना जीवन भी सुखी बना लेता है।

संसार में मनुष्य तमाम जीवों में महाबुद्धिशाली माना गया है। वह स्व–पर का जितना ज्ञान कर सकता है उतना और कोई भी प्राणी नहीं कर सकता है। जिस प्रकार वह अपने सुख–दुःख का ज्ञानी होता है उसी प्रकार उसमें यह भी ताक़त है कि वह दूसरे प्राणियों के सुख–दुःख का भी ज्ञान प्राप्त कर सके। तीर्थंकर प्रभु ने संसार के सभी जीवों के पांच मोटे भाग कर सबका बोध करा दिया है। ये पांच भाग हैं– एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय। एकेन्द्रिय जीव पांच स्थावर पृथ्वी, पानी, तेजस, वायु एवं वनस्पति कहे जाते हैं। द्वीन्द्रिय में लट, सीप आदि, त्रीन्द्रिय में चींटी, जूं, लीख आदि, चतुरिन्द्रिय में मक्खी, मच्छर, भ्रमर, बिच्छु आदि आते हैं। पंचेन्द्रिय में देवता, मनुष्य, तिर्यंच पशु–पक्षी आते हैं।

जल में जीव है। यह बात आज के विज्ञान ने पूर्णरीति से सिद्ध कर दी है। हम आंखों से नहीं देख सकते, पर वैज्ञानिकों ने यंत्रों के द्वारा जल में लाखों जीव बतलाये हैं, पर ये त्रस जीव हैं। जल स्थावरयोनि के जीवों का पिण्ड है। विज्ञानाचार्य जगदीशचन्द्र बोस ने वनस्पति पर विविध प्रयोग करके वनस्पति में भी जीव सिद्ध किया है, पर हमारे अरिहन्तों का विज्ञान तो बहुत बढ़ा चढ़ा है,उन्होंने तो वनस्पति के एक अंश की ही खोज नहीं, बल्कि समस्त जीवों की शरीर, अवगाहना, कषाय, संज्ञा, लेश्या, वेद, ज्ञान, योग और स्थिति आदि का वर्णन कर दिया है। हम इसके लिए जैन सिद्धान्त के लघुदण्डक नामक थोकड़े को देखकर ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

मारने की बुद्धि से जानबूझ कर मांस, हड्डी, चमड़ी, नख, केश, दांत आदि के लिए प्राणी की हिंसा करना संकल्पजा हिंसा है।

मकान बनवाने, पृथ्वी खोदने, हल जोतने आदि आरम्भ के कामों में जो त्रस हिंसा हो जाती है वह आरम्भजा हिंसा है। आरम्भजा हिंसा में हिंसा करने का संकल्प नहीं होता अर्थात् जीव का घात करने की भावना नहीं होती, जबकि संकल्पजा हिंसा जीव का वध करने के विचार से ही की जाती है। जैसे एक व्यक्ति निशाना लगाना सीखने के लिये गोली चलाता है और संयोगवश कोई आदमी उस गोली से मारा जाता है तो यह गोली चलाने वाले का अपराध तो है और वह दण्ड का पात्र भी समझा जाता है। परन्तु वैसा अपराधी और दण्ड का पात्र नहीं जैसा कि

मारने के उद्देश्य से गोली मारने वाला। इस प्रकार यथासम्भव सावधानी रखते हुए भी कार्य करते समय प्राणियों का मर जाना आरम्भजा हिंसा कहलाता है।

इन दोनों प्रकार की हिंसाओं में से श्रमणोपासक संकल्पजा हिंसा का त्याग करता है। वह आरम्भजा हिंसा का पूर्ण रूप से त्याग नहीं कर पाता है। हमारे साधु-मुनिराजों के सर्वथा हिंसा का त्याग होता है। आज वैज्ञानिक युग में भौतिक चकाचौंध में इन्द्रियों और विषयों में आसक्त मानव संकल्पजा हिंसा से बच नहीं पाता। भोग के लिये, हिंसा द्वारा बनायी गयी भोग सामग्री को भोगकर खुश होता है, अपने आपको भाग्यशील समझता है। वह यह भूल जाता है कि जीव कर्मों का कर्ता व भोक्ता स्वयं ही है। हिंसा से कर्म तो बंधता ही है, मगर हमारा पर्यावरण भी दूषित हो रहा है।

अहिंसा का अभाव पाप, अनाचार, हिंसा आदि दुर्गुणों को बढ़ाकर समाज और जीवन को अस्त–व्यस्त कर देने वाला है। "प्रश्न–व्याकरण" सूत्र में अहिंसा की महिमा के प्रसंग में कहा गया है–" **एसा सा भगवई अहिंसा भीयाणं विव सरणं पक्खीण विव गयणं, तिसियाणं पिव सलिलं, खुहियाणं पिव असणं, समुद्दमज्झेव पोतवहणं, दुहट्ठियाणं व ओसहिबलं एतो विसिट्ठतरिया अहिंसा तसथावरसव्वभूयखेमंकरी।"**

अर्थात् यह वह अहिंसा भगवती है जो भयग्रस्त के लिये शरण तुल्य, पक्षियों के लिये गगन तुल्य, प्यासों के लिये जल तुल्य, भूखों के लिये अशन तुल्य, समुद्र मध्य डूबते को जहाज तुल्य, दुःखी दुर्बलों के लिये औषधितुल्य है। इन सब विशिष्टताओं से युक्त अहिंसा त्रस और स्थावर सकल जीवों के लिये क्षेम और कल्याण करने वाली है। अहिंसा की महिमा और सामर्थ्य को देखते हुये निःसंकोच स्वीकार किया जा सकता है कि अहिंसा सकल धर्मों में श्रेष्ठ है। अतः अहिंसा के बिना जगत् का कल्याण एवं संरक्षण असम्भव है।

मानवता की आधारशिला अहिंसा ही है। अहिंसा ही अणु एवं दूर मारक प्रक्षेपास्त्रों से मानवता को विनाश से बचा सकती है। वह प्राणीमात्र की जीवन रक्षा कर एक शुद्ध पर्यावरण दे सकती है। मानवता के मूल्यांकन या परख की कसौटी अहिंसा है। मानव आज अहिंसा की साधना को भूलता जा रहा है। स्वार्थवश, आरम्भी, आत्मारम्भी, परारम्भी और उभयारम्भी बनकर पर्यावरण को दूषित कर अशांति पूर्ण जीवन जीने को मजबूर हो गया है। विघ्न-निवारण और सुख पाने के लिये लोग मंगल मनाते हैं। मंगल सबको पसन्द है।अमंगल किसी को भी नहीं– "धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।" अर्थात् अहिंसा, संयम और तप रूप धर्म ही, उत्कृष्ट मंगल है। इस तरह जिनके मानस में अहिंसा, तप और संयम का सतत वास है जगत् में वही मूर्तिमान मंगल है। उसका दर्शन समस्त विघ्नों को दूर करने वाला है। उसका मधुर वचन संत्रस्त जन–मन के लिये अमृत की तरह जीवन दायक है। इसके प्रचार–प्रसार से समस्त विश्व का कल्याण एवं संरक्षण संभावित

है। वस्तुतः हिंसा ही अमंगल और अहिंसा ही सर्वोत्कृष्ट मंगल है।

भ. महावीर द्वारा प्ररूपित एक व्रत को भी यदि पूर्ण रूप से मानव स्वीकार करले तो दुनिया के कई अनर्थों से अपने आप बचा जा सकता है। सूक्ष्म और बादर प्राणियों को भी अभयदान दिया जा सकता है। मनुष्य अल्प परिग्रही बनकर शान्ति से शुद्ध पर्यावरण में अपनी जिन्दगी बसर कर सकता है। जैन धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो कि पांच महाव्रत, अष्ट प्रवचन माता(पांच समिति, तीन गुप्ति) अपरिग्रह अहिंसा, संयम, तप, संवर आदि के माध्यम से पर्यावरण का संरक्षण करने का मार्ग प्रस्तुत करता है।

आज वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण की जो समस्या बनी हुई है, उसमें भ. महावीर के सिद्धान्त अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह आदि ही सुख, शान्ति और शुद्ध पर्यावरण प्रदान कर सकते हैं। इस समस्या के सम्पूर्ण समाधान के लिये मानव को अपना विवेक जागृत कर आत्मारम्भ[1], परारम्भ[2], और उभयारम्भ[3] रूप प्रवृत्तियों को त्यागना है। अनर्थदण्ड का विवेक जाग्रत व्यक्ति सुमार्ग पर चलकर अनारम्भ एवं सुचरित्रवान बनकर इस लोक और परलोक दोनों को सार्थक बना सकता है।

— 3, रामसिंह रोड़, होटल मेरू पैलेस के पास, टोंक रोड़, जयपुर–4 (राज.)

1. **आत्मारंभ**—आस्रव में आत्मा को प्रवृत्त करना और आत्मा द्वारा स्वयं आरम्भ करना।
2. **परारंभ**— दूसरे को आस्रव में प्रवृत्त करना या दूसरे के द्वारा आरम्भ कराना।
3. **उभयारंभ**— आत्मारंभ और परारंभ स्वयं करने वाला और दूसरों से करवाने वाला।

नर जन्म व्यर्थ है

वृषभकुमार काटोलकर

गुण न हो तो, रूप व्यर्थ है
विनम्रता न हो तो, विद्या व्यर्थ है।
उपयोग न हो तो, धन व्यर्थ है
साहस न हो तो, हथियार व्यर्थ है।
भूख न हो तो, भोजन व्यर्थ है
होश न हो तो, जोश व्यर्थ है।
परोपकार न हो तो, जीवन व्यर्थ है
दान धर्म न करो तो, हाथ व्यर्थ है।
'वृषभ' कहता है, जैनी हो तो,आत्मा का कल्याण करो,
मोक्ष की प्राप्ति करो, नहीं तो नर जन्म व्यर्थ है।।

—162/24 नवीन सोमवारी पेठ, रघुजी नगर, नागपुर (महा.)

आधुनिक विश्व में अहिंसा की प्रासंगिकता

श्री दुलीचन्द जैन

अहिंसा धर्म का आधार है। इसी के द्वारा समाज का सुचारु रूप से संचालन संभव है। यही वह गुण है जो प्रत्येक जीव को सम्मान प्रदान करता है। दया एवं करूणा की अभिव्यक्ति इसी जीवन मूल्य में होती है। इसका व्यवहार विश्व में शान्ति एवं सौहार्द लाता है।

भगवान महावीर ने कहा है कि धर्म उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा, संयम और तप उसके लक्षण हैं। जिसका मन सदा धर्म में रमता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। उनके ही शब्दों में, "किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करनी चाहिये, यही ज्ञानियों के ज्ञान का सार है। अहिंसा, समता, समस्त जीवों के प्रति आत्मवत् भाव यही शाश्वत धर्म है।" उन्होंने जीवों के प्रति समादर के भाव पर जोर देते हुए कहा, "सभी प्राणियों को अपनी–अपनी आयु (जीवन) प्रिय है। सुख अनुकूल है, दुःख प्रतिकूल है। वध सबको अप्रिय है, जीवन सबको प्रिय है। अतः किसी भी जीव को त्रास नहीं पहुंचाना चाहिये, किसी के प्रति वैर और विरोध का भाव नहीं रखना चाहिये।"

आज मनुष्य अहिंसा के उपर्युक्त मूल्यों को भूल गया है। परिणामस्वरूप आज विश्व में हिंसा, अशान्ति, तनाव, जीवन–मूल्यों का अवमूल्यन, सौहार्द का अभाव एवं आतंक बढ़ता ही जा रहा है। आइए हम उन उपायों पर विचार करें जो मानवता को वास्तविक सुख प्रदान करने में समर्थ हो सकते हैं।

मनुष्य : क्या मात्र एक आर्थिक यन्त्र है?

आधुनिक सभ्यता, जो पूर्णतः भौतिकवाद पर आधारित है, ने मनुष्य के व्यक्तित्व को संकुचित करके उसे मात्र एक आर्थिक यन्त्र बना दिया है। आधुनिक युग में मनुष्य ने बहुत सारी विचारधाराओं का सहारा लिया ताकि वह पूर्ण समृद्ध एवं सुखी बन सके। लेकिन क्या उसे सुख एवं आनन्द प्राप्त हुआ? नहीं, आज मनुष्य को समृद्धि तो प्राप्त हुई है, लेकिन वह मानसिक शान्ति प्राप्त नहीं कर सका। समृद्धि भी कुछ चुने हुए वर्ग के लोगों को मिली। कुछ वर्षों पहले साम्यवाद का बहुत बड़ा प्रभाव था और लगता था कि वह सारे विश्व को लाल रंग में रंग देगा। इसके प्रचारकों ने कहा कि हम गरीब एवं शोषित वर्ग को सम्पन्नता एवं गौरव प्रदान करेंगे, सामान्य व्यक्ति के जीवन को ऊंचा उठायेंगे, सबमें समानता लायेंगे लेकिन मात्र 100 वर्षों से भी कम समय में यह असफल सिद्ध हुआ। वहां के देशों की सामान्य जनता ने ही इस विचारधारा का विरोध किया, क्योंकि जीवन की आवश्यक वस्तुओं के अभाव से उनका जीवन त्रस्त हो गया था। दूसरी बड़ी विचारधारा पूँजीवाद की है, जिसका नायक अमेरिका है। इसका उद्देश्य है, प्रकृति के संसाधनों का अधिकतम उपभोग। यह भोगवाद पर आधारित है। आज वैज्ञानिक उपकरणों ने सामान्य व्यक्ति के जीवन को बहुत सारी सुख–सुविधाएँ उपलब्ध करा

अमेरिका में 'जैना' द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय जैन सम्मेलन में अतिथि वक्ता के रूप में जुलाई २००१ में दिए गए व्याख्यान का हिन्दी अनुवाद

दी है, लेकिन प्रश्न उठता है कि –क्या मनुष्य का जीवन पहले से अधिक सुखी एवं सौहार्दपूर्ण है? उत्तर नकारात्मक ही है। भौतिकता प्रधान पाश्चात्य युग की चकाचौंध का भीतरी पक्ष कितना अभिशाप ग्रस्त है, यह एक गंभीर विषय है।

टूटते परिवार

हाल ही में ब्रिटेन से प्रकाशित सुप्रतिष्ठित पत्र "दि इकोनॉमिस्ट" ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की है, जिसने पाश्चात्य जगत् के विचारकों को भी चौंका दिया है। शीर्षक है "इक्कीसवीं शताब्दी में अमरीकी परिवार का भविष्य" यह रिपोर्ट शिकागो विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय मत अनुसंधान केन्द्र ने 24 नवम्बर 99 को प्रस्तुत की थी। रिपोर्ट में प्रकाशित कुछ तथ्य इस प्रकार हैं–

- अमेरिका में परिवारों के संचालन एवं बच्चों के लालन--पालन में विवाह संस्था का महत्त्व घट गया है।
- सन् 1960 एवं सन् 1996 के बीच 36 वर्षों में तलाक का प्रतिशत दुगुना हो गया है।
- सन् 1960 में अविवाहित माताओं की संख्या 5 प्रतिशत थी, जो सन् 1996 में बढ़ कर 32 प्रतिशत हो गयी है।
- सन् 1972 में 72 प्रतिशत बच्चे अपने माता–पिताओं(विवाहित) के साथ रहते थे, सन् 1996 में मात्र 52 प्रतिशत बच्चे अपने माता–पिता दोनों के साथ रहते हैं।
- अमेरिका में विवाहित स्त्री–पुरुषों को भी बच्चे नहीं चाहिये। सन् 1972 में 45 प्रतिशत माता–पिताओं के बच्चे नहीं थे। सन् 1996 में 62 प्रतिशत परिवारों में बच्चे नहीं हैं।
- अब अमरीकी युवक–युवतियाँ बड़ी उम्र में विवाह करने लगे हैं तथा कई शादी के पहले कुछ काल तक शादीशुदा जीवन का प्रयोग करते हैं।
- अमेरिका में 25 प्रतिशत स्त्रियाँ अपने पतियों से अधिक आमदनी प्राप्त कर लेती हैं। लगभग 6 प्रतिशत पुरुष घरेलु कामकाज करते हैं तथा उनकी पत्नियाँ कमाई करती हैं।

विद्यालयों में हिंसा

अमेरिका के विद्यालय–परिसरों में हिंसा की घटनाएँ दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अप्रैल 1999 में लिटलटन, कोलोराडो में तब यह चरम सीमा पर पहुँची, जब कोलम्बिने हाई स्कूल के दो विद्यार्थियों ने अपनी कक्षा के 13 सहपाठियों को गोलियों से उड़ा कर स्वयं अपने जीवन को भी समाप्त कर दिया। नेशनल ऐसोसिएशन ऑफ एटोर्नी जनरल ने बताया कि पिछले सात वर्षों में कम से कम 14 विद्यालयों में गोली चलाकर अपने सहपाठियों को मार डालने की घटनाएँ घटित हो चुकी हैं। 14 मार्च 2000 को हजारों अमरीकी नागरिकों ने वाशिंगटन में एक जुलूस निकाला तथा प्रस्ताव पारित किया कि अमरीकी कांग्रेस बन्दूक नियन्त्रण कानून

को सख्त बनाये ताकि हिंसक घटनाओं की संख्या कम हो। वर्तमान समाचारों के अनुसार अमेरिका में प्रतिवर्ष 30,000 व्यक्ति गोलियों के शिकार होते हैं।

श्री ई.एफ. शुमेकर ने कहा कि अमेरिका, जिसके पास विश्व की मात्र 6 प्रतिशत आबादी है, विश्व के 30 प्रतिशत संसाधनों का उपयोग कर लेता है।परिणामस्वरूप विश्व की एक बहुत बड़ी आबादी गरीबी, अभाव एवं शोषण से अभिशप्त है। अतः यह सिद्ध होता है कि मात्र आर्थिक विकास मनुष्य के जीवन के स्तर को ऊँचा उठाने में समर्थ नहीं है।

प्रकृति के प्रति भ्रामक धारणा

शताब्दियों से पाश्चात्त्य जगत् में यह एक धारणा बनी कि मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है और यह सम्पूर्ण सृष्टि उसी के उपभोग के लिए बनी है। फ्रांसिस बेकन ने 400 वर्ष पूर्व लिखा कि यह सारी सृष्टि मनुष्य के लिये ही बनी है, अन्य प्राणियों के लिए नहीं। इस धारणा का परिणाम यह हुआ कि प्रकृति एवं उसके संसाधनों का भयंकर शोषण किया गया। विज्ञान ने भी इस धारणा को बढ़ावा दिया और कहा कि पशु–पक्षी, पेड़–पौधों में प्राण नहीं है। यह भी बताया गया कि प्रकृति का भंडार असीम है और वह मात्र मनुष्य को सुखी करने के लिए है। वैज्ञानिक उपकरणों की सहायता से प्रकृति का अधिक से अधिक शोषण कर मनुष्य के जीवन को सुखी बनाया जा सकता है। इस धारणा के कारण प्रकृति का जो निर्मम शोषण हो रहा है और उसके जो भयावह परिणाम सामने आ रहे हैं, उसकी ओर कम लोगों का ध्यान गया है। एर्नोल्ड टोयनबी ने सन् 1972 में लंदर ओब्जर्वर में लिखा, "हम लोग परेशान हैं, क्योंकि हमने अधिकतम भौतिक साधनों को प्राप्त करने के लिए अपनी आत्मा की भावनाओं को उपेक्षित कर दिया है, लेकिन हमारा यह प्रयास आध्यात्मिक दृष्टि से गलत ही नहीं, अपितु अव्यावहारिक भी है।" हाल ही में प्रकृति एवं उसके साधनों के दुरुपयोग के भीषण परिणाम सामने आये हैं। मेक्सिको में वायु का भयंकर प्रदूषण, युक्रेन के चेर्नोबिल परमाणु केन्द्र की भयावह दुर्घटना और उसके परिणाम, ब्राजील में वर्षा देने वाले जंगलों की विनष्टि, स्वीडन में रासायनिक वर्षा द्वारा झील का विनाश, गंगा जैसी महान् नदियों के जल में प्रदूषण एवं भोपाल में रासायनिक गैस की भीषण दुर्घटना इत्यादि कुछ घटनाएँ इस खतरे को प्रकट करती हैं। जहाँ भी हमारी दृष्टि जाती है, हमारी पृथ्वी उपग्रह संकट से ग्रस्त नजर आती है।

जीव जन्तुओं का विनाश

जैसा मैंने कल भी कहा था, आज पशुओं का निर्ममता से वध किया जाता है। खाद्य पदार्थ, फर, चमड़ा एवं अन्य पदार्थ प्राप्त करने के लिए यान्त्रिक कत्लखानों में बड़े परिमाण में पशु मारे जाते हैं। मनुष्य ने पशुओं की 4355 प्रजातियों में से 25 प्रतिशत को, पक्षियों की 8615 प्रजातियों में से 11 प्रतिशत को एवं जल–जन्तुओं की कुल 34 प्रतिशत प्रजातियों को पूर्णतः समाप्त कर दिया है। मनुष्य की क्रूरता चरम सीमा पर पहुंच चुकी है। ग्रीनपीस पत्रिका के अनुसार

अफ्रीका में 1981 में हाथियों की संख्या 15 लाख थी जो 1990 में, मात्र दस वर्षों में, शिकार के कारण घट कर 6 लाख रह गई। अक्तूबर 1993 में Convention of International trade in Endangered Species को हाथीदांत के व्यापार पर प्रतिबंध घोषित करना पड़ा ताकि हाथियों की संख्या और अधिक नहीं घटे।

गाय के माँस को 'बीफ' कहते हैं। इंग्लैण्ड का बीफ सबसे बढ़िया माना जाता है। यूरोप में इसकी बड़ी प्रतिष्ठा है, इसी के ऊपर इंग्लैण्ड की अर्थव्यवस्था निर्भर करती है। प्रकृति विरुद्ध आहार के कारण गायें पागल होने लगी तथा उसका माँस खाने वाले व्यक्ति भी पागल होने लगे। जब यह खबर यूरोप में फैली तो उन्होंने ब्रिटेन से गौ माँस मंगाना बंद कर दिया। ब्रिटेन के लोगों ने उस बीमारी से ग्रस्त लाखों गायों को मार दिया। हाल ही में यूरोप के कुछ देशों में पशुओं में 'पाँव एवं मुँह की बीमार (Foot & Mouth Disease) फैल गई है। इसके भी भयावह परिणाम नजर आ रहे हैं।

वर्षा लाने वाले जंगल

लकड़ी एवं अन्य पदार्थ प्राप्त करने के लिए बड़ी मात्रा में जंगलों को काटा जा रहा है। घरेलु पशुओं को चराने के लिए तथा सोयाबीन आदि की उपज के लिए भी जंगलों को नष्ट किया जाता है। माँसाहार के लिए पशुओं की कृत्रिम पैदावार की जा रही है। इस प्रकार स्थान–स्थान पर जंगल कटने से पर्यावरण नष्ट हो रहा है, वर्षा कम हो रही है तथा रेगिस्तान बढ़ रहे हैं।

औद्योगिक दुर्घटनाएं

रसायन उद्योगों में भीषण दुर्घटनाएं घटित हो रही हैं। जैसा कि सर्व विदित है, 1985 में भोपाल स्थित यूनियन कारबाइड के कारखाने में एक वाल्व में छेद हो जाने के कारण 30 टन लेथल मिथाइल गैस हवा में फैल गई। इस जहरीली गैस के दुष्प्रभाव से 2000 व्यक्तियों की तुरन्त मौत हो गई तथा 17000 व्यक्ति हमेशा के लिए स्थायी रूप से अपंग हो गए।

विश्व में बड़ी मात्रा में परमाणु बम का निर्माण हो रहा है तथा उस बनी हुई सामग्री को नियन्त्रण में रखना बहुत कठिन है। विकसित राष्ट्रों के पास 15000 टन परमाणु अस्त्र–शस्त्रों का संग्रह हो चुका है। इन परमाणु कारखानों में अनेक भीषण दुर्घटनाएं भी घटित हुई हैं। यूक्रेन स्थित चेर्नाबिल परमाणु संयत्र में जो दुर्घटना घटित हुई, उससे 20000 व्यक्तियों की मृतयु हुई और 5 लाख से अधिक लोग बीमारियों के शिकार हुए।

माँस उद्योग एवं पर्यावरण

माँस का बड़ी मात्रा में उत्पादन पर्यावरण के विनाश का कारण है। विश्व में उत्पन्न होने वाला 40 प्रतिशत अनाज उन पालतू जानवरों के चारे के लिए व्यय होता है, जिन्हें बाद में माँस पैदा करने के लिए कत्ल कर दिया जाता है। यदि विश्व में मांस का उत्पादन कम कर दिया जाय तो पर्यावरण के सुधार पर अनुकूल असर

पड़ेगा। तब कम मात्रा में वृक्षों को काटना पड़ेगा एवं भूमि का कटाव भी घट जायेगा।

उपभोक्तावाद

उपभोक्तावाद का विस्तार इस पाश्चात्य विचार धारा पर आधारित है कि वस्तुओं का अधिकतम उत्पादन विश्व की सभी आर्थिक समस्याओं का समाधान है और इसी से जन सामान्य का आर्थिक एवं सामाजिक विकास संभव हो सकता है। अपने जीवन को समृद्ध बनाने के लिए हमें वस्तुओं का अधिकतम संग्रह एवं उपभोग करना चाहिए। अमेरिका के लोग आज सन् 1950 की तुलना में वस्तुओं का दुगुना संग्रह एवं उपभोग कर रहे हैं। प्रश्न उठता है कि सन् 1950 की तुलना में क्या वे दुगुने सुखी हैं? यह उपभोक्तावाद का सिद्धान्त अनैतिक सिद्धांतों पर आधारित है जहाँ स्वार्थ की भावना ही प्रमुख है तथा सामाजिक कल्याण का महत्त्व गौण है। कहते हैं कि जनसंख्या की असीमित वृद्धि पर्यावरण के विनाश का मुख्य कारण है और इसमें कोई संदेह भी नहीं है। लेकिन समृद्ध समुदाय की वस्तुओं के बारे में बढ़ती हुई मांग और तृष्णा भी पर्यावरण विनाश का एक बहुत बड़ा कारण है, इसकी ओर कम ध्यान दिया गया है।

The World wide Fund for Nature ने अपनी Living Planet Report 2000 में कहा है कि आज वस्तुओं की जितनी मांग बढ़ रही है, उससे लगता है कि पृथ्वी उपग्रह में जितने संसाधन हैं, उनसे 30 प्रतिशत अधिक संसाधनों की आवश्यकता होगी। इसमें आगे कहा गया है कि यदि अविकसित देशों के व्यक्ति भी विकसित देशों के लोगों के समान अपनी आवश्यकताओं की अभिवृद्धि करते रहेंगे तो उनकी मांग की पूर्ति के लिए दो पृथ्वी उपग्रहों की आवश्यकता पड़ेगी। रिओ डि जेनैरो में सन् 1992 में आयोजित पृथ्वी शिखर सम्मेलन में यह भाव व्यक्त किया गया कि "विश्व में पर्यावरण के निरन्तर होने वाले ह्रास का मुख्य कारण विकसित राष्ट्रों की बढ़ती हुई माँगे तथा उनका अत्यधिक उपयोग है, यदि इसे नियन्त्रित नहीं किया गया तो पर्यावरण का संकट बढ़ता ही जायेगा।"

इस परिस्थिति में जैन धर्म के मूल्यों की क्या भूमिका है, इस पर भी विचार किया जाना आवश्यक है। भगवान् महावीर ने उत्तराध्ययन सूत्र में कहा, "जहाँ पर भौतिक पदार्थों के अत्यधिक संग्रह एवं उनके उपयोग की भावना रहती है, वहाँ पर परिग्रह एवं तृष्णा की वृद्धि हो जाती है।" तृष्णा से मनुष्य के मन में और अधिक वस्तुओं का संग्रह करने की भावना जगती है। इस प्रकार की अति संग्रह की भावना अशान्ति में परिणत हो जाती है। केवल अपने स्वार्थ को ही बढ़ाते चले जाना मानवीय उच्च भावनाओं यथा करुणा आदि को भी विनष्ट कर देता है। आज जो उपभोक्ता सामग्री की मांग निरन्तर बढ़ती जा रही है, उससे कोई साधारण व्यक्ति भी अछूता नहीं रह सकता है। जब उस व्यक्ति की मांगों की पूर्ति नहीं होती, तो उसके मन में चिन्ता एवं क्षोभ पैदा हो जाता है। इसके कारण सामान्य आमदनी का

व्यक्ति कभी कभी अपना मानसिक संतुलन खो देता है। चोरी एवं डाके इत्यादि भी बढ़ जाते हैं। उपभोक्तावाद साधारण व्यक्ति को सम्पन्न व्यक्तियों का अनुकरण करने को बाध्य करता है, जिससे उनका मनोवैज्ञानिक एवं नैतिक अधःपतन हो जाता है। बढ़ता हुआ उपभोक्तावाद व्यक्ति के जीवन में अशान्ति, तनाव, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि पैदा कर देता है।

प्रदूषण का प्रकोप

आज अनेक देशों में प्रदूषण का प्रकोप इतना बढ़ गया है कि वहाँ विशुद्ध जल एवं वायु का मिलना भी दुर्लभ हो गया है। रासायनिक खाद के अत्यधिक प्रयोग से हिंसा तो होती है, जमीन की उर्वरा शक्ति का भी क्षरण हो रहा है। कई देशों में नदियों का पानी इतना दूषित हो गया है कि वह पीने के लायक नहीं रहा। कारखानों से निकलने वाले धूएँ एवं गंदगी का भी पर्यावरण पर घातक प्रभाव पड़ रहा है। पृथ्वी शिखर सम्मेलन में इस बात पर भी चिंता व्यक्त की गई कि प्रकृति के संसाधनों का भंडार धीरे–धीरे कम होता जा रहा है। आज दुनियां के 7–8 समृद्ध देश 80 प्रतिशत संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं। इनकी जनसंख्या मात्र 20 प्रतिशत है। परिणामस्वरूप विश्व की एक बड़ी आबादी गरीबी, कुपोषण, भूख, बीमारी इत्यादि से ग्रसित है। विकसित एवं अविकसित देशों में असमानता बढ़ती ही जा रही है।

अहिंसा का महत्त्व

भगवान महावीर ने जो सबसे बड़ा संदेश दिया वह अहिंसा का संदेश है। अहिंसा का अर्थ है जीव मात्र के प्रति प्रेम, सम्मान एवं एकात्मता का भाव। यही भाव आज के विश्व में वास्तविक सुख, शांति एवं सौहार्द उत्पन्न कर सकता है। वर्तमान विश्व की समस्याओं के निराकरण में इस सिद्धान्त की क्या भूमिका है इस पर विचार किया जाना चाहिए। अहिंसा का सिद्धान्त केवल मनुष्यों या पशुओं तक ही सीमित नहीं है, किन्तु इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है। जैन धर्म मानता है वनस्पति में भी जीव है। यहां तक कि पृथ्वी, अग्नि, जल एवं वायु में भी अदृश्य जीव हैं, जिन्हें एकेन्द्रिय जीव कहते हैं। अतः उनकी भी रक्षा की जानी चाहिए। अतः जैन धर्म के अनुसार वृक्षों को काटना या वनस्पति को नष्ट करना, भूमि को अनावश्यक खोदना, जल का अनावश्यक बड़ी मात्रा में उपयोग हिंसा का कारण है। आज पर्यावरण वैज्ञानिक एवं वन्य जन्तु विशेषज्ञ भी कहते हैं कि जंगली जानवरों की रक्षा करनी चाहिए, क्योंकि वे प्रकृति का संतुलन बनाने में सहायक हैं। प्रत्येक जीव का, चाहे वह छोटी सी चींटी हो या वृहद्काय हाथी, प्रकृति की सुरक्षा में महत्त्व है। आज वनस्पति के रक्षण, नदियों को प्रदूषण से बचाने एवं पृथ्वी की संपदा की रक्षा के लिए आंदोलन चल रहे हैं। इस प्रकार तीर्थंकरों ने हजारों वर्ष पहले प्राणी–रक्षा पर जो जोर दिया था, उसी का समर्थन आज के वैज्ञानिक कर रहे हैं। **(क्रमशः)**

–अध्यक्ष, करुणा अन्तर्राष्ट्रीय, 36(नया नम्बर) शम्बुदास स्ट्रीट, चेन्नई–600001

परिचय संवाद

आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. : एक जीवन झाँकी

शील एवं सदाचरण के सफल प्रेरक प्रवचन–प्रभाकर जैनाचार्य 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का कार्तिक शुक्ला षष्ठी 21 नवम्बर 2001 को दीक्षा दिवस था। इस अवसर पर जोधपुर के घोड़ों का चौक स्थानक में बहनों द्वारा प्रस्तुत संवाद यहां प्रकाशित किया जा रहा है।– **सम्पादक**

दीपिका– अरी बहिन शुभा! आज क्या है? इतनी विशाल संख्या में जनता यहाँ क्यों इकट्ठी हुई है?

शुभा– अरी बहिन दीपिका! क्या तुझे पता नहीं आज जैन जगत के महान् ज्योतिर्धर आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की 39वीं दीक्षा जयन्ती है।

दीपिका– बहिन! क्या आचार्य हीराचन्द्र जी म.सा. के विषय में मुझे कुछ बताओगी। वे कौन हैं? उनका जन्म कहां हुआ? उनके माता–पिता व गोत्र क्या है? मैं जानना चाहती हूँ।

शुभा– हाँ, बहिन दीपिका! जरूर बताऊँगी, वे रत्नवंशके महान् आचार्य हैं। उनका जन्म मारवाड़ की पावन भूमि जोधपुर जिले के पीपाड़ शहर में हुआ। आपकी माता का नाम मोहिनीदेवी था। वे बहुत सरल आत्मा थी। छल–कपट और क्रोध का तो नामोनिशान भी नहीं था। आपके पिता मोतीलाल जी गांधी समाज रत्न पुरुष थे।

दीपिका– बहिन! मुझे यह बताने का कष्ट करो कि उन्होंने तरुण वय में संयम लेने का विचार कैसे बनाया? यह अवस्था तो खाने–पीने और ऐशोआराम की है।

शुभा– हाँ बहिन दीपिका! तुम्हारा कहना सही है। सचमुच में तरुणाई की घड़ियाँ बेमानी होती हैं। कहावतें प्रसिद्ध हैं– "जवानी सो दीवानी।"

"एक जवानी पैसो पल्ले, राम चलावे तो सीधो चले।" पर इस जगत् में कुछ पुरुष ऐसे होते हैं, जिनके लक्षण, विलक्षण होते हैं। ये तो जन्म से ही महान् हैं। सरल हैं, विनम्र हैं, विरागी हैं, विशेष प्रतिभा सम्पन्न हैं। इनके जितने गुणग्राम किये जाय कम हैं।

दीपिका– अरी बहिन! उन्हें संयम की भावना क्यों जगी? क्योंकि यह संसार तो भौतिक वस्तुओं से भरा पड़ा है। जिधर देखो, उधर मन को गुदगुदाने वाली एवं आंखों को आश्चर्यचकित कर देने वाली साज–शृंगार की सामग्रियाँ हैं, जिन्हें देखकर वैराग्य आना कठिन है।

शुभा– हाँ बहिन दीपिका! तुम्हारा कहना सही है। किन्तु इनकी विरक्ति एवं उदासीनता का प्रमुख कारण इनकी बहिन की मृत्यु था।

दीपिका– बहिन...। मुझे आश्चर्य होता है कि इनको संयम लेते वक्त क्या इनके माता–पिता ने इन्हें नहीं रोका?

शुभा– बहिन! जब इन्होंने दीक्षा लेने की भावना प्रकट की तो इनके

माता–पिता एवं कौटुम्बिक जनों ने इन्हें संयम की अनेक कठिनाइयाँ बताकर रोकने की कोशिश की और कहा कि जिस संयम को लेने की तुम चेष्टा कर रहे हो, वह मार्ग सरल नहीं है, बहुत कठिन है। यह नानी व दादी का घर नहीं है जैसा कि कहा है–

"नानी रो घर छे नहीं, खराखरी रो खेल।
विकट पंथ साधु तणो, सेंठो व्हे तो झेल।।"

यह फूलों का नहीं, शूलों का मार्ग है। बावीस परीषहों का जीतना, पंच महाव्रतों का पालन करना और लोंच करना बहुत कठिन है।

दीपिका– बहिन शुभा! संयम के इन सब कष्टों की बातें सुनकर तो वे घबरा गए होंगे और संयम लेने की भावना उनके दिल–दिमाग से निकल गई होंगी और उन्होंने घर में रहना कबूल कर लिया होगा।

शुभा– नहीं बहिन! उनका वैराग्य मजबूत था इसलिए कहा है–

लग जाता है वैराग्य का चस्का,
ज्ञान सुधारस पीने का।
सारे स्वाद फीके लगते हैं,
इस दुनियां में जीने का।।

दीपिका– बहिन शुभा! क्या इनके घरवालों ने इन्हें संयम लेने की हंसते–हंसते आज्ञा दे दी होगी।

शुभा– हाँ बहिन! घरवालों को हार कर आज्ञा देनी ही पड़ी।

दीपिका– बहिन...!इन्होंने दीक्षा कब ली, किसके पास ली, किस सम्प्रदाय में ली? क्या यह सब बातें बताने की कृपा करोगी।

शुभा– हाँ बहिन! जरूर बताऊँगी, इन्होंने त्याग वैराग्य से प्रेरित होकर विक्रम संवत् 2020 कार्तिक शुक्ला षष्ठी को रत्न सम्प्रदाय में आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के मुखारविन्द से जैन भागवती दीक्षा ली।

दीपिका– बहिन! दीक्षा लेकर हीराचन्द्र जी म.सा. ने क्या किया?

शुभा– बहिन दीपिका! दीक्षा लेकर उन्होंने सिर्फ माथा ही नहीं मुंडवाया, किन्तु मन मुंडाकर साधना में लग गए। अप्रमत्त बनकर गुरु का विनय करते हुए ज्ञान–ध्यान में जुट गये। आपने आगमों का, संस्कृत का, प्राकृत का एवं थोकड़ों का गहन ज्ञान प्राप्त किया।

दीपिका– बहिन! ज्ञान सीखने के बाद इन्होंने क्या किया? इस विषय में मैं आपसे जानकारी चाहती हूँ। कुछ बताओगी?

शुभा– हाँ बहिन! ज्ञान सीखने के साथ–साथ उन्होंने बड़ों का आदर करना, गुरु आज्ञा में रहना एवं गुरु के सामने रहकर तपाराधना, जपाराधना, व्याख्यान आदि सीखना इत्यादि कार्य किया।

दीपिका– तो बहिन..!क्या वे सदा अपने गुरु के पास ही रहते या अलग अपना

टोला बनाकर चलते थे। क्योंकि आज के जमाने में बेटा अपने पूज्य पिता और शिष्य अपने गुरु से अलग रहने में आनन्द अनुभव करता है। बन्धन में रहना किसी को प्रिय नहीं। स्वतंत्रता सबको अच्छी लगती है, फिर वे स्वच्छन्द हुए फिरते हैं।

शुभा– हाँ बहिन! तुम्हारा कथन सोलह आना सत्य है। गाड़ी और लाड़ी मिल जाने पर लड़का अपने माता–पिता के पास तथा शिष्य–शिष्याएं मिल जाने के बाद चेला–चेली अपने गुरु के पास रहना नहीं चाहते। पर मुनि श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने तो दीक्षा लेकर सम्पूर्ण काल अपने गुरु की सेवा में बिताया। सिर्फ एक चातुर्मास अलग हुआ।

दीपिका– बहिन! गुरु की चरण सेवा का फल उन्हें किस रूप में मिला?

शुभा– हाँ बहिन! सेवा का मेवा तो हर व्यक्ति को मिलता ही है। आचार्य भगवन्त ने आपकी सेवा से खुश होकर आचार्य जैसे महान् पद पर आपको नियुक्त किया।

दीपिका– बहिन! आचार्य श्री ने आचार्य बनकर क्या किया?

शुभा– बहिन! आचार्य बनकर आचार्य श्री ने जिनशासन की बहुत बड़ी सेवा की है। आषकी ओजस्वी वाणी में जादू है। आपके आचार्यकाल में सैकड़ों व्यक्तियों ने 12 व्रत धारण किए, सैकड़ों ही शीलव्रती बन गए। आपकी वाणी से प्रभावित होकर हजारों ने रात्रिभोजन का त्याग कर दिया। आप व्यसन और फैशन से भी छुटकारा दिलाते हैं। आपके शान्त, दान्त एवं विवेकशील चारित्र का प्रभाव श्रावक–श्राविकाओं पर पड़े बिना नहीं रहता।

दीपिका– बहिन! आज उनकी दीक्षा जयन्ती के पावन प्रसंग पर हमें क्या करना चाहिये? जब घर में किसी की बर्थ डे आती है तो लोग कई प्रकार के मिष्ठान्न बनाकर अपने रिश्तेदारों को बुलाकर हर्ष मनाते हैं। आज हम क्या करें?

शुभा– बहिन! आज हमें इनके चिरायु होने की मंगल कामना करना है। ये दीर्घायु होकर चतुर्विध संघ का महान् कल्याण करें।

''जितने हैं ये नभ में तारे, उतने वर्ष गुरु जीओ हमारे।'

इसी मंगलकामना के साथ.... ।जय महावीर, जय गुरु हस्ती हीरा मान।

सूचना

युगमनीषी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन चरित्र का प्रकाशन शीघ्र ही सम्भावित है। जो भी महानुभाव इसमें अर्थ सहयोग करना चाहें या कतिपय प्रतियाँ आरक्षित कराना चाहें वे निम्नांकित पते पर सम्पर्क स्थापित करें– **ज्ञानेन्द्र बाफना, अध्यक्ष, आचार्य श्री हस्ती जीवन चरित्र समिति, सी–55, शास्त्री नगर, जोधपुर (राज.) फोन नं. 0291–434355, 645061**

जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा– नमस्कार मन्त्र में 'अरहंताणं' एवं 'अरिहंताणं' का प्रयोग चल रहा है। इन दोनों में से प्राचीन व शुद्ध कौनसा है?

समाधान– आगम में दोनों पाठ हैं। 'अरहंत' को प्राचीन मानने वालों की पुष्टि के प्रमाण हैं–1. इस पद में केवल तीर्थंकर आते हैं। 'अर्ह पूजायाम्' धातु से इस शब्द की व्युत्पत्ति होती है, अतः अरहंताणं अधिक युक्ति संगत है। 2. भगवती सूत्र के टीकाकार श्री अभयदेवसूरि ने अरहंताणं की व्याख्या के पश्चात् 'अरिहंताणं' की व्याख्या की है। 3. खारवेल के शिलालेख में 'णमो अरहंताणं' लिखा हुआ है।

इन आधारों से अरिहंताणं के स्थान पर अरहंताणं बोलना उचित है। आगम की प्रतियों में दोनों शब्द मिलने के साथ प्रथम पक्ष के तर्कों का प्रत्युत्तर–

1. प्रथम पद में मुख्य रूप से तीर्थंकर ही आते हैं। आगम के अनेक स्थलों से भी यही ध्वनित होता है। किन्तु क्वचित् उदाहरण सामान्य केवली को प्रथम पद में लेने के उपलब्ध होते हैं। भवगतीसूत्र शतक 12 उद्देशक 1 में शंख जी की पृच्छा के समाधान में बुद्ध जागरणा अधिकारी 'अरिहंत'–सर्वज्ञ सर्वदर्शी को बताया गया है। अबुद्ध में अन्य अणगार। केवली अबुद्ध नहीं हो सकते और उनके लिए अपेक्षाकृत रूप से अरिहंत शब्द का यहाँ प्रयोग हुआ। आत्मिक विकास, स्नातक आदि गुणों के साम्य से केवली को अपेक्षाकृत प्रथम पद में बोलने में बाधा नहीं।

आचार्य उपाध्याय के क्रमशः 36, 25 गुण सामान्य साधु में भी होते हैं। शास्त्र में उनका पृथक् उल्लेख नहीं। इसी प्रकार अरिहंत के 12 गुणों का भी शास्त्र में सीधा कथन नहीं। 27वें समवाय में साधु के 27 गुण और अनुयोगद्वार सूत्र में वर्णित भाव के अधिकार में कर्मों के क्षय से प्रकट होने वाले गुणों का क्षायिक भाव में सूचन है। समवायांग सूत्र के 31 वें समवाय में कर्मक्षय की अपेक्षा से सिद्ध के 31 गुण बताये गये, जिसका उल्लेख उत्तराध्ययन सूत्र के 31 वें अध्याय में भी है। उन्हीं में से 4 घातिकर्मों के क्षय से प्रकटित गुण अरिहंत में भी हैं– तीर्थंकर और सामान्य केवली दोनों में गुण साम्य से प्रथम पद में मुख्य रूप (तीर्थंकर प्रकृति की प्रधानता से) से तीर्थंकर के गुण 34 अतिशय, 35 वाणी, 64 इन्द्रों के वंदनीय बताया गया, वहीं केवलज्ञान–केवलदर्शन की समानता से सामान्य केवली की संख्या का उल्लेख कर पूर्व महापुरुषों ने केवली को प्रथम पद में सम्मिलित किया। अपेक्षा से समझ लेना चाहिये।

इसके साथ विशेष बात यह कि 'अरिहंताणं' और 'अरहंताणं' दोनों की संस्कृत छाया 'अर्हद्भ्यः' ही होती है। अर्थात् दोनों एक ही धातु 'अर्ह–पूजायाम्' से बनते हैं।

प्राकृत नियम– उच्चार्हति/8/2/111 अरहंतो, अरिहन्तो, अरुहन्तो। अन्य शब्द भी इसी प्रकार बोले जाते हैं– गर्ह–गरिहामि, आर्य–आरिया, अनार्य–अनारिया, अर्ह–अरिह।

आचार्य हेमचन्द्र जी का समय वीर निर्वाण की 16 वीं शताब्दी (विक्रम संवत् 1229) बताया जाता है। उन्होंने प्राकृत व्याकरण में ऐसा सूत्र बनाया अर्थात् उनके समय में 'अरिहन्त' की प्रधानता थी।

2. अभयदेव जी सूरि ने दोनों शब्दों के साथ अन्य शब्दों की व्युत्पत्तियां भी

दी। अर्थात् उनके समय में दोनों शब्द थे। उनका समय विक्रम संवत् 1139 बताया जा रहा है अर्थात् वीर निर्वाण 1609। निर्युक्तिकार भद्रबाहु स्वामी का समय विक्रम संवत् 562, वीर निर्वाण 1032 के आसपास का निर्धारित होता है। उनके द्वारा आवश्यक निर्युक्ति में 'अरिहंत' शब्द की व्याख्या पहले की गई। उनसे (भद्रबाहु से) लगभग40 से 50 वर्ष पूर्व लिपिबद्ध शास्त्र में उपलब्ध अरिहंत शब्द से ही उन्होंने इसकी व्याख्या प्रथमतः की।

अरिहंत के अर्थ का समावेश करते हुए प्राकृत के शब्द से उहोंने सीधा अर्थ 'अरिहननात्' भी घोषित कर इसे व्यापकता प्रदान की।

3. खारवेल के शिलालेख की प्राचीनता तो असंदिग्ध है, पर प्रामाणिकता नहीं। प्राचीन होना मात्र ही प्रामाणिकता के लिए पर्याप्त नहीं। उस शिलालेख पर अंकित है– नमो अरहंताणं, नमो सव्वसिद्धाणं, केवल दो पद को मानकर 'सव्व सिद्धाणं' मानने को कौन–कौन तैयार हैं? शायद कोई भी नहीं। अतः उसके आधार पर परिवर्तन उचित नहीं। सुज्ञ विचार करें।

जिज्ञासा– केवली का समावेश पाँचवे पद में होता है या पहले पद में?

समाधान– प्रथम प्रश्न के उत्तर में विवेचन किया जा चुका है। उसी के साथ यहाँ इतना सा विशेष– (नत्थि णय जिणमयं) अर्थात् जिनमत में अपेक्षावाद की प्रधानता है।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में– दूसरे वक्षस्कार में 'सिद्धा वयंति' कहा गया। जिसका अभिप्राय किया जाता है– केवली अथवा अरिहंत कहते हैं, क्योंकि सिद्ध तो बोलते नहीं।

उत्तराध्ययन सूत्र के बीसवें अध्याय की गाथा में 'सिद्धाणं णमो किच्चा संजयाणं च भावओ'' के टीकाकारों ने अरिहंत को सिद्ध में समाविष्ट माना। अपेक्षा से उन्हें संयति में समाविष्ट भी माना जा सकता है।

सामान्य केवली की अपेक्षा तीर्थंकर भगवन्तों में 'जिन' नाम कर्म के उदय का अंतर ही रहता है। आत्मिक गुणों में किंचित् भी अंतर नहीं है। अतः भगवती शतक 12 उद्देशक 1 की अपेक्षा से वे प्रथम पद में बोले जा सकते हैं।

गुलाबपुरा की पुस्तकों में प्रारम्भ से ही व ब्यावर वाली पुस्तकों में गत कतिपय वर्षों से सामान्य केवली को प्रथम पद में सम्मिलित नहीं किया जा रहा है। तत्त्व केवलीगम्य।

जिज्ञासा– 'नमस्कार मन्त्र' मन्त्र है या सूत्र?

समाधान– प्रभु से कुछ चाहना स्वार्थ है, प्रभु को चाहना परमार्थ है। अनादिकाल से जीव प्रभु को चाहने के स्थान पर, प्रभु से चाहता है और तब उसकी धार्मिक क्रियाएं जप–तप, अध्ययन संसार घटाने के स्थान पर बढ़ाने वाला ही बनता है। पर इससे जप–तप को हेय नहीं कहा जा सकता।

आगमों में विद्या और मंत्र का भिक्षा-प्राप्ति एवं यशकीर्ति के लिए प्रयोग निषिद्ध कहा गया है। किन्तु गणधर भगवन्तों के गुणों में 'विज्जापहाणे' 'मंतप्पहाणे' भी कहा गया (उववाई, रायप्पसेणी, प्रश्नव्याकरण आदि में) अर्थात् गणधर भगवंत विद्या प्रधान, मन्त्र प्रधान थे।

बृहत्कल्प भाष्य (चौथा अध्ययन सूत्र 33 से 36 का) में तृणादि में रहे सर्प को मंत्रित करने का उल्लेख है। दशवैकालिक में आठवें अध्ययन की 51 वीं गाथा में जीव हिंसा से बचने के लिए गृहस्थ को मन्त्र कहने का निषेध किया गया है। लेकिन नवकार मंत्र को कहने से जीव हिंसा का पाप नहीं लगता।

मूल में ही स्पष्ट है कि पापों का नाश करने वाला मंगल सम्पूर्ण मंगलों में प्रथम व प्रधान है। विशेषावश्यक भाष्य में इसे 14 पूर्वों का सार भी कहा गया, इसी प्रकार इसे महामंत्र के नाम से भी संबोधित कर दिया गया।

उपाध्याय अमरमुनि जी के सामायिक सूत्र में 'नमस्कार सूत्र' के अन्तर्गत इसे सर्वश्रेष्ठ मंत्र भी प्रतिपादित किया गया है।

मंत्र को अनुचित ठहराने के लिए लौकिक कामना का तर्क दिया जाता है। इसी तरह तप-संथारे के अतिचारों में इसका स्पष्ट उल्लेख किया गया, साधक को चेताया गया, कारण यह है कि अनेक साधक इन आकर्षणों से अपनी साधना धूमिल कर संसार-परिभ्रमण कर लेते हैं। पर इससे तप या संथारा हेय तो नहीं? मंत्र का दुरुपयोग हेय ही है, लेकिन मंत्र शब्द नहीं।

पाप सूत्र में मंत्र के साथ विद्या भी है, तो क्या विद्या को हेय कहा जाए? अपेक्षा भेद से ही बात समझनी होगी। मंत्र विद्या हेय भी हो सकती है, उपादेय भी।

नवकार मंत्र आत्मसाधना का मूल मंत्र कहा जाता है। उसकी सम्यक् साधना कर यह जीव आगे बढ़े, पर इसको भी व्यर्थ ही विवादास्पद बनाने का प्रयास कितना उचित कहा जा सकता है। सुज्ञ विचार करें।

सुनहरा भोर आएगा

डॉ. (श्रीमती) चन्दनबाला मारू

अंधेरी रात बीतेगी, सुनहरा भोर आएगा।।टेर।।
नहीं थकना हमें बन्धु, हमें करना है पार सिंधु,
हम हैं धरती की सन्तान, न हैं हिन्दू न क्रिस्तान।
रहेंगे एक होकर हम,
दूर संघर्ष भागेगा, मूल्य मैत्री का जागेगा।।1।।
हम जग के बने मेहमान, न हैं निर्धन, न हैं धनवान,
लक्ष्मी है बड़ी चंचल, कभी दौड़े कभी पैदल।
रखेंगे शम को दृढतम हम, करेंगे दौड़ श्रम की हम,
गरीबी दूर भागेगी, खुशहाली जगमगाएगी।।2।।
मिलकर करना हमें जग काम, कर्मरत हों बनें निष्काम,
सहेंगे कष्ट मिलकर हम, बढेंगे सुख में मिलकर हम।
विषमता अंत पाएगी, समता लहलहाएगी।3।।
अंधेरी रात बीतेगी.................................।।

-1425, प्रभातनगर, हिरणमगरी सेक्टर 5, उदयपुर (राज.) 313002

महामंत्र णमोक्कार : स्वरूप एवं माहात्म्य

श्री जशकरण डागा

(6) मुनियों की कल्पचर्या तीन प्रकार की होती है, यथा–

1. निर्विष्ट कल्प स्थिति– ये परिहार विशुद्ध चारित्र के पालक होते हैं। इनका सहारण (अपहरण) नहीं होता है।

2. जिनकल्प– ये वन में रहकर एकाकी कठोर साधना करने वाले मुनि होते हैं, जो जिन मुद्रा के धारक होते हैं। ये अपने शरीर का प्रतिकर्म (सार सम्हाल, चिकित्सा आदि) भी नहीं करते हैं और न कराते हैं। ये सभी परीषहों एवं उपसर्गों को समभाव से सहन करते हैं।

3. स्थविर कल्प– ये तीर्थंकर प्रभु की आज्ञानुसार, संयम पालनार्थ मर्यादित वस्त्र उपकरण के धारक होते हैं। व्याधि-निवारणार्थ निर्दोष कल्पनीय औषधि का सेवन करते हैं।

विशेष– 1. उपर्युक्त कल्पचर्या की अपेक्षा से मुनियों के तीन प्रकार कहे गए हैं। ये सभी पंच महाव्रत, पांच समिति व तीन गुप्ति के पालक होते हैं।

2. वर्तमान में दिगम्बर मुनि जिनकल्प व श्वेताम्बर मुनि स्थविर कल्प की परम्परा के प्रतीक हैं, ऐसी अनेक विद्वानों की मान्यता है। सचेलक (मर्यादित वस्त्र वाले) व अचेलक (वस्त्र रहित या अल्प वस्त्र वाले) परम्परा का वर्णन भी इसी से संबंधित है। दिगम्बर मुनिलिंग, जिनमुद्रा के अनुरूप है,तो श्वेताम्बर मुनिलिंग जिन आज्ञानुरूप है।

3. भ. पार्श्वनाथ के केशी कुमार आदि पांच रंगों के वस्त्र धारण करने वाले श्रमण सचेलक और भ. महावीर के शिष्य गणधर गौतम आदि अनेक श्रमण अचेलक परम्परा के पालक थे। इससे यह स्पष्ट होता है कि श्वेताम्बर मत भ. पार्श्वनाथ की प्रचलित सचेलक परम्परा का प्रतीक एवं प्राचीन है।

4. जैन मुनि के वस्त्र मुँहपत्ती आदि के धारक होने की पुष्टि प्राचीन वैदिक ग्रन्थों से भी होती है। जैसे–

" हस्ते पात्रं दधानाश्च, तुण्डे च वस्त्रधारकाः।
मलिनान्येव वासांसि धारयन्यल्पभाषिणः।।

अर्थात् हाथ में पात्र, मुख पर मुखवस्त्रिका व मलिन वस्त्रों के धारक, अल्पभाषी जैन मुनि होते हैं।

5. तीर्थंकर कल्पातीत होते हैं। जिनकल्पी व कल्पातीत महात्मा अपवाद सहन नहीं करते। स्थविरकल्पी आवश्यक व अप्रतिहार्य प्रसंग आने पर, जिन आज्ञा को ध्यान में रखते हुए, कल्प मर्यादा तथा द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के अनुसार यथोचित अपवाद मार्ग का भी सेवन करते हैं तथा बाद में उसके सेवन में लगे दोषों

का समुचित प्रायश्चित्त लेकर शुद्धिकरण करते हैं।

6. जिनागम में पांच प्रकार के साधु पूजनीय (वंदनीय) नहीं माने गए हैं, यथा–

1. **पासत्था**– जो रत्नत्रय से भ्रष्ट द्रव्यलिंगी होते हैं।
2. **उसन्ना**– जो साधु-निमित्त बनाए पाट, स्थानक आदि का उपयोग करते हैं, दिन में दो बार प्रतिलेखन, प्रतिक्रमण आदि नहीं करते व स्थानक छोड़कर भटकते रहते हैं।
3. **कुसीलिया**– जो ज्ञान, दर्शन, चारित्र के 24 अतिचारों का सेवन करते हैं।
4. **संसत्ता**– जिन्हें गुणावगुण की कुछ जानकारी नहीं और देखादेखी वेष ग्रहण कर उदर पूर्ति करते हैं।
5. **अपछंदा**– जो तीर्थंकर, गुरु या शास्त्र की आज्ञा का उल्लंघन कर स्वच्छंद व्यवहार व उत्सूत्र प्ररूपणा करते हैं।

महामंत्र में 'णमो' शब्द के प्रयोग का हेतु

1. परमेष्ठी महामंत्र में 'णमो' शब्द का प्रयोग हुआ है, जिससे 'अहं' व 'मम' रूप कषाय गलित होता है। 'अहं' के तीन रूप हैं– क्रोध, मान व द्वेष। 'मम' के भी तीन रूप हैं– माया, लोभ व राग। णमो में 'ण' नहीं का तथा 'मो' मेरा या मोह का प्रतीक है। इस तरह णमो 'नहीं मेरा' (यानी मैं) से 'अहं' तथा 'नहीं मोह' से 'मम' का विनाश होता है। इस प्रकार से 'णमो' संसार की जड़ 'अहं' व 'मम' दोनों को ही सर्वथा समाप्त करने वाला है। जिससे सरल, नम्र व निर्मोह आत्मवृत्ति प्रगट होती है।

2. 'णमो' धर्म का मूल है तथा वंदन का पर्याय भी है। जिसके लिए कहा गया है– **"वंदणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ, उच्चगोयं कम्मं निबंधई।"** अर्थात् वंदन से नीच गोत्र का क्षय और उच्चगोत्र का बंधन होता है। भावपूर्वक पंचपरमेष्ठी को वंदन करने से उत्कृष्ट रसायन आने पर तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन होता है।

3. 'णमो' पुण्य का नवम भेद है, जिससे सहज व उत्तम पुण्य अर्जित होता है (गुणियों व संयमियों को नमन से)। जब भावपूर्वक पंच परमेष्ठी भगवंतों को नमन किया जाता है, तब वह नमस्कार आत्मा को सर्व पापों से मुक्त बनाकर शिवपद प्रदान कराने में समर्थ बन जाता है।

4. महामंत्र में 'ण' का प्रयोग चौदह बार हुआ है। 'ण' बोलने पर जीभ उलटी होती है तथा पिछले भाग की नोंक का हिस्सा तालु के कठोर भाग को छोड़कर, तालु के मध्य भाग मूर्धा से रगड़ता है। 'ण' बोलने से जीभ में भी खिंचाव आता है, जिससे थाइराड व पेराथाइड ग्लेण्ड्स संतुलित होते हैं तथा व्यक्ति के शारीरिक मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास में बहुत लाभ होता है। 'ण' के प्रयोग से 'अल्फा' तरंगें पैदा होती हैं, जो आनंद पैदा करती हैं।**(क्रमशः)**

–संघपुरा, टोंक (राज.)

मेथी से हृदय की चिकित्सा

श्री चंचलमल चोरड़िया

यह चौंकाने वाला तथ्य हो सकता है कि मेथी दाना से हृदयरोग की चिकित्सा संभव है, किन्तु यह अनुभूत प्रयोग है कि मेथी के दानों को यदि हृदय के पास की नलिकाओं पर लगाया जाए तो इससे हृदयशूल तो दूर होता ही है, साथ ही हृदय नलिकाओं में उत्पन्न अवरोध भी हट जाता है। मेथी दाना के प्रयोग की विधि इस प्रकार है—कागज पर चिपकाने में काम आने वाली सेलो टेप पर मेथीदाना चिपका कर चारों तरफ थोड़ा स्थान खाली छोड़ दें, ताकि टेप को त्वचा पर चिपकाया जा सके। इसे त्वचा पर तब तक चिपका रहने दें, जब तक उस स्थान पर किसी प्रकार की प्रतिकूलता या सिर में भारीपन का अनुभव न हो। यह प्रयोग चन्द दिनों तक चालू रखें। टेप को बदला जा सकता है। मात्र तीन दिनों के नियमित प्रयोग से उसके चमत्कारी प्रभावों का अनुभव किया जा सकता है।

चिकित्सा की यह विधि शरीर के ऐसे प्रत्येक हिस्से पर अपनायी जा सकती है, जहां दर्द का अनुभव होता हो। शरीर के दर्दवाले भाग पर मेथी दाना लगाने से दर्द में राहत मिलती है। चाहे कमर का दर्द हो या घुटनों अथवा ऐडी का, मेथी दाना सब जगह कार्यकारी है। मेथी के संबंध में कुछ तथ्य इस प्रकार हैं—

01. कमजोर अंगों को शक्तिशाली बनाने, शरीर के दर्द वाले भाग की वेदना कम करने तथा जलन वाले भाग की जलन दूर करने में मेथी का बाह्य प्रयोग चमत्कारी प्रभावों वाला सिद्ध हो रहा है।
02. मेथी की हल्की सी मालिश छाती पर करने से फेफड़े मजबूत बनते हैं। कफ, खांसी, दमा में आराम मिलता है। नाभि और उसके आसपास के क्षेत्र में मेथीदाना लगाने से गैस में आराम मिलता है।
03. कई रोगों में मेथी की पत्तियां कारगर हैं तो कइयों में मेथी दाना का प्रयोग। मेथी औषधि का काम करती है। इसके सेवन से भी लाभ होता है तो बाह्य प्रयोग से भी बेहद लाभ होता है।
04. मेथी से पाचन तन्त्र सुधरता है, भूख अच्छी लगती है, आन्तरिक शोधन होता है, पेट एवं आंतों की सूजन ठीक होती है।
05. मेथी का सिर पर लेप करने से बालों का झड़ना रुक जाता है। बाल अपने प्राकृतिक रंग में और मुलायम बने रहते हैं।
06. मधुमेह के रोग में मेथी बहुत लाभप्रद है। मधुमेह के रोगियों के पेंक्रियाज पर मेथीदाना लगाने से पेंक्रियाज अधिक इंसुलिन बनाने लगता है।
07. गुर्दे के रोगियों के गुर्दे वाले स्थान पर मेथी लगाने से गुर्दों की कार्यप्रणाली सुधरने लगती है।

मेथी दाना सचित्त होता है। इसे सेककर अचित्त किया जा सकता है। अचित्त दाना मेथी से साधु-साध्वी भी लाभ उठा सकते हैं।

—चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर (राज.) फोन नं. 621454

(क्रमशः5)

भगवान महावीर : 101 तथ्य

श्री राजेश जैन 'देवकर'

59. बालवय में विरक्त हुये एवंता ने भ. महावीर से दीक्षा ली। दीक्षा पूर्व उन्होंने माता–पिता से संवाद में कहा था–"जिसे मैं नहीं जानता उसे जानता हूँ, जिसे जानता हूँ उसे नहीं जानता।" ऐसा गूढ संवाद सुन कर परिजनों ने समझ लिया था कि इसको अध्यात्म का गहरा रंग चढ़ गया है। यह मुमुक्षु आत्मा अब सांसारिक कर्म में फंसने वाली नहीं है। उन्होंने उसे दीक्षा की अनुमति दे दी। प्रभु वीर के समक्ष दीक्षित होकर उस बालक ने अपनी जीवन नैया पार लगा ली।
60. एकदा दृढ़धर्मी श्रमणोपासिका सुलसा की धर्मनिष्ठा की भ. महावीर ने प्रशंसा की, जिसे सुन कर अम्बड़ परिव्राजक ने वीर वाणी को परखने के लिये नकली तीर्थंकर महावीर और ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि का रूप बनाया, किन्तु सुलसा इस ढोंग से किंचित् भी विचलित नहीं हुई। अंततः तापस अंबड़ ने माया समेट कर श्राविका सुलसा से क्षमायाचना की और उनका गुणगान कर स्वस्थान चला गया।
61. जो गोशालक मुझे दीक्षा दे दो की विनति से प्रभु के पीछे–पीछे घूमता था वही धीरे–धीरे भ. महावीर को अपना कट्टर शत्रु समझने लगा, और जिन महावीर ने तापस के क्रोध से उसकी रक्षा की थी, उन्हीं पर उसने तेजोलब्धि (अग्निपिण्ड) का प्रहार किया।

    गोशालक स्वयं को आजीवक मत का तीर्थंकर कहता था जबकि वह जिनापलापी था, किन्तु जीवन के अंतिम समय में उसे भान हुआ और उसने बहुत पश्चात्ताप किया और सद्गति प्राप्त की।,
62. कालसौकरिक कसाई के पुत्र सुलस ने पिता के क्रूर कार्यों की भयंकर परिणति देखकर न सिर्फ पितृ व्यवसाय, अपितु अन्याय और अनीति का भी त्याग कर भ. महावीर के समक्ष श्रावक धर्म को स्वीकार कर लिया। आगे चलकर वह पुनिया श्रावक के रूप में प्रसिद्ध हुआ। जिसकी सामायिक साधना की प्रशंसा करते हुये भ. महावीर ने उसे अतुलनीय और अमोल बताया था।
63. भ. महावीर का जामाता जमाली भी महावीर के पास 500 लोगों के साथ दीक्षित हुआ था। जमाली हालांकि निर्मल चारित्र पाल रहा था, किन्तु प्रभु की अवज्ञा कर स्वतंत्र विचरण करने लगा था। उसके उज्ज्वल संयम की प्रशंसा करते हुए शास्त्रों में उल्लेख है कि अपनी साधना की निर्मलता से वह मुक्ति पा सकता था, किन्तु संघ नायक के विरोध एवं मिथ्याप्ररूपण से हाथ में आये अमोल रत्न को उसने खो दिया। उसके साथ प्रियदर्शना भी दीक्षित हुई थी, वह भी पिता का संघ छोड़ पति के पथ में चल पड़ी थी। किन्तु

तत्त्वज्ञ दृढ़जिनधर्मी ढंक श्रावक द्वारा प्रसंगानुसार समझाने पर वह पुनः विपथ से जिनपथ में सुस्थिर हुई।

64. आनन्दश्रावक के ज्ञान पर शंकाशील गौतम गणधर को भ. महावीर ने बताया कि आनन्द सत्य है, ज्ञान के तथ्यों को वह जानता है, अतः आलोचना (पापशुद्धि) का पात्र आनन्द नहीं, गौतम! तुम हो। महावीर की प्रेरणा से विनयमूर्ति गणधरगौतम ने श्रावक आनन्द से क्षमायाचना की। साधु द्वारा गृहस्थ से क्षमायाचना का यह उदाहरण सत्य और आत्मदोषदर्शन, ज्ञान और गुण की उत्तम भावना पर आधारित है।

65. गौतम और महावीर का संवाद जिज्ञासाओं का सुन्दर समाधान ही नहीं तत्त्व दर्शन का विशाल सागर भी है। जीवन व्यवहार एवं संसार-व्यवस्था पर चिन्तन के लिए उनके प्रश्नोत्तर आज भी सबका मार्गदर्शन करते हैं। इन्द्रभूति की अशेष जिज्ञासाओं का सार्थक समाधान कर महावीर ने अपनी ऋतंभरा प्रज्ञा का दिव्यावदान किया। दोनों का साथ दो सहयात्रियों का ही साथ नहीं था, अपितु दो महासंस्कृतियों और दो विचारधाराओं का भी संगम था।

66. गौतम की पृच्छा पर महावीर ने छठे आरे (घोर कलियुग) का वर्णन करते हुये बताया कि–"तब ज्ञान/चारित्र का क्षय हो जाएगा, मनुष्यों की आयु अल्प हो जाएगी, सुख सम्पत्ति भी नष्ट हो जायेगी, ग्राम श्मशान की भांति होंगे, मनुष्य निरा मांसाहारी होगा और साक्षात् नारकीय दुःखों को भोगेगा।"

67. एकदा विनयमूर्ति गौतम स्वामी ने भ. महावीर से प्रश्न किया– "भन्ते! समुद्र में अथाह जलराशि विद्यमान है फिर क्यों वह अधःस्थित वृत्ताकार जम्बूद्वीप को डुबो नहीं पाता। वह अपनी जल की उत्ताल एवं चंचल तरंगों को क्यों नहीं बाहर बिखेरता।" "हे आयुष्मन् गौतम! ऐसा प्रयोग न अतीत में हुआ है और न वर्तमान और आगत में होगा। क्योंकि लाखों योजन लंबे चौड़े जम्बूद्वीप में अरिहन्त, लब्धिधारी मुनि, बहुश्रुत स्थविर मुनि, आचार्य, उपाध्याय, त्यागी–तपस्वी, ज्ञानी–ध्यानी, धर्मानुरागी, गुणग्राही, सदाचारी श्रमणोपासक और सद्गृहस्थ आदि निवास करते हैं। उनके जप–जप तेज प्रभाव से समुद्र कभी अपनी मर्यादा भंग नहीं करता इसलिए कि धर्म की जड़ें सुदृढ़ एवं गहरी होती हैं।"

68. गौतम– "भंते! आपने हर क्षण और हर क्रिया में पाप कर्मों का बंधन फरमाया है अतः जीव किस तरह उठे, बैठे, चले और कैसे सोये जिससे पाप कर्मों का बंध न हो?"

महावीर–"हे गौतम! जीव यतना (विवेक) से चले, उठे, बैठे और सोये तो पाप कर्मों का बंध नहीं होगा। विवेकयुक्त आचरण ही वास्तव में संयम है।"

–श्री देव आनन्द जैन गुरुकुल, वर्द्धमान नगर, राजनांदगांव(म.प्र.)

लड़ाई मजहब के नाम पर

सुश्री शर्मिला जैन गोलेछा

'धर्म' और 'मजहब' के नाम पर हम आज से नहीं, बरसों से लड़ रहे हैं। इसलिए अब यह किसी तरह के लेख या रचना के लिए ताजा विषय भी नहीं रह गया है। सही है, पर फिर भी इसे मैं और आप रोज करीब से महसूस करते हैं और हर दंगे के बाद सड़कों पर बिखरा खून इस समस्या की जड़ों के हरा–भरा और ताजा रहने का आभास स्वयं ही करा देता है।

समाज नाम की अमूर्त संस्था हमने ही बनाई, अपने ही हित के लिए। फिर इसमें अलग–अलग धर्म, अलग–अलग सम्प्रदाय सब हमने ही बांटें अपने ही हित और स्वार्थ के लिए। इनका होना आवश्यक भी है और उचित भी। एक आधार की तरह भूमिका निभाने वाले भिन्न–भिन्न धर्म या सम्प्रदायों के द्वारा एक पहचान, एक विचारधारा कुछ मानदंड विकसित होते हैं जिनके आधार पर जीवन शैली आकार लेती है।

समाज और राष्ट्र का हर वर्ग अपनी-अपनी श्रद्धा और आस्था से किसी आराध्य की साकार या निराकार कल्पना करता है और सर्वस्व अर्पण करता है। इसमें भी कहीं कोई बुराई नहीं है।

भगवान और ईश्वर के नाम पर ही अनेक धर्म या मजहब अस्तित्व में आये और यह लिखने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हर धर्म ने जीवन को एक दृष्टिकोण दिया, एक–दूसरे के लिए जीने की सीख दी, एक लक्ष्य दिया। जगत के और प्राणी मात्र के कल्याण का। रास्ता दिया आगे बढ़ने का, किन्तु परिवर्तन का युग हर दिशा में भिन्नता/विकृति लाने का प्रयास करता हुआ मूलभूत सत्य को विस्मृत ही कर चुका है। एक बार किसी वक्ता से सुना था "सभी धर्मों ने प्रेम, एकता, दया, करुणा, मैत्री और सहिष्णुता के सर्वमान्य सिद्धांत दिये हैं।"

But as a rule of mathematics common factors are cancelled.

इसीलिए स्नेह और सहानुभूति जैसे सर्वमान्य सिद्धान्तों के स्थान पर शेष रह गया मात्र कर्म कांड, आपसी द्वेष और व्यवहार से कहीं आगे जाकर वैचारिक विषमता। इसी के चलते हमने परमात्मा की सत्ता के भी हिस्से कर दिए। हमारी आराधना के तरीकों में भिन्नता होना कतई बुरा नहीं था, परन्तु इसी धर्म और मजहब की आड़ में एक आदमी दूसरे आदमी के रक्त का पिपासु बन जाये, यह तो कभी नहीं चाहा था।

कुरान हो या गीता, बाइबिल हो या गुरु ग्रन्थ साहब, संतों के प्रवचन हों या मीरा के भजन, अजान की आवाज हो या मंदिर में भक्ति की झणकार। लड़ना, हिंसा करना, आपस में वैर भाव रखना तो कोई नहीं सिखाता। फिर समाज में हम जो आपस में लड़ रहे हैं, बिना कल की सोचे, उसका क्या औचित्य है? एक रचनाकार ने लिखा है– **"मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।"**

आपसी समभाव की सोच ही बदल जायेगी, ऐसा तो कभी नहीं चाहा था।

लगातार चलता शीत युद्ध और आज उससे कहीं बहुत आगे बढ़ कर धड़कती आपसी द्वन्द की भाषा। कभी मन में आता था–

"नफरत में जहां सारा, जलता है जला करे,
यहां तो सर्व धर्म, समभाव के दिए हैं।
मंदिर मस्जिद की दीवारों से दूर
हम सदियों के साथ जिए हैं।"

आज लगता है कितनी गलत सोच थी। अच्छाई–बुराई न मैं जानती हूं न जान कर कुछ कर ही सकती हूं, पर एक बात है कि यूं धर्म और मजहब की आड़ लेकर खून बहाना क्या सही ह?, इससे तो हम अधार्मिक ही होते तो क्या बुरा था?

आज छोटे–बड़े रूप में भारत एवं विश्व के हर हिस्से में यह आग जल रही है। हर नागरिक की पहली जरूरत होती है दो जून की रोटी और जब कोई दंगा और फसाद होता है तो उसमें झुलसता है सारा समाज और तबाह होता है वो निचला तबका, जिसे अभी का तो पता है पर शाम को रोटी मिलेगी या नहीं इसका कोई भरोसा नहीं है। किन्तु जो लकड़ियों को तीली देते हैं ओर आग को हवा देते हैं, उस आंच में वे अपने हाथ तापते हैं, परन्तु उनके लिए किसी क... दना कोई मायने नहीं रखती।

मेरा लिखना और सवाल पूछना भी ऐसे लोगों की आँख में चुभ सकता है, पर आसपास जो होता है उससे अंतस् में कुछ सवाल उठने लगे है। आतंक और खौफ के साये में पलते भविष्य के चिह्न बुरे नजर आने लगे हैं। मेरी ही तरह आगे आने वाली नई नस्ल यह सब देखकर एक बार फिर सोचेगी, इससे तो हम अधार्मिक होते तो क्या बुरा था?

–4 शिवविला, नया बास, ब्यावर (राज.)

भ्रूण हत्या

श्री राजेन्द्र सिंघवी 'बंटू'

जिस देश की नारियाँ प्रसव पीड़ित कुत्तियों को भी घी का हलुआ बना कर खिलाती थी उसी देश की स्त्रियाँ गर्भपात केन्द्र (एबोर्शन सेन्टर) में जाकर अपने ही बच्चों को पेट में मरवा कर, निर्दयता का प्रदर्शन कर ढीठ बनी हुई हैं।

जिन्दा भेड़–बकरों को काटने वाले देवनार कत्लखाने से भी भयंकर भ्रूणहत्या का यह कत्लखाना यानी गर्भपात केन्द्र हर शहर में खुल चुका है। भरे बाजार में इसके बोर्ड लगे रहते हैं। ट्रेन और बसों में इसके विज्ञापन लगे रहते हैं।

प्रतिवर्ष इस कत्लखाने में 57 लाख बालकों की क्रूर हत्या कर दी जाती है। बालक के शरीर के टुकड़े–टुकड़े करके गटर में बहा दिये जाते हैं। हे कोई माई का लाल? जो अपना सर ऊँचा कर इस हत्या को हत्या कह सके।

धर्मशास्त्रों ने पंचेन्द्रिय वध को नरकगति का कारण कहा है। गर्भ-हत्या नरकगति का पासपोर्ट है। पासपोर्ट लीजिये और नरक के द्वार आपके लिये खुले हैं। **–सिद्धार्थ युवक मण्डल, अहिंसा भवन, शास्त्रीनगर, भीलवाड़ा (राज.)**

Let us know Abcd...z with religious meaning

Shweta Kankaria

A	is	for	**Ahimsa** (non-voilence)
B	is	for	**Brahamacharya** (Chastity)
C	is	for	**Chaturmaasa** (Staying of monks & nuns in one place for 4 months)
D	is	for	**Daan** (Charity)
E	is	for	**Evening Prayer** (Devsiya Pratikraman)
F	is	for	**Faith** (Tust on religious belief)
G	is	for	**Gurudev** (One who showed the truth path)
H	is	for	**Humility** (Vinaya)
I	is	for	**Immortal** (Siddha)
J	is	for	**Jeeva Daya** (Compassion)
K	is	for	**Karuna** (Compassion)
L	is	for	**Lord Mahaveer** (24th Teerthankara)
M	is	for	**Moksha** (Attained liberation)
N	is	for	**Namokar Mantra** (A short prayer to remember the qualities of great souls)
O	is	for	**Omniscient God** (Arihant & Siddha)
P	is	for	**Paryushan** (Most important festival of Jaina)
Q	is	for	**Queen Trishla** (Mother of Lord Mahaveera)
R	is	for	**Rosary** (Maala used for chanting god's name)
S	is	for	**Samayik** (48 minutes ritual that asks for getrid of sins)
T	is	for	**Tapa** (Austerity)
U	is	for	**Upashraya** (Place where Sadhu & Sadhvis stay and shravakas do their religious activity.)
V	is	for	**Vandana** (Bowing down)
W	is	for	**Worship** (Pray)
X	is	for	**Xylopyrography** (The art of engraving religious features on wood)
Y	is	for	**Yati Dharm** (10 types of Dharms)
Z	is	for	**Zalar** (Instrument used in temple)

-Kankaria Building, Jodhpur (Raj.)

उत्तराध्ययनसूत्र-चौंतीसवाँ अध्ययन

प्रो. चाँदमल कर्णावट

• 'अणगार मार्गगति' नामक इस अध्ययन की 21 गाथाओं में तीर्थंकर भगवान महावीर ने अणगार मार्ग में गति–प्रगति हेतु नवविध कार्य का विधान किया है। अध्ययन के अन्त में बताया गया है कि इन नौविध आचरणों का पालन करके अणगार अवश्य ही मुक्ति का अधिकारी बनता है।

नवविध आचरण निम्न प्रकार बताया गया है–

1. **सर्वसंग का परित्याग**– अध्ययन की गाथा 1 में अणगार मार्ग और उसके आचरण का फल निर्देश करते हुए गाथा 2 में बताया गया है कि प्रव्रज्या स्वीकार करने के पश्चात् मुनि घर-परिवार के प्रति संग या आसक्ति का स्वरूप भलीभांति जानकर उसका त्याग करे। परिजनों के साथ आसक्ति कर्मबन्ध का मूल है। इससे जन्म-मरण की वृद्धि होकर मोक्ष की दूरियाँ बढ़ती जाती हैं।

2. **पापास्रवों का त्याग**– संयमी जीवन की सुरक्षार्थ एवं उसमें गति-प्रगति हेतु पापास्रवों का त्याग करना अनिवार्य है। त्यागने योग्य पापास्रव हैं–हिंसा, असत्य, चोरी, कुशील एवं परिग्रह। परिग्रह को यहाँ अप्राप्त की कामना एवं प्राप्त में लोभ रूप में परिभाषित किया गया है। संयमी-जीवन के लिए ये पापास्रव घातक हैं एवं पाप कर्मों के संचय का कारण होने से मोक्षमार्ग में बाधक हैं। अतः मुनि पापास्रवों का सर्वथा त्याग करे।

3. **वासस्थान का विवेक**– अध्ययन की गाथा 4 से 7 तक निर्देश किया गया है कि मुनि ठहरने के उपयुक्त अनुपयुक्त स्थान का विवेक करे। जो स्थान मन को लुभाने वाला हो, पुष्प, धूप, इत्रादि से सुगन्धित हो, सुंदर एवं पर्दों से सुसज्जित हो, उनमें और ऐसे ही अन्य स्थानों में ठहरने का मुनि विचा र भी न करे। ये स्थान कामरागादि के वर्द्धक एवं इन्द्रिय-निग्रह की दृष्टि से कठिन हैं। इनमें संयम की हानि संभव है। गाथा 6–7 में ठहरने योग्य स्थानों में श्मशान भूमि, सूने मकान, वृक्ष के तले अथवा गृहस्थ द्वारा अपने लिए निर्मित मकान हैं। ये ठहरने योग्य स्थान भी जीवोत्पत्ति, सचित्त जल, वनस्पति आदि से रहित होने के साथ प्राणियों को पीड़ाकारी न हों एवं स्त्री, नपुंसक आदि के आवागमन से रहित हों।

4. **गृहकर्म समारम्भ निषेध**– (गाथा 8–9) मुनि स्वयं उपाश्रयादि का निर्माण नहीं करे, न दूसरों से करवाए। वह गृहनिर्माण सूक्ष्म बादर जीवों की हिंसा का कारण हैं। संयमी मुनि गृहस्थ द्वारा निर्मित मकान में उनकी आज्ञा लेकर रहे।

5. **आहार पचन–पाचन का निषेध**–(गाथा 10–12) में निर्देश किया गया है कि उपाश्रयादि निर्माण की तरह मुनि स्वयं आहार पानी तैयार नहीं करे, न दूसरों से तैयार करावे। आहार के पचन–पाचन में अग्नि, पृथ्वी, पानी, काष्ठ आदि के जीवों तथा आश्रित जीवों की हिंसा अवश्यंभावी है। आहार पचन–पाचन में प्रयुक्त अग्नि

तो सर्वहारा शस्त्र है। अतः अग्नि जलाने का और पृथ्वी, पानी आदि के जीवों की रक्षार्थ मुनि के लिए आहार पचन–पाचन का सर्वथा निषेध किया गया है।

6. क्रय–विक्रय का निषेध एवं भिक्षाचर्या का विधान– क्रय–विक्रय महादोष का कारण है, अतः मुनि वस्तुओं के क्रय–विक्रय का त्याग करे। मुनि के लिए भिक्षावृत्ति ही उचित है। वह सूत्रविधि के अनुसार अनिन्दित कुलों से सामुदानिक (अनेक घरों से) थोड़े–थोड़े आहार की गवेषणा करे और लाभालाभ में संतुष्ट रहे।

7. स्वादवृत्ति का परिहार– रसनेन्द्रिय को वश में करने वाला मुनि अलोलुप और अनासक्त बनकर रसस्वाद में आसक्त नहीं हो। वह संयम यात्रा के निर्वाहार्थ आहार करे, रसस्वाद के लिए नहीं।

8. पूजा प्रतिष्ठा का निषेध–अणगार पूजा, प्रतिष्ठा, वन्दना, ऋद्धि सन्मान–सत्कार की मन से भी अभिलाषा नहीं करे। इनकी इच्छा करने वाला मुनि संयम में नहीं रहता। कामना या इच्छा परिग्रह है। अतः ऐसा करके मुनि अपरिग्रह महाव्रत से स्खलित हो सकता है।

9. चार मुख्य मार्गों का अनुसरण– आत्मार्थी अणगार को आयुपर्यन्त इन चार मार्गों में गति-प्रगति करनी चाहिए।

1. वह शुक्ल ध्यान में लीन रहे।
2. वह इहलौकिक/पारलौकिक वांछा रूप किसी प्रकार का निदान नहीं करे।
3. वह द्रव्य-भाव परिग्रह का त्याग कर अकिंचनवृत्ति धारण करे।
4. वह देह की ममता का त्याग कर अप्रतिबद्ध होकर विचरण करे।

नवविध आचरण की फलश्रुति

अध्ययन के अन्त में बताया गया है कि ऐसा आचरण करने वाला अणगार अंत में काल धर्म के उपस्थित होने पर संलेखना संथारापूर्वक शरीर का त्याग कर दुःख मुक्त होकर शाश्वत परिनिर्वाण को प्राप्त कर लेता है।

मुनि को पुनः पुनः नवविध आचरणों का विचार करना चाहिए और इनमें दृढ़ बनना चाहिए। इन पर दृढ़ रहकर वह अपने मुक्ति के लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। सभी साधकों के लिए ये नवविध आचरण चिन्तनीय एवं आचरणीय हैं।

–35, अहिंसापुरी, उदयपुर (राज.)

प्रतीक्षा न करें

कु. मधु नाहर

धार्मिक होने के लिए अंतिम दिन की प्रतीक्षा न करें,
जब शरीर में सामर्थ्य हो, इन्द्रियाँ परिपूर्ण हो,
और मन ऊर्जा से भरा हो तब धर्म को साधें,
क्योंकि धर्म उनकी संपदा है, **जो चित्त से युवा हैं।**

–चांगोटोला, नागरवाड़ा, जिला–बालाघाट (म.प्र.)

महत्ता की कसौटी

सुश्री प्रज्ञा मोदी

एक संन्यासी काले वस्त्र पहनकर किसी सेठ के घर पहुँचा। सेठ ने पूछा– आपने काले कपड़े क्यों पहने? संन्यासी ने उत्तर दिया– मेरे मित्रों की मृत्यु हो गई। सेठ ने पूछा– आपके कौन से मित्र हैं? संन्यासी बोला– 'क्रोध, मान, माया, लोभ के साथ मेरी घनिष्ठ मैत्री थी। उनका वियोग हो गया।' सेठ ने सोचा कि यह मात्र गप्प हांक रहा है या इस बात में कोई तथ्य है, इसका परीक्षण करना चाहिए।

सेठ ने संन्यासी को दुत्कार देते हुए कहा– ''पता नहीं ये भीखमंगे कहां से आ जाते हैं, चले जाओ यहां से।'' संन्यासी सेठ की डांट सुन कर घर से बाहर चला गया। वह बाहर निकला ही था कि सेठ ने उसे संबोधित करके कहा– 'बाबा! ओ बाबा! एक बात सुनो।' सेठ के संबोधन से खिंचा हुआ संन्यासी पुनः उसके सामने आकर खड़ा हो गया। सेठ ने संन्यासी पर एक भरपूर निगाह डाली और कुछ तेज स्वर से बोला– 'शर्म नहीं आती तुमको अभी घर से निकाला था और अभी फिर घुस आया। सुबह सुबह क्यों मूड बिगाड़ रहे हो। जाओ यहां से।' संन्यासी शान्त भाव से जिस दिशा से आया था, उसी दिशा में जाने लगा। सेठ ने फिर आवाज देकर उसको बुलाया और तिरस्कृत करके निकाल दिया।

कई बार बुलाने और निकालने के बाद सेठ ने उसको एक बार फिर बुलाया। ज्यों ही वह आकर खड़ा हुआ, सेठ ने नौकर को आदेश दिया। यह आदमी बड़ा ढीठ है, मानता ही नहीं है। इसे धक्का देकर निकालो यहां से। नौकर ने आदेश का पालन किया। उसके धक्के से संन्यासी गिरता–गिरता मुश्किल से बचा। वह बिना किसी प्रतिक्रिया के वहां से बाहर चला गया । बार–बार अपमान और प्रताड़ना की पूरी प्रक्रिया में संन्यासी को एक क्षण भी क्रोध नहीं आया।

सेठ संन्यासी की क्षमाशीलता को देखकर अभिभूत हो गया। वह स्वयं दौड़कर घर से बाहर गया और संन्यासी के चरणों में गिर पड़ा। कहने लगा– मुझे क्षमा करें। मैंने आपकी परीक्षा ली थी कि वास्तव में आपने क्रोध, मान आदि समाप्त कर दिये हैं या ऐसे ही कह रहे हैं। आप इस परीक्षा में शतप्रतिशत सफल रहे। धन्य है आपकी सहिष्णुता को। आपने मेरा घर पवित्र कर दिया।

सेठ की बात सुन संन्यासी बोला–'सेठ साहब आप भी कैसी बात कर रहे हैं? मैंने कोई बड़ा काम नहीं किया। यह काम तो एक कुत्ता भी करता है। उसे दुर दुर कर बीस बार निकालो, वह निकल जायेगा और तू तू शब्द सुनते ही पूंछ हिलाता हुआ लौट आयेगा। मैं एक कुत्ते से गया बीता तो नहीं हूँ, जो आपके दुत्कारने पर न जाता और बुलाने पर न आता।'

सेठ को संन्यासी की महत्ता का एक और प्रमाण मिल गया। उसने क्रोध को ही नहीं अभिमान को भी पूरी तरह जीत लिया था। क्रोध और मान को जीतने वाला व्यक्ति ही हर स्थिति में संतुलित रह सकता है।

आत्म-दर्शन में सबसे बड़ी बाधा यह चौकड़ी है– क्रोध, मान, माया और लोभ। जब तक ये चारों क्षीण नहीं होगें, मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी।

– सी 26, देवनगर, जयपुर(राज.)

भ. महावीर के 2600वें जन्म-कल्याणक के उपलक्ष्य में

छब्बीस सूत्री नियम-पत्र

01. सप्त कुव्यसनों का पूर्ण त्याग करें।
02. गर्भपात न कभी करना, न करवाना।
03. रात्रि भोजन का पूर्ण या आंशिक त्याग करें।
04. आतिशबाजी नहीं करने का नियम लें।
05. सामूहिक भोज में जमीकन्द और तवा सब्जी का निषेध रखना।
06. पूर्णतः या आंशिक रूप से शील पालन (ब्रह्मचर्य व्रत) का नियम करें।
07. संबंध बनाने में सौदेबाजी नहीं करना, दहेज की मांग नहीं करना।
08. किसी भी, कैसी भी परिस्थिति में आत्महत्या नहीं करना।
09. प्रतिदिन नवकार महामंत्र का स्मरण करना, एक माला जपना।
10. प्रतिदिन माता–पिता तथा बड़ों को प्रणाम करना।
11. प्रतिदिन निर्धारित समय के लिए या निर्धारित पृष्ठों का स्वाध्याय करना।
12. प्रतिदिन एक सामायिक करना या माह में निर्धारित संख्या में सामायिकें करना। सामायिक याद न हो तो उसे याद करना।
13. कम से कम पक्खी का (पाक्षिक) प्रतिक्रमण या चौमासी प्रतिक्रमण करने का नियम लें। प्रतिक्रमण याद न हो तो उसे याद करें।
14. आय का निश्चित प्रतिशत सत्कार्यों के लिए दान करने का नियम रखें।
15. निकटवर्ती धर्मस्थल (स्थानक, उपाश्रय) में साधु-साध्वी विराजमान हों तो समय के अनुसार दर्शन के लिए तथा प्रवचन सभा में जाना।
16. धार्मिक सभा समारोह में उपस्थिति देना; समय दान, श्रम दान करना।
17. जूठन कभी नहीं छोड़ना।
18. नवकारसी, पोरसी, द्रव्य-मर्यादा आदि नियम लेना। मास या वर्ष में निर्धारित संख्या में आयम्बिल, उपवास या तप-त्याग का नियम रखना।
19. रेशम के वस्त्र, चमड़े की वस्तुएँ, हाथीदांत व लाख और रोओं से बनी वस्तुएँ नहीं खरीदें, नहीं वापरें। 'पशु उत्पाद मुक्त' साबुन, टूथपेस्ट, शेम्पू, सेंट व सौन्दर्य प्रसाधन की वस्तुएँ ही उपयोग करें।
20. बाजार की आइस्क्रीम, फ्रूटेला, मिण्टोस, रौले, मस्टिकेबिल्स, बेकरी उत्पाद आदि जांच पड़ताल के बाद ही स्वीकार करें।
21. धूम्रपान, तम्बाखू, गुटका आदि को छोड़ दे।
22. जिस समय क्रोध आ जाए, उस समय मौन रहने का नियम।
23. कोई भी ऐसा कार्य वचन-प्रयोग या व्यवहार नहीं करना, जिससे परिवार, संघ या समाज में तनाव, कलह या विघटन हो।
24. अपने भाई, परिजन और स्वधर्मी बन्धु की मदद के लिए तत्पर रहना। कष्ट में पड़े किसी भी मानव/प्राणी की यथासंभव सहायता करना।
25. परिजनों, स्वधर्मी बन्धुओं के विरूद्ध अदालत में नहीं जाना।
26. मित्रों, परिचितों और सम्पर्क में आने वालों को सकारात्मक तरीकों से सत्प्रेरणाएँ देना, गलत आदतें छुड़वाना।

—श्री दिलीप धींग 'जैन' बम्बोरा

सन् 2002 में जिनवाणी का 'जैनागम विशेषांक' प्रकाशित होगा

जिनवाणी के प्रबुद्ध पाठकों को नूतन वर्ष की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए निवेदन है कि 'जिनवाणी' पत्रिका अपने विशेषांकों की परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए इस बार भगवान महावीर के 2600वें जन्म–कल्याणक वर्ष के शुभावसर पर 'जैनागम विशेषांक' के रूप में उपलब्ध हो सकेगी।

जैन समाज के अनेक प्रबुद्धजन भी जैनागमों की विषयवस्तु से अनभिज्ञ हैं। कईयों को तो आगमों के नाम भी ज्ञात नहीं हैं। इस विशेषांक के माध्यम से यह प्रयत्न किया जा रहा है कि पाठकों को जैनागमों के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी मिल सके। इस विशेषांक में प्रबुद्ध लेखकों से लेख भी आमन्त्रित हैं। प्रकाशन के पश्चात् लेख का मानदेय भी प्रेषित किया जाएगा। जिनवाणी का यह विशेषांक जनवरी–फरवरी–मार्च 2002 के संयुक्तांक के रूप में प्रकाशित होगा। अतः लेख 31 दिसम्बर 2001 तक प्राप्त हो जाने चाहिए। इस विशेषांक में प्रस्तावित लेखसूची इस प्रकार है–

1.आगम की अनादि अनन्तता / प्राचीनता
2.सूत्रागम, अर्थागम और तदुभयागम
3.आगम–वाचनाएँ
4.आगम साहित्य का महत्त्व
5.आगमों की भाषा
6.श्वेताम्बर एवं दिगम्बर आगम
7.स्थानकवासियों द्वारा मान्य आगम
8.आगमों के प्रमुख टीकाकार
9.आगमों के विभिन्न प्रकाशन / सम्पादन
10.आधुनिक युग में आगम–अध्ययन
11.आगमों के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद
12.आगम प्रकाशक संस्थाएँ
13.आगम शब्दावली
14.अनुयोग वर्गीकरण
15.अंग आगम, उपांग आगम
16.आचारांग सूत्र एवं उसका सन्देश
17.सूत्रकृतांग सूत्र की विषयवस्तु
18.स्थानांग सूत्र
19.समवायांग सूत्र
20.भगवती सूत्र
21.ज्ञाताधर्मकथा सूत्र
22.उपासकदशा सूत्र
23.अन्तकृत्दशा सूत्र
24.अनुत्तरौपपातिक सूत्र
25.प्रश्नव्याकरण सूत्र
26.विपाकसूत्र सूत्र
27.औपपातिक सूत्र
28.राजप्रश्नीय सूत्र
29.जीवाजीवाभिगम सूत्र
30.प्रज्ञापना सूत्र
31.जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र
32.सूर्यप्रज्ञप्ति–चन्द्रप्रज्ञप्ति
33.निरयावलिया–कल्पावतंसिका
34.पुष्पचूला–वृष्णिदशा
35.उत्तराध्ययन सूत्र
36.दशवैकालिक सूत्र
37.नन्दीसूत्र
38.अनुयोगद्वार सूत्र
39. दशाश्रुतस्कन्ध
40. व्यवहार सूत्र
41. बृहत्कल्पसूत्र
42. निशीथ सूत्र
43.आवश्यक सूत्र
44.प्रकीर्णक सूत्र

45.दिगम्बर आगमों का परिचय–षट्खण्डागम, कसायपाहुड, परमागम
46. भगवती आराधना
47. मूलाचार
48. निर्युक्ति साहित्य
49. भाष्य
50. टीकाएँ
51. चूर्णि साहित्य
52. जैनागम और उपनिषद्
53.आगमों के कतिपय काव्यानुवाद
54.आगमों की दृष्टि
55.जैनागम और पंचसमवाय
56.जैनागमों में स्वास्थ्य
57.आधुनिक समस्याएँ और जैनागम
58.जैनागमों में पर्यावरण
59.जैनागमों में अहिंसा
60.जैनागमों में शिक्षा का स्वरूप
61.आत्मिक शान्ति में जैनागमों की भूमिका
62.स्वस्थ समाज के निर्माण में जैनागमों की भूमिका
63. आगमों में ध्यानविषयक सूत्र
64. जैनागमों का प्रमुख प्रतिपाद्य : वीतरागता

विशेष निवेदन

जिनवाणी के विशेषांकों में पहले अर्थ सहयोग हेतु विज्ञापन प्रकाशित किए जाते थे। इस बार इस महत्त्वपूर्ण विशेषांक के प्रकाशन में कोई भी व्यक्ति उन्मुक्तभाव से सहयोग कर सकता है। अर्थसहयोगी के नाम का प्रकाशन इस विशेषांक में किया जाएगा। अर्थसहयोग की राशि कम से कम 500/– रुपये होनी चाहिए। अर्थ सहयोग की राशि 'जिनवाणी, जयपुर' के नाम से बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा भेजते समय यह उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए कि यह राशि जिनवाणी के 'जैनागम–विशेषांक के लिए प्रेषित की जा रही है। आशा है आप सबका सहयोग प्राप्त हेगा।–**प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर–302003 फोन नं. 565997**

आवश्यक सूचना

भगवान महावीर के 2600वें जन्म कल्याणक वर्ष में प्रकाशित किए जा रहे जिनवाणी के 'जैनागम विशेषांक' के कारण जनवरी एवं फरवरी 2002 के स्वतन्त्र अंक प्रकाशित नहीं हो सकेंगे। 'जैनागम–विशेषांक' जनवरी–फरवरी–मार्च 2002 का संयुक्तांक होगा। आशा है पाठक इस व्यवस्था में अपना पूर्ण सहयोग करेंगे एवं असुविधा के लिए क्षमा करेंगे।

–सम्पादक

समीक्षा हेतु 2 प्रतियाँ आवश्यक हैं

साहित्य-समीक्षा

डॉ. धर्मचन्द जैन

***विश्वन्द्य महावीर**- श्री सुभद्र मुनि, **सम्पादक**- श्री अमित मुनि **प्रकाशक**-मुनि मायाराम सम्बोधि प्रकाशन, के.डी. ब्लॉक, पीतमपुरा, दिल्ली-110088 **पृष्ठ** 410+16, **मूल्य**- पचास रुपये, सन् 2001 ।*

भगवान महावीर के 2600वें जन्म-कल्याणक वर्ष में प्रकाशित यह पुस्तक स्वागतयोग्य है। तीर्थंकर महावीर के सम्पूर्ण जीवन पर प्रकाश डालने वाली श्री सुभद्रमुनि की इस पुस्तक में कुल छह खण्ड हैं। प्रथम खण्ड का नाम 'बोधिबीज' है, जिसमें तीर्थंकर महावीर के 26 पूर्वभवों का वर्णन है। द्वितीय खण्ड 'महाप्रकाश का उदय' में महारानी त्रिशला के 14 स्वप्नों, जन्म, बाल्यकाल, वीरता, वर्षीदान, अभिनिष्क्रमण आदि का निरूपण है। 'साधना और सिद्धि' नामक तृतीय खण्ड में उनके साधना-काल की घटनाओं एवं कैवल्य प्राप्ति को प्रस्तुत किया गया है। 'घट-घट दीप जले' नामक चतुर्थखण्ड में केवलज्ञान प्राप्त तीर्थंकर महावीर के द्वारा किए गए पद-भ्रमण, उद्बोधन, चर्चा, वर्षावास आदि का 41 सोपानों में वर्णन है। पंचम खण्ड पूर्णत्व पावापुरी में उनके निर्वाण की घटना से संबद्ध है। षष्ठ खण्ड परिशिष्ट के रूप में है, जिसमें भगवान महावीर की वाणी, वीर स्तुति, महावीराष्टक स्तोत्र, जन्म कुण्डली आदि का संग्रह है। पुस्तक में जमालि, प्रियदर्शना आदि के द्वारा प्रवज्या-ग्रहण, श्रमणोपासिका जयन्ती की जिज्ञासा, गाथापति आनन्द द्वारा व्रत-ग्रहण, नंदन मणिकार द्वारा त्याग आदि का भी वर्णन उपलब्ध है।

लेखक ने भगवान महावीर पर उपलब्ध अन्य साहित्य का उपयोग करके अपनी पूर्व लघु पुस्तिका को उसी नाम से वृहद् रूप प्रदान किया है। कई स्थानों पर चित्र भी संयोजित हैं।

पुस्तक का मुद्रण स्तरीय है। आकार की दृष्टि से मूल्य कम है।

***भ. मल्लीनाथ चरित्र**-मिलापचन्द डागा **पुस्तक प्राप्ति-सूत्र**- जीवदया मण्डल ट्रस्ट, -'डागा सदन' संघपुरा, टोंक (राज.) 304001 **पृष्ठ-40 मूल्य**-3 रूपये, सन् 2001*

19वें तीर्थंकर भगवान मल्लीनाथ के जीवन पर यह काव्यात्मक चरित चौपई आदि के रूप में गेय, रोचक एवं शिक्षाप्रद है। 274 पद्यों में रचित इस चरित की तर्ज है-एवंता मुनिवर नाव तिराई............। डागा जी की यह पुस्तक स्वाध्यायियों एवं सन्त-सतियों के लिए उपयोगी है। 'भ. मल्लीनाथ चारित्र' का यह द्वितीय संस्करण है, जो पहले से पूर्णतः भिन्न है। लेखक ने अपनी धर्मपत्नी की स्मृति में अर्थ सहयोग कर जीव दया मण्डल से छपवाया है।

समाज-दर्शन

यशस्वी चातुर्मास : एक नजर में

वि.सं. 2058 का पांच माह का चातुर्मास कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को चातुर्मासिक पक्खी प्रतिक्रमण के साथ सम्पन्न हुआ और मार्गशीर्ष कृष्णा प्रतिपदा तदनुसार 1 दिसम्बर 2001 को चातुर्मास स्थलों से विहार हो गया। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि संत-सतीवृन्द के धुलिया, पीपाड़शहर, जोधपुर, गोटन, किशनगढ़शहर, कजगांव, जयपुर, धनोप, मसूदा और सैंधवा के यशस्वी चातुर्मास की प्रमुख उपलब्धियाँ इस प्रकार रहीं-

धुलिया-महाराष्ट्र का सुप्रसिद्ध क्षेत्र धुलिया, जहां प्रतिवर्ष प्रायः विशिष्ट संत-मुनिराजों के चातुर्मास होते रहे हैं, इस वर्ष रत्नवंश के अष्टम पट्टधर आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गंभीर, प्रबल पुरुषार्थी परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 10 तथा विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 6 के चातुर्मास के सुयोग से स्थानकवासी परम्परा के अन्तर्गत शुद्ध साधना के स्वरूप की जानकारी के साथ, सामाजिक स्तर पर जैनत्व की पहिचान, व्रत-प्रत्याख्यानों में आबाल वृद्ध सबके उत्साह से जिनशासन की महती प्रभावना हुई जो आने वाले वर्षों में सदा स्मरणीय रहेगी।

जलगांव चातुर्मास के पश्चात् महाराष्ट्र के ग्रामीण एवं नगरीय अंचलों में विचरण विहार से सामायिक-स्वाध्याय धार्मिक पाठशालाओं के शुभारंभ, आयंबिल आराधना कार्यक्रम की क्रियान्विति, शीलव्रत के खंद एवं व्रती श्रावक बनने का क्रम प्रारम्भ हुआ, समूचे क्षेत्र में ज्ञान-क्रिया सम्पन्न संत-सतीवृन्द के प्रति जनभावना का सहज जुड़ाव हुआ और जिन गांवों में पहले इक्का-दुक्का व्यक्ति धर्मस्थान में सामायिक करने आता वहां गांव के अधिकांश भाई-बहिनों के आने से धर्मस्थान आबाद हुए और धर्माचरण के प्रति जनभावना प्रगाढ़ बनी, सकल जैन समाज आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि संत-सतीवृन्द की ज्ञान-क्रिया की सौरभ से एवं उनकी सतत और प्रभावी प्रेरणा से आकर्षित, प्रभावित हो क्षेत्र फरसने से लेकर चातुर्मास तक की पुरजोर विनति करने लगा।

नासिक में दक्षिण भारत के रायचूर, बैंगलोर, मद्रास की विनतियाँ चल रही थी वहीं मुम्बई, धुलिया जैसे क्षेत्र चातुर्मास की स्वीकृति की अभिलाषा से आचार्यप्रवर की सेवा में उपस्थित हुए। दिनांक 11 मार्च 2001 को आचार्यप्रवर ने धुलिया श्री संघ को चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की, आबाल वृद्ध सब में हर्ष छा गया। स्थानीय संघाध्यक्ष श्री उत्तमचन्द जी सांड, उपाध्यक्ष सर्व श्री नेमीचन्द जी सिंघवी, श्री सुवालाल जी बाफना, श्री कांतिलाल जी चोरड़िया, महामंत्री श्री दीपचन्द जी संचेती आदि प्रमुख पदाधिकारियों ने आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि

संत–सतीवृन्द के चातुर्मास परिप्रेक्ष्य में अन्यान्य परम्परा के श्रावकों से विचार–विमर्श कर निर्णय लिया कि धुलिया क्षेत्र की पुण्यवानी से इस युग के यशस्वी, मनस्वी, तपस्वी साधक शिरोमणि प्रतिपल स्मरणीय आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत–सतीवृन्द का चातुर्मास प्राप्त हुआ है, अन्यान्य परम्पराएँ अपने संत–सतीवृन्द की विनती नहीं रखे और प्राप्त सुयोग का अधिक से अधिक उपयोग किया जाय। हुआ भी ऐसा ही अन्य परम्परा के श्रावक–श्राविकाओं ने अपने संत–सतीवृन्द की विनती करने की बजाय सकल जैन समाज धुलिया ने आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि संत–सतीवृन्द के चातुर्मास का लाभ प्राप्त किया।

आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि संत–मुनिराज ग्रामानुग्राम ज्ञान-गंगा प्रवाहित करते हुए यथासमय धुलिया पधारे और चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश के साथ गली नं. 2, स्थित जैन स्थानक महावीर भवन श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया और पूरे पांच माह तक आबाल वृद्ध सभी गली नं. 2, स्थित महावीर भवन नित्य प्रति आने लगे। आचार्यप्रवर की प्रभावी प्रेरणा, उपाध्यायप्रवर की सद्शिक्षा, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा. के द्वारा विषय पर विशद प्रतिपादन से प्रवचनों की प्रभावना रही। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर के हृदयग्राही, सारगर्भित और अन्तर्मन में स्फुरणा जगाने वाले प्रेरक प्रवचनों से धार्मिक उन्नयन, नैतिक व चारित्रिक उत्थान एवं समाज सुधार के क्षेत्र में व्यापक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ जिसे धुलियावासी कभी भुला न सकेंगे।

धुलिया बड़ा क्षेत्र है।प्रतिवर्ष विशिष्ट संत–सतीवृन्द के चातुर्मास वहां होते रहे हैं, पर रत्नवंशीय परम्परा के आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि संत–सतीवृन्द का प्रथम चातुर्मास होने से वहां के श्रावक–श्राविकाओं ने संयमी साधकों का ज्ञान–क्रिया का सुन्दर रूप देखा, उनकी निस्पृहता देखी और शुद्ध धर्मसाधना का आनन्द लिया वह अवर्णनीय है। दया–संवर हो या बड़ी तपश्चर्याएँ, सुविधा की दृष्टि से पहले भले ही शाम तक या प्रतिक्रमण तक दया करके दया मान ली जाती रही हो,पर इस चातुर्मास में सात प्रहरीय दयाव्रत का आराधन हुआ। तपश्चर्या में संख्या का उतना महत्त्व नहीं, जितना भावना का। भावनापूर्वक तप साधना की आवश्यकता पर बल देने के कारण न बैण्ड–बाजे थे,न प्रभावना और न ही प्रीतिभोज। तप कर्म काटने की रामबाण औषधि है, इस तत्त्व को हृदयंगम कर धुलियावासियों ने चातुर्मास के अन्त तक उपवास–बेले–तेले–पांच–आठ और मासखमण की तपश्चर्या अनवरत चलाकर चातुर्मास को दीप्तिमान बनाए रखा।

आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर शीलव्रत के खंद करने की निरन्तर प्रेरणा करते हैं। आचार्यप्रवर की प्रेरणा से 76 दम्पतियों ने शीलव्रत के खंद किए जिसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कह सकते हैं। उनकी नामावली इस प्रकार है–

1. श्री सौभागचन्द जी नाहटा, जामनेर 2. श्री कांतिलाल जी चोरड़िया,तलेगांव

3. श्री मदनलाल जी चोरड़िया, तलेगांव 4. श्री शांतिलाल जी तालेड़ा, फत्तेपुर 5. श्री बाबूलाल जी संचेती, बड़ा अरटिया 6. श्री उत्तमचन्द जी तातेड़, वाकड़ी 7. श्री पन्नालाल जी चोरड़िया, वाकड़ी 8. श्री रंगलाल जी चोरड़िया, वाकड़ी 9. डॉ. पुखराज जी ओस्तवाल, वाकड़ी 10. श्री कांतिलाल जी कोटेचा, तोंडापुर 11. श्री शांतिलाल जी वेदमूथा, तोंडापुर 12. श्री मणिलाल जी संघवी, वरखेड़ी 13. श्री स्वरूपचन्द जी संखलेचा, वरखेड़ी 14. श्री भीकचन्द जी बाबेल, वरखेड़ी 15. श्री दीपचन्द जी बोथरा, पाचोरा 16. श्री विनोद कुमार जी संघवी, पाचोरा 17. श्री प्रेमचन्द जी संघवी, पाचोरा 18. श्री केशरीमल जी संघवी,(43 वर्ष) पाचोरा 19. श्री कनकमल जी धोका, पाचोरा 20. श्री रंगलाल जी संघवी, पाचोरा 21. श्री जवाहरलाल जी चोरड़िया, भड़गांव 22. श्री पुखराज जी चोरड़िया, भड़गांव 23. श्री सुवालाल जी चोरड़िया, वड़जी 24. श्री रमेशचन्द जी खिंवसरा, शिंदी 25. श्री राजमल जी कांकलिया, कजगांव 26. श्री नेमीचन्द जी टोडरवाल, वाघली 27. श्री पोपटलाल जी लुणावत, औरंगाबाद 28. श्री धनराज जी गांधी, सुकेना 29. श्री घोड़ीराम जी बोगापत, सुकेना 30. श्री सुरेश जी बाफना, नासिक 31. श्री बंशीलाल जी बाफना, येवला 32. श्री रेवदास जी जैन, वेजापुर 33. श्री अमरचन्द जी वेदमूथा, खंडाला, 34. श्री बाबूलाल जी संचेती, खंडाला 35. श्री रूपचन्द जी बाफना, खंडाला, 36. श्री नेमीचन्द जी बाफना, खंडाला 37. श्री पानमल जी मूथा, लासूर स्टेशन 38 श्री मांगीलाल जी कटारिया, औरंगाबाद 39. श्री शिवचंद जी सांखला, औरंगाबाद 40. श्री शांतिलाल जी देवड़ा, औरंगाबाद 41. श्री माणकलाल जी न्याती, औरंगाबाद 42. श्री सायरचन्द जी छाजेड़, औरंगाबाद, 43. श्री भागचन्द जी रूणवाल, औरंगाबाद 44. श्री फूलचन्द जी दुग्गड़, औरंगाबाद 45. श्री रमणलाल जी मुगदिया, औरंगाबाद 46. श्री फूलचन्द जी धारीवाल, औरंगाबाद 47. श्री उत्तमचन्द जी कर्णावट, लासूर स्टेशन 48. श्री सज्जनराज जी बोथरा, लासूर स्टेशन 49. श्री माणकचन्दजी चण्डालिया, लासूर स्टेशन 50. श्री वंकटस्वामी राजपूत, बाडगांव, 51. श्री रूपचन्दजी कांटेड़, खड़कीसीम, 52. श्री भाऊलाल जी बम्ब, बोरकुंड 53. श्री अन्नराज जी बम्ब, बोरकुंड 54. श्री भट्टलाल जी संखलेचा, बोरकुंड 55. श्री कांतिलाल जी खींवसरा, निमगुंल 56. श्री रतनसिंह जी राजपूत, निमगुल 57. श्री धर्मीचन्द जी चोरड़िया, धूले 58. श्री दूलीचन्द जी बाघमार, मद्रास 59. श्री शीतलराज जी सिंघवी, जोधपुर 60. श्री अमरचन्द जी लोढ़ा (हीरादेसर), जोधपुर 61. श्री मदनलाल जी पटवा, जोधपुर 62. श्री पदमचन्द जी बम्ब, बैंगलोर 63. श्री चम्पालाल जी लोढ़ा, मद्रास 64. श्री खेतमल जी लुणावत, जोधपुर 65. श्री अमरचन्द जी लुणावत, पांचला 66. श्री लालचन्द जी सुराणा, सेंधवा 67. श्री लालचन्द जी भटेवरा, धुलिया 68. श्री चांदमल जी खींवसरा, धुलिया 69. श्री कांतिलाल जी चोरड़िया, धुलिया 70. श्री शांतिलाल जी सुराणा, ब्यावर 71. श्री सोहनलाल जी बाघमार, मैसूर 72.

श्री सुगनचन्दजी डोसी, 73. श्री बस्तीमल जी संचेती, धुलिया 74. श्री लड्डूलाल जी जैन, चोरू 75. श्री सुमेरमल जी कांकरिया, भोपालगढ़ 76. श्री सुगनचन्द जी रूणवाल, धुलिया।

आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि सन्त–सतीवृन्द प्रवचन के माध्यम से एवं वार्ता के माध्यम से व्रत–प्रत्याख्यानों की प्रेरणा करते कहते हैं कि आप व्रती श्रावक बनें। व्रतों के अतिचार, आगार, नियम, शिक्षाओं के सम्यक् विवेचन के कारण कई व्रती श्रावक बने हैं। विगत दो वर्षों में 200 से अधिक व्रती श्रावक बनना अच्छी उपलब्धि है।

आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि संत–सतीवृन्द धर्मस्थान में आकर सामायिक–स्वाध्याय करने की प्रभावी प्रेरणा करते हैं। युवकों को साप्ताहिक सामूहिक सामायिक-साधना से जोड़कर उन्हें धर्म-साधना में आगे बढ़ाते हैं। आचार्य प्रवर की प्रेरणा से धुलिया में 100 के लगभग युवक धर्मस्थान में सामूहिक सामायिक करते हैं, यह बहुत बड़ी उपलब्धि है।

आचार्यप्रवर जहां भी पधारते हैं, समाज सुधार के लिए प्रभावी प्रेरणा करते हैं। आचार्यप्रवर की प्रेरणा से धुलिया में जलगांव की तरह सकल जैन समाज ने 2.9.2001 को सर्व सम्मति से समाज सुधार के नियम निर्धारित किए, वह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

आचार्यप्रवर बालक–बालिकाओं में संस्कार-निर्माण के प्रबल हिमायती हैं। इसलिए धुलिया में 18 नवम्बर से 21 नवम्बर तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन रखा गया जिसमें 350 बालक–बालिकाओं ने भाग लिया। संस्कार शिविर में सुशील बहुमण्डल जलगांव और धुलिया महिला संघ ने सेवाएं दी।

दिनांक 22 नवम्बर से 27 नवम्बर तक शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का सफल आयोजन धुलिया में रखा गया जिसमें 40 शिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

ज्ञान–क्रिया सम्पन्न संत–सतीवृन्द की सन्निधि प्राप्त हो, इस भावना से समीपवर्ती–सुदूरवर्ती क्षेत्रों की निरन्तर विनतियाँ चल रही हैं। नंदुरबार, निझर, नवसारी, सूरत, अहमदाबाद श्री संघ आचार्यप्रवर की सेवा में विनतियां रख रहे हैं तो दूसरी ओर नासिक, लासलगांव, इगतपुरी, छोटी मुम्बई क्षेत्रों के श्रीसंघ अपनी भावपूर्ण विनतियां रखते आ रहे हैं। अहमदनगर, सतारा, पूना जैसे श्रीसंघों के साथ न्यायडूंगरी, लासूर आदि श्रीसंघ आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर के श्रीचरणों में विनतियां रख रहे हैं। चेन्नई, बैंगलोर, मैसूर, रायचूर क्षेत्र अनेक बार विनतियाँ रख चुके हैं। राजस्थान एवं मध्य प्रदेश के अनेक ग्राम–नगरों के श्रीसंघ एवं श्रद्धालु भक्तों ने अपनी भावनाएँ आचार्यप्रवर,उपाध्यायप्रवर के श्रीचरणों में निवेदन की है। आचार्यप्रवर भक्तों की भावना जानते हैं और देखो, क्या फरसना बनती है कहकर मौन हो जाते हैं। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि संत–मुनिराजों की विहार दिशा कुछ समय बाद ज्ञात होगी, फिलहाल समीपवर्ती क्षेत्रों में विचरण विहार की संभावना है।

धुलिया वर्षावास संयमी साधकों के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य समाधि की दृष्टि से सफल रहा, वहीं संघ में परस्पर प्रेम–मैत्री, सहयोग की भावना के कारण आवास, भोजन, चाय–नाश्ते की सुन्दर व्यवस्था धुलिया चातुर्मास में आने वाले स्वधर्मी बन्धुओं को सदा याद रहेगी। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के मंत्री, धुलिया संघ के उपाध्यक्ष एवं संघहितैषी सुश्रावक श्री कांतिलाल जी चौधरी एवं उनके परिवारजनों के तन–मन–धन से समर्पित रहने का आदर्श कभी भुलाया नहीं जा सकेगा।

पीपाड़ शहर–जोधपुर जिलान्तर्गत पीपाड़ शहर जिसे गुरु हस्ती एवं गुरु हीरा की जन्म-स्थली होने का गौरव प्राप्त है, उस पावन–पुनीत पीपाड़ की धरा पर इस वर्ष तपस्वी श्री बसन्तमुनि जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. के चातुर्मास के सुयोग से ज्ञानाराधन–तपाराधन–धर्माराधन और परस्पर प्रेम–मैत्री–सहयोग की शुभ भावना में अपूर्व उल्लास रहा।

पीपाड़ के हृदयस्थल कोट में पांच माह तक प्रार्थना, प्रवचन, शास्त्रवाचन, प्रश्नचर्चा, प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रम अनवरत चले वहीं आडम्बरविहीन तपश्चर्या का अपूर्व ठाट रहा। नियत–निर्धारित कार्यक्रम पर प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्नोत्तर, प्रतिक्रमण में पीपाड़वासी कभी पीछे नहीं रहे। प्रार्थना में घर–परिवार के प्रायः सभी सदस्य सम्मिलित होते, तो प्रवचन में जैन–जैनेतर जनसमुदाय की सदा अच्छी उपस्थिति रही। मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. के प्रेरक और प्रभावी प्रवचनामृत का पान कर जन समुदाय के चेहरों पर अपूर्व शान्ति और अनुपम आनन्द के भाव सहज दिखते। मधुर व्याख्यानी मुनि श्री का विषय प्रतिपादन इतना सरस होता कि छोटे–बड़े सभी नियत समय पर प्रवचन श्रवण करने उपस्थित हो जाते। स्थानकवासी परम्परा के अलावा तेरापंथी, मंदिरमार्गी परम्परा के श्रावक–श्राविकाओं ने भावनापूर्वक प्रवचन श्रवण का लाभ लिया, वहीं माली, जाट, सुथार, माहेश्वरी, दर्जी आदि अनेक बिरादरी के लोगों ने भी भक्तिभावना से प्रवचन श्रवण किया।

चातुर्मास में ज्ञान–ध्यान सीखने में मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. का सत्प्रयास सार्थक रहा। सात वर्ष की वय से 15 वर्ष तक की आयु वाले करीब 20 बच्चों ने न केवल प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया अपितु अपनी बारी के दिन प्रतिक्रमण करवाकर अमिट छाप छोड़ी है।

युवक–युवतियाँ सामायिक–स्वाध्याय करें और शास्त्रों की वांचना लें मुनिश्री की इस प्रेरणा से मध्याह्न शास्त्रवाचन के समय सदा अच्छी उपस्थिति रही।एक–एक को पाठ की गाथाएं देने में मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने जितनी सजगता रखी उतने ही पुरुषार्थ से बहिनों और भाइयों ने गाथाएं कण्ठस्थ कर सुनाई। बुजुर्ग श्रावक–श्राविकाओं की सन्निधि में शास्त्रवाचन कार्यक्रम नित्यप्रति नियत निर्धारित समयावधि तक निर्बाध चला।

चातुर्मास में दया–संवर, उपवास–पौषध, आयंबिल–एकाशन सदा

अनवरत चले वहीं बड़ी तपश्चर्याओं में श्रावक–श्राविकाओं ने अच्छा उत्साह प्रदर्शित किया। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर प्रतिदिन 250–300 दया–पौषध होना महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। महापुरुषों के जन्म-दिवस या पुण्य-दिवस के प्रसंग पर पांच–पांच सामायिक साधना के कई बार सफल आयोजन उत्साहपूर्वक हुए तो प्रेरणा से अनेक बार बालक–बालिकाओं की भिक्षु-दया के आयोजन भी पीपाड़ चातुर्मास की उपलब्धि कही जा सकती है। धर्मचक्र, पचरंगी, सतरंगी, नवरंगियों के कार्यक्रम भी हुए।

अक्टूबर माह में पंच दिवसीय स्वाध्याय शिविर में स्वाध्यायियों के ब्रह्ममुहूर्त से रात्रि शयन तक व्यवस्थित कार्यक्रम देखकर कई बहिनों ने स्वाध्यायी के रूप में पर्वाधिराज पर्युषण में सेवाएं देने की स्वीकृति दी।

आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर महाराष्ट्र विराजते हैं, परन्तु उनके आज्ञानुवर्ती संत-रत्नों का राजस्थान में एक मात्र पीपाड़ में चातुर्मास है, अतः संत समागम और सत्संग-सेवा की भावना से समीपवर्ती और सुदूरवर्ती क्षेत्र के श्रद्धालुओं ने पीपाड़ पहुंचकर धर्मसाधना की। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत ने पर्युषण पर्व के आठों दिन धर्मसाधना करते हुए संत सन्निधि में बिताये। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत जो पीपाड़ निवासी हैं, चातुर्मास का लाभ मिले, इस भावना से तीन बार पीपाड़ आए और सेवा का लाभ लिया। मुणोत फाउन्डेशन के सौजन्य से स्व. श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत की स्मृति में शल्य एवं नेत्र चिकित्सा शिविर के बृहद् आयोजन के पीछे भी उनकी यह भावना रही कि पीपाड़ और पीपाड़ के समीपवर्ती क्षेत्रों की सेवा के साथ संत समागम का लाभ प्राप्त किया जाय, शिविर एवं सेवा का आदर्श दोनों कार्य चातुर्मास के सुयोग से सहज बन सके।

जोधपुर, जयपुर, पाली, भोपालगढ़, अजमेर, मेड़ता, किशनगढ़, कोसाना, साथिन, खेजड़ला, मादलिया, बिलाड़ा के श्रीसंघों ने एवं श्रद्धालु श्रावकों ने पीपाड़ पहुंचकर जिनवाणी-श्रवण का लाभ प्राप्त किया और व्रत–प्रत्याख्यानों की भेंट समर्पित की।

आगत दर्शनार्थियों की आवास–भोजन व्यवस्था में संघ-सदस्यों की सक्रियता उनके स्वधर्मी वात्सल्य का सहज परिचय देती है। ज्ञान–ध्यान, त्याग–तप, साधना–आराधना के सुन्दर रूप के साथ मुनि मण्डल की रत्नत्रय की साधना में बनी रही स्वास्थ्य-समाधि के कारण पीपाड़ श्रीसंघ चातुर्मास से अत्यन्त हर्षित है।

जोधपुर– सूर्यनगरी जोधपुर में साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 के पावटा चातुर्मास और सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा., शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 8 के घोड़ों का चौक चातुर्मास से

ज्ञान–ध्यान, त्याग–तप और साधना–आराधना का अच्छा वातावरण रहा। राजस्थान का दूसरा बड़ा शहर जोधपुर सत्संग सेवा और संत-समागम के लाभ से सदा लाभान्वित रहा है, इसलिए पर्व तिथियों पर दया–संवर, उपवास–पौषध, आयंबिल–एकाशन का अनवरत क्रम यहां बराबर चलता है। सामायिक साधना के लिए पावटा, घोड़ों का चौक, नेहरू पार्क, हाऊसिंग बोर्ड जैसे स्थानों पर नियमित सामायिक करने वाले पहुँचते हैं, वहीं युवकों का सामूहिक सामायिक–साधना का क्रम रविवार को बराबर चलता है। जोधपुर जैसे बड़े क्षेत्र में सदा की भाँति इस वर्ष भी अनेक बड़ी तपश्चर्याएं हुई, जिनमें 51 दिवसीय 31 दिवसीय तक की कई तपश्चर्याएं सम्मिलित हैं। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर पावटा, घोड़ों का चौक और नेहरू पार्क तीनों ही स्थानों पर विशाल उपस्थिति रही। अष्टमी, चतुर्दशी जैसी पर्व तिथियों एवं रविवार को प्रवचन सभा में अच्छी उपस्थिति रहती है। महापुरुषों के जन्म दिवस और पुण्य दिवसों को साधनापूर्वक मनाने की परम्परा के कारण विराजित संत–सतीवृन्द का मात्र स्मरण कराना ही पर्याप्त होता है, श्रावक–श्राविकाएं भावनापूर्वक साधना–आराधना के लिए तत्पर हो जाते हैं। शरद पूर्णिमा पर सायं 6 बजे से प्रातः 6 बजे तक 15 सामायिक के आह्वान पर पावटा और घोड़ों का चौक में 90 श्रावकों ने और लगभग 190 बहिनों ने शरद पूर्णिमा की रात सामायिक साधना के साथ बिताई।

सूर्यनगरी जोधपुर में द्वि–दिवसीय श्रावक सम्मेलन का सफल आयोजन हुआ जिसमें शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के प्रभावी प्रवचन हुए।

साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा., सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा., शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के स्वास्थ्य में सामान्य स्थिति बनी हुई है।

गोटन–सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा., महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 का गोटन चातुर्मास ज्ञान–ध्यान, त्याग–तप और साधना–आराधना की दृष्टि से सफल रहा। औद्योगिक क्षेत्र गोटन में जैनों के साथ अजैनों में भी तप–साधना में सक्रियता रही, यह चातुर्मास की विशेष उपलब्धि है। प्रवचन में जैन–जैनेतर जन समुदाय ने जिनवाणी-श्रवण का भावना पूर्वक लाभ लिया। बालक–बालिकाओं ने सामायिक, प्रतिक्रमण और बोल थोकड़े कण्ठस्थ कर बोर्ड के माध्यम से परीक्षा की तैयारी की। गोटन श्रीसंघ की आवास भोजन-व्यवस्था सराहनीय रही और चातुर्मास काल में महासती मण्डल के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य समाधि बनी रही।

किशनगढ़ शहर–शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा., महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5 का किशनगढ़ शहर का चातुर्मास धर्म–ध्यान की दृष्टि से सफल रहा। चातुर्मास में प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्नचर्चा, प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रम सुव्यवस्थित चले, वहीं पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर

तपश्चर्या में आबाल–वृद्ध सबने अच्छा उत्साह प्रदर्शित किया। धर्मचक्र, पचरंगी, सतरंगी के आयोजनों के साथ एकाशन का मासखमण एवं 45 आयम्बिल तप हुए। अष्टमी चतुर्दशी को सामायिक साधना की पंचरंगी के आयोजनों के साथ शहर में 51 दिवसीय तपश्चर्या का कीर्तिमान रहा। बालक–बालिकाओं ने ज्ञानाभ्यास में अच्छा उत्साह प्रदर्शित किया। चातुर्मास में नवपद आराधना के दिनों में बहनों ने लगातार 9 दिनों तक आयम्बिल ओली तप किए। छुटकर आयम्बिल भी काफी हुए। महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा., श्री सुमतिप्रभा जी म.सा., श्री समर्पिता जी म.सा. ने भी ओली तप किया। शरद पूर्णिमा की रात्रि में बहनों ने पन्द्रह–पन्द्रह सामायिकें की। किसी ने 16–17 एवं किसी ने 11 एवं 9 सामायिकें भी की। रात्रि में अन्त्याक्षरी, प्रश्नोत्तर, धर्म–चर्चा, कथा–कहानियों का कार्यक्रम रखा गया। प्रतिदिन आयम्बिल एवं उपवास के क्रम में 4 नवम्बर को एक बहिन के 49 आयम्बिल हो चुके थे। पूरे चातुर्मास में धर्मध्यान का ठाट रहा।स्थानीय श्री संघ की आवास–भोजनादि व्यवस्था सराहनीय रही। चातुर्मास अवधि में महासती मंडल के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य में समाधि रही।

कजगांव—जलगांव जिलान्तर्गत कजगांव श्रद्धाभक्ति वाला क्षेत्र है जहां इस वर्ष व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा., महासती श्री सुमनलता जी म.सा. आदि ठाणा 6 के चातुर्मास से जिनशासन की महती प्रभावना हुई जो सदा स्मरणीय रहेगी। ज्ञान ध्यान में बालक–बालिकाओं और युवक–युवतियों ने महासती मण्डल के सुयोग से सामायिक, प्रतिक्रमण और बोल–थोकड़ों का अभ्यास किया और बोर्ड के माध्यम से आयोजित परीक्षा में भाग लिया। त्याग–तप की दृष्टि से कजगांव में तेले की तपस्या की लड़, आयंबिल आराधना एवं उपवास, बेले, तेले, पांच, आठ से लेकर मासखमण तक की अनेक तपश्चर्याएं हुई। बालक–बालिकाओं में धर्म के संस्कार जगें, इस भावना से दीपावली अवकाश में कजगांव में बाल–संस्कार शिविर आयोजित किया गया, जो बहुत सफल रहा।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास में समीपवर्ती सुदूरवर्ती अनेक श्री संघ धुलिया पहुंचे, जिनमें से कई श्रीसंघों ने यह सोचकर कि कजगांव नजदीक है, वहां जाकर दर्शन–वंदन और प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। कजगांव कस्बा है और जैन घरों की सीमित संख्या है फिर भी आगत श्रीसंघों का कजगांव वासियों ने आतिथ्य–सत्कार किया और व्यवस्था का दायित्व निर्वहन किया वह अपने आप में स्वधर्मी वात्सल्य सेवा का अनुपम उदाहरण कहा जा सकता है। परस्पर प्रेम–मैत्री–सहयोग के सुन्दर रूप के साथ कजगांव श्री संघ की आवास–भोजनादि व्यवस्थाएँ अनुकरणीय रही। महासती मण्डल के चातुर्मास से गुरु हस्ती का सामायिक–स्वाध्याय संदेश और गुरु हीरा का व्यसन त्याग संदेश कजगांव के घर–घर में तो पहुँचा ही, क्षेत्र में उसकी सौरभ भी पहुंची है, जिसे चातुर्मास की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कह सकते हैं।

जयपुर– जयपुरवासियों की गुरु हस्ती, गुरु हीरा, गुरु मान के प्रति अनन्य आस्था और अगाध भक्ति है। महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. के श्रमणोचित औषधोपचार में जयपुरवासियों का योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। विहार की स्थिति नहीं होने के कारण जयपुर श्रीसंघ ने व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा., महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. आदि ठाणा 7 के चातुर्मास की विनति आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में रखी और उन्हें चातुर्मास का सुयोग प्राप्त हुआ। चातुर्मास में ज्ञानाराधन, तपाराधन एवं जीवन-निर्माण में जयपुर संघ ने अच्छा अभ्युत्थान किया है। दो मासखमण सहित अनेक छोटी बड़ी तपस्याएँ हुई हैं। 17, 16,15, 11,10 एवं 9 दिवसीय तपस्याओं के अतिरिक्त कई अठाई तप एवं छोटे तप हुए हैं। अठरंगी, पचरंगी आदि तपों के अलावा तीन धर्मप्रेमी श्रावकों (श्री शान्तिलाल जी सुराणा, श्री पूनमचन्द जी चोरड़िया, श्री जौहरीलाल जी बरोला) ने सजोड़े शीलव्रत अंगीकार किया है। संवर एवं पौषध प्रतिदिन होते रहे हैं। नवदीक्षित महासती श्री भाग्यप्रभाजी एवं अन्य सतियों का अध्ययन क्रम संघ–सदस्यों के सहयोग से निरन्तर चल रहा है। श्राविकाओं में कई धार्मिक शिविर आयोजित हुए जिनमें परीक्षाएँ आयोजित की गई। बालक–बालिकाओं का धार्मिक शिविर प्रत्येक रविवार को बराबर चल रहा है। शरद पूर्णिमा पर सामायिक के मासखमण की होड़ सी लग गई। सबमें ऐसी चर्चा रही कि यह चातुर्मास सतियों का हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता, लगता है कि यह चातुर्मास किन्हीं बड़े संतों का है। महासतियों के दर्शन एवं प्रवचन-श्रवण के लिए कई श्रीसंघों एवं श्रावक–श्राविकाओं का आवागमन बना रहा।

धनोप– व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. महासती श्री रुचिता जी म. सा. आदि ठाणा 5 का धनोप चातुर्मास धर्म–ध्यान की दृष्टि से सफल रहा। धर्मचक्र-पंचरंगियों के अनेक कार्यक्रमों के साथ दया–संवर, उपवास–पौषध की साधना में जैन–जैनेतर भाई–बहिनों ने उत्साह से भाग लिया। महासती मण्डल के प्रति श्रद्धा–भक्ति और आगत दर्शनार्थियों के प्रति सेवा का सुन्दर रूप धनोप चातुर्मास की मुख्य विशेषता रही। पूरे पांच माह गांव का धर्ममय वातावरण रहा। जिसमें सभी वर्गों और समुदायों की शुभ भावना थी, अतः महासती-मण्डल का चातुर्मास धनोप श्री संघ तक ही सीमित नहीं रहा, समूचे गांव का चातुर्मास हो गया, जिसे अच्छी उपलब्धि कहा जा सकता है। महासतियांजी के सान्निध्य में ओली–दिवसों में अच्छा धर्माराधन हुआ। छोटे से ग्राम में भी 60–70 आयम्बिल हुए। बेले एवं पचोले की तपस्या हुई। महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा., महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. एवं महासती श्री जागृतिप्रभा जी म.सा. ने 9 दिनों तक आयम्बिल तप किया। महासती श्री रुचिता जी म.सा. के लीवर में सूजन एवं हीमोग्लोबिन की कमी के कारण स्वास्थ्य नरम हो गया था, अब सुधार पर है।

मसूदा– अजमेर जिलान्तर्गत मसूदा का नाम जानकार श्रावक–श्राविकाओं के

लिहाज से क्षेत्र में अपना विशेष स्थान रखता है। मसूदा श्रीसंघ ने आचार्यप्रवर की सेवा में अपनी विनति रखी कि हमें संत–सतीवृन्द में से किसी का चातुर्मास प्रदान करें। आचार्यप्रवर ने व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा.और उनके साथ नवदीक्षिता महासती श्री श्रुतिप्रभा जी और मतिप्रभा जी आदि ठाणा 3 का चातुर्मास मसूदा स्वीकार किया। स्वतंत्र रूप से व्याख्यात्री महासती श्री निशल्यवती जी म. सा. का प्रथम स्वतन्त्र चातुर्मास और वह भी दो नवदीक्षिता सतियों के साथ, पर गुरु आज्ञा सहर्ष शिरोधार्य कर महासती मण्डल ने मसूदा चातुर्मास किया और पूरे पांच माह का स्व-पर ज्ञान–ध्यान वृद्धि की दृष्टि से यह चातुर्मास सफल रहा। व्याख्यात्री महासती श्री निशल्यवती जी म.सा. शान्त, सहज और ज्ञान–ध्यान में रत रहने वाली सती है, प्रवचन पर उनका अधिकार है और वचनों में माधुर्य है, इस कारण संघाड़े की दो नवदीक्षिता सतियों को स्थानीय श्रावक–श्राविकाओं ने बोल–थोकड़ों के साथ आगम–शास्त्रों का भावनापूर्वक अध्ययन करवाया और नवदीक्षिता साध्वियों ने भी प्रबल पुरुषार्थ का परिचय देते हुए अध्ययन किया। प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्नोत्तर, प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रमों के साथ मसूदा चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश से वहां आयंबिल आराधना, नमस्कार महामंत्र का जाप बहिनों और भाइयों में धर्मचक्र–पंचरंगियों के आयोजन, एकाशन–दयाव्रत के मासखमण, एकान्तर तप-साधना और संवर-पौषध की साधना के साथ तेलों की भरपूर तपश्चर्याएं हुई।

मसूदा श्रीसंघ महासती-मण्डल के चातुर्मास से पूर्ण संतुष्ट रहा और श्रीसंघ मसूदा ने ज्ञान ध्यान, त्याग–तप, साधना–आराधना के साथ स्वधर्मी वात्सल्य सेवा का अच्छा आदर्श उपस्थित किया।

सैंधवा– मध्यप्रदेश–महाराष्ट्र के सीमावर्ती क्षेत्र सैंधवा ने 28 वर्ष में पहली बार व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा., महासती श्री विमलेश प्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 का चातुर्मास पाकर भक्ति-भावना से ज्ञान–ध्यान, त्याग–तप और साधना–आराधना करके चातुर्मास को दीप्तिमान बनाया। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि संत–सतीवृन्द का महाराष्ट्र में प्रवेश के पूर्व सैंधवा में मंगल पदार्पण हुआ और संत-समागम से सामायिक–स्वाध्याय और व्रत–नियमों के प्रति रुझान बना। उसी रुझान के कारण सैंधवा श्रीसंघ ने चातुर्मास की विनती रखी और उन्हें चातुर्मास मिला । चातुर्मास में धर्माराधन, तपाराधन एवं ज्ञानाराधन का ऐसा ठाट रहा, जैसे मानो बड़े संतो का चातुर्मास हुआ हो। तपसाधना की तो यहाँ लड़ी लग गई। चातुर्मास के उत्तरार्द्ध में भी 11 दिवसीय, 5 दिवसीय तप जारी रहे। एक बहन ने चातुर्मास पर्यन्त बेले–बेले पारणा किया। आयंबिल आराधना में सभी परिवारों का भावना से योगदान रहा। चातुर्मास में नवदीक्षिता महासती श्री उदितप्रभा जी म.सा. ने मासखमण की तपश्चर्या की, नवदीक्षिता महासती जी के तप की अनुमोदना में 31 तेले, 31 बेले, 31 पौषध, 31 उपवास और 31 आयंबिल करके सैंधवा वासियों ने अनुपम आदर्श उपस्थित किया। पूज्या साध्वी मण्डल ने भी

तप साधना में बढ़कर योगदान किया। महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. ने चातुर्मास के प्रारम्भ से ही एकान्तर उपवास किया। महासती श्री विमलेश जी ने 6 अक्टूबर को 6 उपवास की तपस्या पूर्ण की। आप पहले 4–5 तेले कर चुकी हैं। महासती श्री स्नेहलता जी म.सा. ने ढाई माह तक सतत एकाशन तप किया एवं 3 तेले की तपस्या की। सैंधवा में पूरे चातुर्मास में त्याग–तप के प्रति भारी उत्साह बना रहा और आठ मासखमण हुए।

बालक–बालिकाओं, युवक–युवतियों में बोल–थोकड़ों के साथ सामायिक–प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करने की लगन लगी और कईयों ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया जो चातुर्मास की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। प्रत्येक रविवार को लगभग 50–60 बालक–बालिकाओं ने धार्मिक अध्ययन कर ज्ञानार्जन किया। 21 अक्टूबर को तीन वर्गों में सभी की परीक्षा ली गई। चातुर्मास में सामायिक, प्रतिक्रमण, पुच्छिसुणं, 25 बोल, 67 बोल, दशवैकालिक सूत्र एवं उत्तराध्ययन सूत्र का शिक्षण अनेक भाई–बहनों ने लिया। 15 से 30 सितम्बर तक महिलाओं का धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित हुआ। महासती जी के प्रवचन पीयूष का जैन एवं जैनेतर बन्धुओं ने बड़े उत्साह से एवं अच्छी संख्या में लाभ लिया।

कई श्रीसंघ दर्शन–वंदन और प्रवचन श्रवण की भावना से सैंधवा पहुँचे जहां उन्हें स्वधर्मी वात्सल्य सेवा का आदर्श देखने को मिला। आगत श्री संघों की सेवा में सैंधवा के सभी घरों के आबाल–वृद्ध पलक पांवडे बिछाए नजर आए। परस्पर सहयोग का ऐसा सुन्दर रूप कम जगहों पर देखा जाता है। गुरु हस्ती के सामायिक–स्वाध्याय और गुरु हीरा के व्यसन त्याग के प्रति व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. की प्रेरणा से वहां बालक–बालिकाओं, युवक–युवतियों ने सामायिक–स्वाध्याय करने और व्यसनों से दूर रहने का संकल्प किया है जो चातुर्मास की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

–अरूण मेहता, महामन्त्री–अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएं

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 10 ने 1 दिसम्बर को महावीर भवन, धुलिया से विशाल जनमेदिनी के साथ विहार किया और करीब साढ़े तीन किलोमीटर दूर महावीर सोसायटी पधारे। विहार में धुलिया के अतिरिक्त समीपवर्ती सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्री संघ एवं श्रद्धालु श्रावक–श्राविकाएं थी, जो भक्ति भावना से जय–जयकार करते हुए चल रहे थे। धुलिया श्री संघ ने आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर के यशस्वी चातुर्मास पर प्रमोद व्यक्त करते हुए सामायिक–स्वाध्याय, दया–संवर जैसे कार्यक्रम बराबर चलाने का संकल्प किया और अविनय आशातना के लिए क्षमायाचना की। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर महाराष्ट्र को ज्ञान-गंगा से अभी सिंचित करें, ऐसी संभावना है। विभिन्न क्षेत्रों की

विनतियों के उत्तर में आचार्यप्रवर ने अभी कोई संकेत नहीं किया है, परन्तु मुम्बई संघ की पुरजोर विनति के कारण जन समुदाय दोनों महापुरुषों के मुम्बई पधारने का अनुमान लगा रहे हैं। (7 दिसम्बर को आचार्यप्रवर फागणा और उपाध्यायप्रवर मांडल विराज रहे थे।)

तपस्वी श्री बसन्तमुनि जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. ठाणा 3, पीपाड़ सिटी का यशस्वी चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर 1 दिसम्बर को कोट से विहार कर अस्पताल के समीप जैन धर्मशाला में पधारे। विहार में जैन–जैनेतर लोग सम्मिलित थे। दिनांक 2 दिसम्बर को जैन धर्मशाला से विहार कर साथिन पधारे। धर्मशाला का विहार भी कोट की तरह अद्वितीय था। सैकड़ों श्रावक–श्राविकाओं के जय–जयकार के साथ मुनि मण्डल का विहार हुआ। साथिन से खांगटा, खारिया, रजलानी फरसते मुनि मण्डल का 6 दिसम्बर को हरसोलाव पदार्पण हुआ। हरसोलाव से आसावरी, रूण, खजवाणा, मुण्डवा फरसते नागौर पधारने की संभावना है।

साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 पावटा विराजमान हैं जबकि सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा., शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 8, 1 दिसम्बर को घोड़ों का चौक से विहार कर नाणा हाउस पधारे। आचार्यप्रवर की आज्ञानुसार जोधपुर से महासती श्री विमलावती जी म.सा., महासती श्री दर्शनलता जी म.सा., महासती श्री समता जी म.सा. आदि ठाणा 3 ग्रामानुग्राम विहार करते हुए 9 दिसम्बर को बारनी पधारे हैं जहां से गोटन–मेड़ता फरसते अजमेर की ओर बढ़ने की संभावना है। सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा., शासन प्रभाविका श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 5 पावटा विराजित साध्वीप्रमुखा के दर्शन कर राईकाबाग जैन कॉलोनी पधारे और चार दिन वहां प्रवचन करके के.एन. कॉलेज के सामने स्थित कॉलोनी पधारे हैं। अजीत कॉलोनी, रातानाड़ा आदि क्षेत्र फरसने की संभावना है।

सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा., महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 गोटन चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर 1 दिसम्बर को गोटन से विहार करके हरसोलाव पधारे। हरसोलाव से आसावरी एवं 10 दिसम्बर को दाड़मी पदार्पण हुआ है। महासती मण्डल बारनी–भोपालगढ़–आसोप क्षेत्र फरसें, ऐसी संभावना प्रतीत होती है।

शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा., महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5 किशनगढ़ शहर का चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर 1 दिसम्बर को शहर से विहार करके शिवाजी नगर पधारे। तदनन्तर मदनगंज फरसते हुए 7 दिसम्बर को महावीर कॉलोनी पधारे हैं। महासती-मण्डल का अजमेर की ओर अग्र विहार संभावित है।

व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा., महासती श्री सुमनलता जी म.सा. आदि ठाणा 6 कजगांव का यशस्वी चातुर्मास सम्पन्न कर जलगांव जिलान्तर्गत विभिन्न ग्राम–नगरों को पावन करते हुए पाचोरा की ओर बढ़ रहे हैं।

व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा., महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. आदि ठाणा 7 जयपुर चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर जोधपुर की ओर विहार कर रहे हैं। 9 दिसम्बर तक गाडोता पधारे हैं जिनके अगले तीन चार दिन में दूदू पधारने की संभावना है। महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. एक–दो किलोमीटर तक चल सकते हैं उसके आगे उनकी विहार की स्थिति नहीं है। जयपुर संघ के सुज्ञ श्रावकों ने महासती जी की विहार सेवा के लिए बहिनों का आह्वान किया और करीब 200 से अधिक बहिनें स्वेच्छा से विहार सेवा देने को तत्पर हो गई, श्रद्धा–भक्ति और सेवा भावना के इस आदर्श पर हमें गर्व है। संघ संरक्षक से लेकर साधारण श्रावक–श्राविका का विहार–सेवा में भावनापूर्वक योगदान अनुकरणीय है। संघ संरक्षक श्री नथमल जी हीरावत सपत्नीक सबसे पहले महासती मण्डल की सेवा में पहुंच कर महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. के पाद-विहार में सेवा लाभ लेते हैं और करीब डेढ–दो किलोमीटर के विहार पश्चात् श्राविकाओं के माध्यम से डोली द्वारा विहार का क्रम चलाया जाता है। जयपुर के श्रद्धाशील श्रावक–श्राविकाओं का उत्साह वस्तुतः प्रेरणादायी है। श्राविकाएं पूरे उपयोग के साथ विहार सेवा में तत्पर रहती हैं, रत्नवंश के इस अनुपम आदर्श से जिनशासन की दीप्ति हुई है।

विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 6 धुलिया का चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर ग्रामानुग्राम ज्ञान-गंगा प्रवाहित करते हुए चालीसगांव की ओर बढ़ रहे हैं।

व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा., महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 5 धनोप का चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर 1 दिसम्बर को महावीर भवन से विहार कर पंचायती भवन पधारे तथा 2 दिसम्बर को अरवड़ की ओर विहार किया। महासती मण्डल का 7 दिसम्बर को विजयनगर पदार्पण हुआ जिनके अजमेर की ओर अग्र विहार की संभावना है।

व्याख्यात्री महासती श्री निशल्यवती जी म.सा., महासती श्री श्रुतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 का मसूदा से 1 दिसम्बर को विहार हुआ। समीपवर्ती ग्रामों को फरसते हुए 6 दिसम्बर को महासती मण्डल का नसीराबाद पदार्पण हुआ जिनके किशनगढ़ की ओर बढ़ने की संभावना है।

व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा., महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 का सैंधवा चातुर्मास अपूर्व रहा। दिनांक 1 दिसम्बर को सैंधवा से विहार के समय में अच्छी उपस्थिति थी। महासती मण्डल का चौपड़ा की ओर विहार चल रहा है, जिनकी पाचोरा के आसपास व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर

जी म.सा. की सेवा में पहुंचने की भावना है।–**अरूण मेहता, महामंत्री**

आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा दिवस पर आयोजन

कार्तिक शुक्ला षष्ठी 21 नवम्बर 2001 को स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के महान् सन्त, प्रवचन प्रभाकर, ज्ञान एवं क्रिया के उत्कृष्ट आराधक, रत्नवंश के अष्टम पट्टधर, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 39वाँ दीक्षा–दिवस, तप–त्याग एवं गुणानुवाद के साथ मनाया गया। आपके दीक्षा–दिवस पर देश के अनेक स्थानों पर दया–संवर, पौषध–उपवास आदि के विविध आयोजन हुए तथा आचार्यप्रवर के गुणों का उल्लेख किया गया।

पीपाड़ शहर में माघ मास में भागवती दीक्षाओं की स्वीकृति

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने पीपाड़ श्रीसंघ की भावपूर्ण विनती पर शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. की सेवा में ज्ञान–ध्यान सीखने वाली तीन विरक्ता बहिनों की भागवती दीक्षा हेतु माघ शुक्ला त्रयोदशी, सोमवार, दिनांक 25 फरवरी 2001 की स्वीकृति प्रदान की है। पीपाड़ श्रीसंघ दीक्षा महोत्सव के आयोजन के लिए आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में अपनी विनती रखता आ रहा है। तपस्वी श्री बसन्तमुनि जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., तपस्वी श्री बसन्त मुनि जी म.सा. आदि ठाणा एवं शान्त स्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा का विचरण विहार मारवाड़ के आसपास चल रहा है और पीपाड़ श्री संघ को स्वीकृति मिल जाने से उनके दीक्षापूर्व पीपाड़ पधारने की संभावना है।–**अरूण मेहता, महामंत्री**

महाराष्ट्र क्षेत्र में धार्मिक प्रचार-प्रसार यात्रा सम्पन्न

स्वाध्यायियों, श्रीसंघों के अध्यक्ष, मंत्री, श्रावक एवं श्राविकाओं को सामायिक–स्वाध्याय एवम् व्यसन मुक्ति की प्रेरणा देने हेतु श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगांव के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 26.11.2001 से 02.12.2001 तक धार्मिक प्रचार–प्रसार कार्यक्रम महाराष्ट्र के देउर, नेर, मालेगांव, सोंदाणा, चांदवड़, पीपलगांव बसंत, कजगांव, बडाला बडाली, नागद, पीपंलनेर, साक्री, नन्दुरबार एवं नीझर आदि स्थानों पर आयोजित किया गया।

इस प्रचार–प्रसार कार्यक्रम में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर की संयोजिका श्रीमती सुशीला जी बोहरा, जोधपुर, वरिष्ठ एवं चिन्तनशील तत्त्वज्ञ स्वाध्यायी श्रीमान फूलचन्द जी मेहता, उदयपुर, स्वाध्याय संघ, जोधपुर के सचिव श्रीमान रिखबचन्द जी मेहता, जोधपुर, महाराष्ट्र क्षेत्र के प्रचारक श्री माणकचन्द जी गादिया, चालीसगांव, स्वाध्याय संघ के कार्यालय सचिव श्री प्रकाश जी सालेचा, जोधपुर एवं श्री मनोजकुमार जी संचेती, जलगांव ने अपनी अमूल्य सेवायें प्रदान की।

कार्यक्रम के दौरान सभी क्षेत्रों को पर्युषण सेवा, धार्मिक पाठशाला, धार्मिक परीक्षा आदि की प्रेरणा की गई। इस यात्रा में 20 नये स्वाध्यायी बनाये गये। सभी स्थानों पर सामूहिक एवं व्यक्तिगत रूप से घर अथवा स्थानक में अनिवार्य रूप से प्रार्थना करने एवं सामायिक–स्वाध्याय करने की प्रेरणा की गई। बालकों में धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास हेतु स्कूलों के अवकाश के समय वडाली में स्थानीय शिविर लगाने का निर्णय लिया गया। प्रचार–प्रसार कार्यक्रम के दौरान सभी स्थानों पर शाकाहारी एवं सदाचारी जीवन जीने की प्रेरणा देने के साथ श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा संचालित सभी गतिविधियों की जानकारी सभी को करवाई गई।

महाराष्ट्र प्रचार–प्रसार कार्यक्रम के पहले दिनांक 19.11.2001 एवं 20.11. 2001 को स्वाध्याय संघ की संयोजिका श्रीमती सुशीला जी बोहरा ने मसूदा, किशनगढ़ एवं धनोप पधारकर सन्त–सती दर्शन के साथ सामायिक–स्वाध्याय का प्रचार–प्रसार किया।–**रिखबचन्द मेहता, सचिव**

श्राविका मण्डल द्वारा 12 व्रत धारण करने की प्रेरणा

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 39वें दीक्षा-दिवस पर श्राविका मण्डल के पदाधिकारियों, समस्त श्राविका मण्डल के केन्द्रों व सम्पर्क सूत्रों पर बारह व्रत तथा 14 नियम अंगीकार करने हेतु प्रेरणा की गई। जो श्राविकाएं अधिक से अधिक व्रत-नियम अंगीकार करेंगी, उन्हें श्राविका मण्डल की ओर से पारितोषिक प्रदान किया जाएगा। 19 से 20 नवम्बर 2001 तक ब्यावर, किशनगढ़, धनोप तथा मसूदा में प्रचार–प्रसार हेतु श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती अकलकंवर जी मोदी, सचिव श्रीमती उजास जी डाकलिया एवं स्वाध्याय संघ संयोजिका श्रीमती सुशीला जी बोहरा ने एक धर्मयात्रा की। धनोप में श्राविका मण्डल की शाखा खोली गई।–**अकलकंवर मोदी, महासचिव**

युवक परिषद् कार्यकारिणी की धुलिया में बैठक सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की केन्द्रीय कार्यकारिणी की 30 वीं बैठक धुलिया में दिनांक 24.11.2001 को अध्यक्ष श्री अनिल जी बोहरा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में एजेण्डा के विभिन्न बिन्दुओं पर विचार विमर्श हुआ तथा निर्णय लिये गए। अध्यक्ष ने परिषद् के विभिन्न राष्ट्रीय कार्यक्रमों में हुई प्रगति की सदन में जानकारी प्रदान करते हुए अवगत कराया कि परिषद् द्वारा जिनवाणी आजीवन-सदस्यता के लिए चलाए जा रहे राष्ट्रीय अभियान के तहत विभिन्न क्षेत्रों से अब तक लगभग 1800 सदस्य बनाए जा चुके हैं। गजेन्द्र निधि में आर्थिक सहयोग के लिए युवक परिषद् के सहयोग से 81000/– के 81 आधार स्तम्भ सदस्यों के नाम देने के परिषद् के दूसरे राष्ट्रीय अभियान के तहत अब तक 14 दानवीरों की घोषणा की जा चुकी है। साथ ही जानकारी दी गई कि आगामी ग्रीष्मावकाश में परिषद् द्वारा परिवार संस्कार व धार्मिक शिक्षण शिविर

आयोजित किया जाएगा। गुरु भाइयों के प्रति स्नेह, आतिथ्य सत्कार एवं तन–मन–धन से कान्तिलाल जी राजेन्द्र जी चौधरी परिवार द्वारा दी जा रही अभूतपूर्व सेवाओं के लिए धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया गया।

–डॉ. राकेश कांकरिया, महासचिव

युवक परिषद् जलगांव द्वारा का स्नेह मिलन आयोजित

श्री जैन रत्न युवक परिषद् जलगांव द्वारा दिनांक 25.11.2001 को स्थानीय रत्नवंशीय परिवारों का स्नेहमिलन आयोजित किया गया, जिसमें 300 से अधिक गुरु भाइयों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत, समाज चिन्तामणि व संघ संरक्षक तथा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुरेश दादा जैन, संघाध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना एवं अ.भा. श्री जैनरत्न युवक परिषद् के निदेशक प्रो. सुरेश जी मेहता, परामर्शदाता श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल, अध्यक्ष श्री अनिल जी बोहरा सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के सचिव श्री नवरतन जी डागा, जोधपुर, जोधपुर शाखा प्रमुख श्री मनीष जी लोढ़ा भी उपस्थित थे। श्री मोफतराज सा ने जैन जीवनशैली अपनाने पर बल दिया।रतनलाल जी बाफना ने युवक परिषद् द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की व प्राप्त हो रही प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। श्री सुरेश दादा जैन ने युवक परिषद्, जलगांव शाखा द्वारा किए जा रहे विभिन्न कार्यों पर खुशी व्यक्त की। श्री अनिल जी बोहरा ने रत्नवंश के गौरवपूर्ण इतिहास एवं संघ परिचय की समग्र जानकारी प्रदान करता लेमिनेटेड पोस्टर संघाध्यक्ष महोदय को भेंट किया। जलगांव शाखाध्यक्ष श्री मनीष जी ने कार्यक्रम में पधारे सभी महानुभावों के प्रति आभार प्रकट किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम अपने उद्देश्य में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

युवक परिषद्, जयपुर द्वारा संत-सती दर्शन

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर द्वारा 27 सितम्बर से 2 अक्टूबर के मध्य सन्त–सती दर्शन का कार्यक्रम रखा गया। जयपुर के संघ ने सैंधवा में महासती मुक्तिप्रभा जी म.सा., धुलिया में आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 10 एंव विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि महासतियों के दर्शन कर प्रवचन एवं सत्संग का लाभ लिया। आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से कई युवकों ने व्रत-नियम ग्रहण किए। कजगांव में व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. के दर्शन-प्रवचन का भी लाभ लिया।

गोटन से १२०० बछड़े कत्लखाने जाते हुए रुकवाए गए

जोधपुर– ओसियां (जिला– जोधपुर) तथा गोटन (जिला– नागौर) पशु मेले से कसाइयों के दलाल ओ.सी. मोहम्मद ने 1200 बछड़ों को अवैध परमिट बनवाकर

रेलवे वेगनों द्वारा पश्चिम बंगाल ले जाने की योजना बनाई। प्राणी मित्र संस्थान एवं गोटन कार्यकर्ताओं के सद्प्रयासों से रेलवे अधिकारियों को गोवंश का लदान रद्द करना पड़ा। प्राणी मित्र संस्थान के कार्याध्यक्ष चंचलमल चोरड़िया ने राजस्थान के सभी विभागीय आयुक्तों, जिलाधीशों, पुलिस अधिकारियों, पशुपालन विभाग तथा रेलवे अधिकारियों को गोवंश का अवैध निर्यात रोकने हेतु सहयोग की मांग की तथा उपर्युक्त प्रकरण के भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों को दण्डित करने का आग्रह किया। उन्होंने पुष्कर पशु मेलों में कसाइयों द्वारा खरीदे गये हजारो गो वंश की अवैध निकासी पर भी प्रशासन को सतर्क रहने का अनुरोध किया।**–चंचलमल चोरड़िया, कार्याध्यक्ष, प्राणी मित्र संस्थान, जोधपुर**

जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा. का 125 वाँ जन्म-दिवस

जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा. का 125वाँ जन्म दिवस कार्तिक शुक्ला 13 दिनांक 28 नवम्बर 2001 को देश के विभिन्न ग्राम नगरों में तप–त्यागपूर्वक मनाया गया। पूज्य चौथमल जी म.सा. ने 55 वर्षों के दीक्षा काल में राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तरप्रदेश, दिल्ली आदि प्रान्तों में जन–जन में धर्म का प्रचार–प्रसार किया। विभिन्न रियासतों के नरेश, अमीर, उमराव, ठाकुर, सामन्त आदि भी आपसे प्रभावित एवं लाभान्वित होकर दुर्व्यसनों से मुक्त हुए। आपने कई अछूत जातियों का उद्धार किया। आपका विशाल साहित्य है। आपका अन्तिम चातुर्मास विक्रम संवत् 2007 सन् 1850 ई. में कोटा में हुआ था। उसके पश्चात् यहां पर ही मार्गशीर्ष शुक्ला नवमी, रविवार दिनांक 17 दिसम्बर 1950 ई. को आपका स्वर्गारोहण हो गया था।

आचार्य श्री शिवमुनि जी द्वारा भारत के प्रधानमंत्री को पत्र

जैनाचार्य श्री शिवमुनि जी ने 24 अक्टूबर 2001 को भारत के प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी को लिखे पत्र में कहा है कि सरकार द्वारा अहिंसा वर्ष में राजकीय भोज में मांसभक्षण एवं मदिरापान का निषेध घोषित किया जाए। उल्लेखनीय है कि वाजपेयी जी ने सन् 1995 में पूना में आचार्य श्री के दर्शन करते समय कहा था– मुनि जी आप आशीर्वाद दो, हम केन्द्र में आ गये तो गो–हत्या बंदी पूरे देश में लागू कर देंगे। पत्र की प्रति मानव संसाधन मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी, जीव जन्तु कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष श्री गुमानमल लोढ़ा, विश्व हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष श्री अशोक सिंघल आदि को भी प्रेषित की गई है।

अ.भा. श्री साधुमार्गी जैन संघ का ३९ वां अधिवेशन सम्पन्न

गंगाशहर– भीनासर(राज.) में श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ और उसकी सहयोगी संस्थाओं के 17 से 19 अक्टूबर 2001 तक अधिवेशन एवं समारोह सम्पन्न हुए। इस अवसर पर धर्मपाल सम्मेलन, समता प्रचार संघ के स्वाध्यायियों का अधिवेशन, समता युवा संघ का अधिवेशन एवं महिला समिति का अधिवेशन सम्पन्न हुआ। धर्मपाल सम्मेलन में धर्मपाल प्रवास आयोजित करने, पाठशालाओं की संख्या बढ़ाने

एवं नए समता भवन बनाने का निर्णय लिया गया। समता प्रचार अधिवेशन में बताया गया कि इस बार इस संघ से 150 स्थानों पर स्वाध्यायियों ने सेवा दी है। निःस्वार्थ सेवा देने वाले प्रत्येक स्वाध्यायी का सम्मान करने, श्रमणोपासक में उनका परिचय प्रकाशित करने एवं प्रतिवर्ष स्मारिका प्रकाशित करने का भी निर्णय लिया गया।

आश्विन शुक्ला द्वितीया 18 अक्टूबर को संघ-स्थापना दिवस पर आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. ने आगामी वर्ष को 'संस्कार–समीक्षा वर्ष' के रूप में मनाने का आह्वान किया। इस दिन नानेशवाणी एवं अन्य साहित्य का लोकार्पण भी किया गया। डॉ. डी.एन. झा की पुस्तक के विरुद्ध कठोर कानूनी कार्यवाही करने हेतु प्रस्ताव पारित किया गया।–**नथमल तातेड़, राष्ट्रीय मन्त्री**

महावीर पुरस्कार २००२ हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

भगवान महावीर फाउण्डेशन, चेन्नई द्वारा आठवें महावीर पुरस्कारों हेतु 31 जनवरी 2002 तक नामांकन आमन्त्रित किए गए हैं। 1. अहिंसा एवं शाकाहार के प्रचार–प्रसार 2. शिक्षा एवं चिकित्सा तथा 3. सामाजिक एवं सामुदायिक सेवा के क्षेत्रों में उत्कृष्ट मानवीय प्रयासों के लिए पुरस्कृत किया जाता है। तीनों पुरस्कारों में प्रत्येक में 5 लाख रुपये नकद, प्रशस्तिपत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किया जाता है। नामांकन स्वयं द्वारा प्रस्तुत किए जाने पर पुरस्कार हेतु विचार नहीं किया जायेगा। नामांकन पत्र का प्रारूप jainsindia.org / sugaldamani.org वेबसाइटों पर उपलब्ध है। पता– **पोस्ट बॉक्स नं. 2983, 11–पोन्नप्पा लेन ट्रिप्लिकेन हाई रोड, चेन्नई–60005, फोन 8571066, 8571246 ई मेल– sugalchand@yahoo.com**

गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार-२०००

जम्बूद्वीप हस्तिनापुर– पं. शिवचरनलाल जैन को श्री दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार 2000 से सम्मानित किया गया है। उन्हें 25.10.2001 को दिल्ली में 100000/– रुपये की नकद राशि, रजत प्रशस्ति, शाल एवं श्रीफल से सम्मानित किया गया। उन्हें यह पुरस्कार प्राचीन जैन आगम साहित्य के गम्भीर अध्ययन एवं दिगम्बर जैन त्रिलोक संस्थान, हस्तिनापुर की अकादमिक गतिविधियों के संयोजन/संचालन हेतु दिया गया।–**डॉ. अनुपम जैन**

भवानीमण्डी के अहिंसाप्रेमियों द्वारा अहिंसा का प्रचार-प्रसार

अखिल भारतीय अहिंसा प्रचार समिति के द्वारा चलाये गए 'पटाखा त्यागो' अभियान के अन्तर्गत 11 राज्यों के 406 से भी अधिक ग्राम–नगरों में पटाखा त्याग हेतु प्रचार–सामग्री का निःशुल्क वितरण किया गया। इस वर्ष दीपावली पर लगभग 12000 से अधिक बालकों एवं युवकों ने पटाखा त्याग हेतु प्रतिज्ञा पत्र भरे। समिति के संचालक युवारत्न श्री नितेश नागोता ने बीसियों स्थानों पर अहिंसा

प्रचार समिति की स्थापना करके सैकड़ों युवा–युवतियों को लिखित शपथ-पत्र द्वारा जीवन पर्यन्त के लिए प्रतिदिन एक घण्टा व इससे अधिक समय के लिये अहिंसा आन्दोलन से जोड़ा है।–**कालूलाल सालेचा, राष्ट्रीय संयोजक**

अमर जैन अस्पताल,जयपुर में 1 वर्ष तक नि:शुल्क लैंस प्रत्यारोपण

अ.भा. श्वे. स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेस के जयपुर सम्भाग ने श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. की जन्म–जयन्ती के अवसर पर अमर जैन अस्पताल, चौड़ा रास्ता, जयपुर में 1 नवम्बर 2001 से 31 अक्टूबर 2002 तक मोतियाबिन्द का ऑपरेशन कर नि:शुल्क लैंस प्रत्यारोपण कराने का सम्पूर्ण व्ययभार वहन करने का निर्णय लिया है। एक वर्ष में जैन कॉन्फ्रेंस के जयपुर सम्भाग ने 500 ऑपरेशन का लक्ष्य निर्धारित किया है। उल्लेखनीय है कि लैंस प्रत्यारोपण शल्यक्रिया का विभिन्न अस्पतालों में 5000/– से 10000/– रु. तक का व्यय भार आता है।– **रतनचन्द मेहता, महामंत्री**

दिल्ली में आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जयन्ती समारोह सम्पन्न

देश के अनेक स्थानों पर आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी की जयन्ती मनायी गई। शास्त्रीनगर दिल्ली में 11 नवम्बर को विशाल स्तर पर जाप एवं गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। सभा में दिल्ली एवं हरियाणा, पंजाब, मुम्बई आदि स्थानों से अनेक भाई–बहिनों ने भाग लिया। इस अवसर पर पं. श्री रमेशमुनि जी, उपप्रवर्तक डॉ0 राजेन्द्रमुनि जी, अन्य संतों, सतियों एवं श्रावक–श्राविकाओं ने आचार्य श्री के गुणों का स्मरण किया। आचार्य देवेन्द्र प्रश्नोत्तरी परीक्षा भी आयोजित की गई। –**धनपाल जैन, मंत्री**

दिल्ली में अहिंसा शिखर सम्मेलन

भारतीय जैन मिलन के तत्त्वावधान में भगवान महावीर के 2600वें जन्म कल्याणक महोत्सव की शृंखला में भ. महावीर दीक्षा कल्याणक के अवसर पर रविवार दिनांक 9 दिसम्बर 2001 को सीरी फोर्ट ऑडिटोरियम, खेलगांव नई दिल्ली में प्रातः 10 बजे से राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रसंत आचार्य विद्यानन्द जी मुनि, आचार्य श्री शिवमुनि, श्री महेन्द्रमुनि एवं मुनि श्री विजय सूरि जी के सान्निध्य में अहिंसा शिखर सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। जिसमें अहिंसा पर समस्त जैन समाज के शीर्षस्थ मुनिगण एवं विद्वान अपने विचार व्यक्त करेंगे। इस अवसर पर अनेक जैनेतर विद्वानों को भी आमंत्रित किया गया है। सम्मेलन का उद्घाटन श्रीमती सुषमा स्वराज, केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री, भारत सरकार करेंगी। काफी समय बाद दिल्ली में पहली बार चारों सम्प्रदाय के संत एक साथ किसी कार्यक्रम में भाग लेंगे।

ब्यावर में श्री पार्श्वनाथ जैन चिकित्सालय का शुभारम्भ शीघ्र

ब्यावर में जनकल्याण हेतु महासती श्री उमरावकुंवर जी 'अर्चना' की

प्रेरणा से स्थापित श्री पार्श्वनाथ जैन मेडिकल रिलीफ ट्रस्ट (रजि.) द्वारा निर्मित कराये जा रहे श्री पार्श्वनाथ जैन चिकित्सालय एवं शोध संस्थान का निर्माण कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है। टॉडगढ़ रोड़ पर निर्मित चिकित्सालय भवन पर अब तक एक करोड़ रुपये से ज्यादा राशि व्यय की जा चुकी है। चिकित्सालय हेतु सभी आवश्यक उपकरण मंगाये जाने का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। इस ट्रस्ट को देय दानराशि पर आयकर अधिनियम की धारास 80जी की छूट भी उपलब्ध है। चिकित्सालय को सभी सुविधाओं से सम्पन्न बनाया जा रहा है। इसमें नेत्रोपचार, नेत्र–प्रत्यारोपण, मातृ–शिशु स्वास्थ्य एवं प्रसूति तथा सामान्य चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध होंगी।–**जवरीलाल शिशोदिया, कार्याध्यक्ष**

आतिशबाजी नहीं करने वालों का सम्मान

इन्दौर–दीपावली पर आतिशबाजी नहीं करने का संकल्प पत्र भरने वाले 600 व्यक्तियों का सम्मान श्री महावीर जैन स्वाध्यायशाला के 24 वें स्थापना दिवस पर आयोजित समारोह में महावीर भवन, इमली बाजार में किया गया। श्रमणसंघीय सलाहकार श्री मोहनमुनि जी महाराज ने कहा कि मन को वश में रखना, इच्छाओं पर नियन्त्रण करना बहुत बड़ा धर्म है। पुरस्कृत होने वालों में लगभग 100 बच्चे थे।– **विमल तातेड़, महामन्त्री**

गुटखा, पानमसाला आदि की बिक्री पर प्रतिबन्ध

चेन्नई– 18 नवम्बर 2001 को तमिलनाडु सरकार के स्वास्थ्य मन्त्रालय ने एक अध्यादेश जारी कर पान मसाला, गुटखा, च्यूइंगम, जर्दा आदि के उत्पादन एवं बिक्री पर 'प्रिवेंशन ऑफ फूड एण्ड अल्ट्रेशन एक्ट' के तहत पूर्ण रूप से प्रतिबन्ध लगा दिया है। कानून भंग करने पर 3 वर्षों की सजा तथा दण्डराशि का प्रावधान है।–**केशरीचन्द सेठिया, मंत्री, भगवान महावीर अहिंसा प्रचार संघ।**

संक्षिप्त-समाचार

हैदराबाद– श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, हैदराबाद एवं आन्ध्रा जैन स्वाध्यायी संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में महासती श्री प्रकाशकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में अष्ट दिवसीय धार्मिक शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 175 बालक–बालिकाओं ने भाग लिया। सभी कक्षाओं में आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की पुस्तकों से अध्यापन कराया गया। भाषण, निबन्ध, संगीत एवं अन्य ज्ञानवर्द्धक प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गई।

सुमेरपुर (पाली)– 23 नवम्बर 2001 गोपाष्टमी के दिन श्रीराम गौशाला, कोलीवाड़ा के प्रांगण में गो माता पूजन एवं गोभक्तों का सम्मेलन रखा गया। इस विशाल कार्यक्रम में समस्त गौशालाओं के प्रतिनिधि, समाजसेवी, गोभक्त एवं दानदाता भाग ले रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री राजमल जी एस. जैन कर रहे थे। श्री मीठालाल जी मेहता, पूर्व मुख्य शासन सचिव, राजस्थान सरकार मुख्य

अतिथि थे। आचार्य धर्मेन्द्र जी मुख्यवक्ता रहे। श्रीराम गौशाला में 700 गोवंश लाभ प्राप्त कर रहे हैं। इसमें अस्वस्थ एवं अशक्त पशुओं की चिकित्सा और पालन की भी व्यवस्था है। कत्लखाने ले जाये जा रहे गोवंश को छुड़ाकर यहां आश्रय भी दिया जाता है। गोशाला सभी सुविधाओं से युक्त बन रही है। इसमें सहयोग हेतु सम्पर्क किया जा सकता है– पता– **श्री रामगोशाला सेवा समिति, स्टेशन रोड़, कोलीवाड़ा मार्ग, सुमेरपुर जिला– पाली (राज.) फोन नं. 52449, 52531**

सवाईमाधोपुर– यहां 15 नवम्बर 2001 को भ. महावीर का 2600वाँ निर्वाण दिवस समारोह दिगम्बर समाज द्वारा चमत्कार जी के मन्दिर में आयोजित किया गया, जिसमें विविध कार्यक्रम रखे गए। समारोह में मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर सवाईमाधोपुर तथा मुख्य वक्ता श्री जशकरण जी डागा, टोंक थे। जिला कलेक्टर ने चमत्कार जी के मंदिर के बाहर चौराहे को अहिंसा सर्किल बनाने तथा धर्म स्थानों के निकटवर्ती मांस की दुकानों को हटवाने और मांस की अवैध दुकानों को बंद कराने के सुझावों पर सहमति व्यक्त की है।

–मंत्री, जीव दया मण्डल ट्रस्ट, टोंक (राज.)

बैंगलोर– श्री भगवान महावीर मानवता केन्द्र ट्रस्ट, समाज-सेवा एवं प्राणी-सेवा के कार्यों में संलग्न है। दानदाता सम्पर्क करें– **देवराज कोठारी, मुख्यन्यासी, फोन नं. 2875392(ऑ.) 3365288(घर)**

दिल्ली– नई दिल्ली के 'अहिंसा स्थल' के सुरम्य परिसर के लघुपर्वत–शिखर पर विराजित भगवान महावीर की 13 फुट उत्तुंग पद्मासन प्रतिमा का द्वादशवर्षीय महामस्तकाभिषेक समारोह 18 नवम्बर 2001 को आयोजित किया गया। समारोह में आचार्य श्री विद्यानन्द जी मुनिराज सहित अनेक सन्त, भट्टारक चारुकीर्ति जी, कई विद्वान एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

गंगाशहर-भीनासर–महिला जागरण हेतु अखिल भारतीय सधुमार्गी जैन महिला समिति द्वारा दिशाबोध शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 150 महिलाओं ने भाग लिया।

उदयपुर– उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी म.सा. की 92वीं जन्म–जयन्ती पर सोमवार 29 अक्टूबर को भुवाणा में आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा. की स्मृति में 'जैनाचार्य देवेन्द्रमुनि शिक्षण एवं चिकित्सा शोध संस्थान' का समारोहपूर्वक शिलान्यास किया गया। शिलान्यास स्थानीय उद्यमी एवं समाजसेवी श्री विरेन्द्र जी डांगी एवं उनकी धर्मपत्नी रंजनी डांगी ने किया। समारोह की अध्यक्षता श्री धनसुख भाई, अश्विन भाई दोशी, मुम्बई ने की। मुख्य अतिथि लुधियाना के उद्यमी श्री विजयकुमार जैन थे।

दिल्ली– आचार्य श्री शिवमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में वीरनगर, दिल्ली में 4 से 7 अक्टूबर 2001 तक ध्यान शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें 80 से अधिक साधकों ने भाग लिया। इसके पश्चात् 8 से 11 अक्टूबर तक आयोजित शिविर में 65 साधकों ने भाग लिया। 11 अक्टूबर को जैन महासभा 'महिला शाखा' द्वारा एक दिवसीय

ध्यानयोग शिविर आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 200 महिलाओं ने भाग लिया। इसके पश्चात् भी ध्यान शिविर एवं अन्य शिविर आयोजित हुए।

—अनिल कुमार

दिल्ली— महासती श्री हेमकुंवर जी म.सा. ने 122 दिवसीय तपस्या 27 अक्टूबर को पूर्ण की। उन्होंने 27 जून 2001 को तपस्या प्रारम्भ की थी।

इन्दौर— श्री महावीर जैन स्वाध्याय शाला, इमली बाजार ने 26 अक्टूबर को अपना 24 वाँ स्थापना दिवस मनाया। सलाहकार श्री मोहनमुनि जी ने कहा कि सुसंस्कारों से जीवन का निर्माण होता है। स्वाध्यायशाला की गतिविधियों का परिचय देते हुए श्री मोहनलाल पीपाड़ा ने बताया कि 23 वर्ष पूर्व आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी मसा. की प्रेरणा से प्रारम्भ यह स्वाध्याय शाला धार्मिक, नैतिक एवं चारित्रिक संस्कार प्रदान करती है।— **विमल तातेड़, मन्त्री**

हस्तिनापुर— विधान समिति के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्रकुमार जैन ने यह घोषणा की है कि आगामी दो वर्षों में भारतवर्ष के सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज की जनगणना का कार्य सम्पन्न किया जायेगा। यह कार्य दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर द्वारा किया जायेगा।

भावनगर— श्री सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट, भावनगर द्वारा भावनगर में 23 दिसम्बर 2001 को श्री शशीभाई के 69वें जन्मदिवस पर पूज्य कानजी स्वामी, श्रीमद् राजचन्द्र, चंपा बहन, श्री निहालचन्द्र जी सोगानी एवं शशीभाई की संगमरमर निर्मित प्रतिकृति लगायी जायेंगी। इनके साथ पंच परमेष्ठी भगवंतों का भी संगमरमर पर उत्कीर्ण चित्रपट लगाया जायेगा। यह कार्य – श्री शशीप्रभु साधना स्मृति मन्दिर' में सम्पन्न होगा।

विजयनगर (बैंगलोर)— श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ ट्रस्ट, विजयनगर के तत्त्वावधान में 1 नवम्बर 2001 को जैन स्थानक भवन का भूमिपूजन श्री शांतिलाल जी लुणावत के कर कमलों से हुआ। कर्नाटक सरकार के विधायक श्री वी. सोमन्ना ने अपनी ओर से एक लाख रुपये के सहयोग की घोषणा की। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के अध्यक्ष श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल ने संस्कार निर्माण पर बल दिया। अन्य वक्ताओं ने भी विचार व्यक्त किए।

– शान्तिलाल लोढ़ा, मन्त्री

इन्दौर— श्री जैन सेवा समिति, इन्दौर ने एक समारोह में जैन समाज के 276 छात्र–छात्राओं को सम्मानित किया। इसके अन्तर्गत कक्षा 3 से 7 तक 85 प्रतिशत अंक, कक्षा 8 से 12 तक तथा विभिन्न धार्मिक बोर्ड-परीक्षाओं में 75 प्रतिशत एवं उससे अधिक अंक प्राप्त करने वालों को सम्मानित किया गया।—**अभय चोरड़िया**

सागर (म.प्र.)—एक एम.डी. मेडिसिन/डी.एम. कार्डियोलॉजी तथा एम.डी. एनेस्थिशिया डाक्टर की आवश्यकता है। सम्पर्क करें— **भाग्योदय तीर्थ (धर्मार्थ ट्रस्ट), हॉस्पिटल, करीला, खुरई रोड़, सागर (म.प्र.) फोन नं. 07582–4667.**

बधाई / चुनाव

डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी जैन विश्वभारती के कुलाधिपति

प्रसिद्ध न्यायविद् एवं संविधान विशेषज्ञ डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी को जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूं का 4 वर्षों के लिए कुलाधिपति के रूप में मनोनयन किया गया है। ब्रिटेन में भारत के उच्चायुक्त रहे डॉ. सिंघवी वर्तमान में राजस्थान से राज्यसभा के सदस्य भी हैं। संस्थान में उनका मनोनयन कुलाधिपति श्री श्रीचन्द जी बैंगानी के त्यागपत्र के पश्चात् किया गया है। इससे पूर्व संस्थान के प्रथम कुलाधिपति श्री श्रीचन्द जी रामपुरिया का 94 वर्ष की आयु में कलकत्ता में 27 जुलाई 2001 को निधन हो गया था।

संस्थान में इस समय कुलपति के पद पर श्रीमती सुधामही रघुनाथन कार्यरत है।

दिल्ली– श्री ओमप्रकाश जी गुप्ता, सम्पादक राजस्थान टाइम्स को अहिंसा इण्टरनेशन, नई दिल्ली की ओर से एक भव्य समारोह में 4 नवम्बर को 'अहिंसा इण्टरनेशनल जीवरक्षा अवार्ड' प्रदान किया गया। इस पुरस्कार में उन्हें 21 हजार रुपये, शॉल, श्रीफल एवं स्मृतिचिह्न से सम्मानित किया गया। श्री गुप्ता करोड़ों रुपये की लागत से खुलने जा रहे यांत्रिक पशुवध गृह के विरुद्ध अपनी कलम चलाकर सफल रहे। नीलगायों की हत्या के सरकारी कानून को रद्द कराने हेतु भी वे प्रयत्नशील हैं। सन् 1999 में उन्हें 'आचार्य हस्ती अहिंसा अवार्ड' भी प्राप्त हो चुका है।–**प्रदीप कुमार जैन, अहिंसा इण्टरनेशनल, नई दिल्ली**

बजरिया (सवाईमाधोपुर)–श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन सुपुत्र श्री महावीरप्रसाद जी

जैन लोहिया का राष्ट्रीय रक्षा अनुसंधान संस्थान (डी.आर.डी.ओ.) में वैज्ञानिक पद (द्वितीय श्रेणी) पर चयन हुआ है। रीजनल इंजीनियरिंग कॉलेज, हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश) से इसी वर्ष इलेक्ट्रोनिक्स एवं टेलीकम्यूनिकेशन्स में बी.टेक. की उपाधि प्राप्त श्री जैन दिसम्बर 2001 में आगरा (उ.प्र.) में कार्य सम्हालेंगे। वे स्वाध्याय संघ, जोधपुर के सक्रिय स्वाध्यायी हैं।

अहमदाबाद–सम्बोधि धाम, अहमदाबाद की ओर से 2 दिसम्बर 2001 को प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा के विद्वान प्रो. रमणीकभाई शाह तथा 'श्रमण' पत्रिका के सम्पादक डॉ. शिवप्रसाद, बनारस को सम्मानित किया गया। बाबूलाल अमृतलाल चेरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद की ओर से इसी दिन डॉ. हम्पा नागराजैया, बैंगलोर को कन्नड़ साहित्य में योगदान हेतु बाहुबली सुवर्णचन्द्रक से पुरस्कृत किया गया।

चेन्नई– वरिष्ठ समाजसेवी श्री केशरीचन्द जी सेठिया को उनकी 50 वर्षों की सामाजिक, आध्यात्मिक एवं साहित्यिक सेवाओं के लिए युग चिन्तामणि, चेन्नई द्वारा 'समाजरत्न' की उपाधि से सम्मानित किया गया। श्री साधुमार्गी जैन संघ, चेन्नई के अध्यक्ष, भगवान महावीर अहिंसा प्रचार संघ के मानद मंत्री एवं अनेक

संस्थाओं से सम्बद्ध श्री सेठिया जी की अहिंसा एवं शाकाहार के क्षेत्र में भी सेवाएं सराहनीय हैं।– **रतन रांका**

नगरी– सुश्री ज्योति संचेती सुपुत्री श्री रिखबचन्द जी संचेती निवासी डौंडी लोहरा

ने 24 वर्ष की युवावस्था में 71 दिवसीय दीर्घ तपस्या की है। उन्होंने यह तपस्या करके छत्तीसगढ़ में कीर्तिमान स्थापित किया है। तपस्विनी बहिन का संतों के सान्निध्य में अभिनन्दन किया गया। तप अभिनन्दन समारोह में स्थानीय एवं बाहर के श्रावक-श्राविका उपस्थित हुए।–**कुशलचन्द ढेलड़िया**

अमलनेर– संघपति श्री पन्नालाल जी शंकरलाल जी लुणावत के स्वर्गवास के पश्चात् नई कार्यकारिणी का गठन किया गया, जिसमें श्री मदनलाल जी रामलालजी ओस्तवाल को अध्यक्ष, श्री शांतिलाल जी नागरदास जी शाह को उपाध्यक्ष, श्री सुगनचन्द जी छोगमल जी पारख को कार्याध्यक्ष, श्री चम्पालाल जी लालचन्द जी कवाड़ को मन्त्री,, श्री देवराज जी प्रसन्नचन्द जी बाफना को कोषाध्यक्ष एवं श्री केतनभाई हसमुखलाल गोसलिया को संयुक्त सचिव चुना गया है।

चिंचवड़ (पूना)– नई कार्यकारिणी में श्री झूंबरलाल जी लुणावत को अध्यक्ष, श्री सुरेशचन्द जी धोका को कार्याध्यक्ष, श्री दिलीपचन्द जी चोरड़िया को सचिव एवं श्री कांतिलाल जी कांकरिया को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया है।–**कटारिया**

दुर्ग– दुर्ग में पहली बार श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ का गठन किया गया है, जिसमें श्री मीठालाल जी कोठारी को संरक्षक, श्री सरदारमल जी सुराणा को अध्यक्ष, श्री रूपचन्द जी ओस्तवाल को उपाध्यक्ष, श्री सम्पतराज जी ओस्तवाल को कोषाध्यक्ष एवं श्री कन्हैयालाल जी कटारिया को सचिव मनोनीत किया गया है।

श्रद्धांजलि

मन्दसौर– श्रीमती रामकुंवरबाई नलवाया धर्मपत्नी स्व. श्री सोभागमल जी

नलवाया का 77 वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। आप गत 40 वर्षों से रात्रि भोजन त्याग के साथ 12 व्रतों की आराधना कर रही थीं। आपने अनेक प्रकार की तपस्याएं भी की। नगर में विराजित सन्त–सतियों के प्रातः जल्दी दर्शन करना एवं दिनभर के लिए कल्पनीय वस्तु लेने की आज्ञा प्रदान करना आपके दैनिक जीवन का क्रम था। आपकी आतिथ्यसेवा सराहनीय थी। मरणोपरान्त आपके नेत्रों से एक महिला को दृष्टि प्राप्त हुई है। आपके निधन के पश्चात् स्थानीय समाज ने श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परिवारजनों ने कल्याण कार्यों में राशि नियोजित की।–**शिवसिंह चौधरी**

पांढरकवड़ा– श्री नगराज जी पीतलिया का 15 नवम्बर 2001 को 52 वर्ष की आयु में हृदयाघात से निधन हो गया। आपकी आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं

सन्त–सतियों पर अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आप धर्मनिष्ठ, स्वाध्यायशील एवं सेवाभावी श्रावक थे।–**सुनील पीतलिया**

कोटा– सुश्रावक श्री जीतमल जी सुराणा का 1 अक्टूबर 2001 को 84 वर्ष की

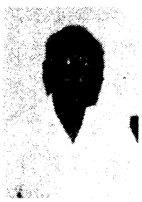

आयु में स्वर्गवास हो गया। आप आचार्यभगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के परम भक्त थे। आप स्वाध्याय एवं सामायिक में रुचि रखने वाले धर्मनिष्ठ श्रावक थे। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी, विनम्र, नैतिक एवं दृढ़निश्चयी श्रावक रत्न थे। आप अपने पीछे दो पुत्रों एवं चार पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ कर गये हैं।–**प्रकाशमल सुराणा**

जयपुर– सुश्रावक श्री गणपतलाल जी कोठारी का 28 नवम्बर 2001 को असामयिक देहावसान हो गया। आप लोकप्रिय समाजसेवी थे। आप कथनी की बजाय करने में अधिक विश्वास रखते थे । आपको मूकसमाज सेवी कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। आप कई वर्षों से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की गतिविधियों से जुड़े हुए थे। आप धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यपरायण, सेवाभावी होने के साथ अनुकरीय व्यक्तित्व के धनी थे।–**प्रकाशचन्द डागा**

यादगिरि– धर्मपरायण सुश्राविका श्रीमती तारादेवी जी धोका धर्मपत्नी स्व. श्री

पूरणमल जी धोका का 20 नवम्बर 2001 को स्वर्गवास हो गया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति समर्पित श्राविकारत्न थी। उदारता के कारण आपके व्यक्तित्व की महक पूरे क्षेत्र में व्याप्त थी। आपकी प्रेरणा से आपके पुत्रों द्वारा एक विशाल अंग्रेजी माध्यम का हाईस्कूल बन रहा है। आप मृदुभाषी, सरलमना, शान्तिप्रिय एवं अत्यन्त व्यवहार कुशल थी। आपका घराना इस क्षेत्र में सुविख्यात है। आप अपने पीछे पुत्र, पौत्र एवं प्रपौत्र सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।–**सुभाषचन्द सोलंकी, मंत्री**

इन्दौर– सुश्राविका श्रीमती सोहनदेवी चौधरी, धर्मपत्नी स्व. श्री मोहनलाल जी

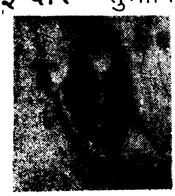

चौधरी जावद वाले का 88 वर्ष की आयु में 19 सितम्बर 2001 को इन्दौर में संथारापूर्वक देहावसान हो गया। आपने अपने जीवन में दो बार वर्षीतप किए। 500 आयम्बिल तप, कई बार ओली तप एवं अठाई जैसे अनेक तप किए। आपका जीवन सादगीमय एवं धर्मनिष्ठा से परिपूर्ण था।–**प्रकाशचन्द चौधरी**

बालोद (जिला दुर्ग)– सुश्रावक श्री रामलाल जी ठेलड़िया (मूल निवासी सोइंतरा) का 75 वर्ष की आयु में 17 सितम्बर 2001 को संथारापूर्वक स्वर्गवास हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक एवं शारीरिक स्वस्थता रहते हुए उभयकाल प्रतिक्रमण करते थे। आपका पूरा परिवार धर्मनिष्ठ है। आपकी भानजी ज्ञानगच्छ में महासती श्री कंचनकंवर जी म.सा. के नेश्राय में महासती अक्षिता जी म.सा. के नाम से

जिनशासन की सेवा कर रही है। आप पक्खी प्रतिक्रमण में 84 लाख जीवयोनि से क्षमायाचना करके तथा घर में उपस्थित सभी सदस्यों से खमतखामणा करके पंडितमरण को प्राप्त हुए हैं।–**कंवरलाल रतन बोहरा, मंत्री**

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते है।

ईस्वी सन् 2002 के घोषित अहिंसक अगते

राजस्थान सरकार के स्वायत्त शासन विभाग के नोटिफिकेशन संख्या एफ–1/609/एल.ए.जी./49 दिनांक 14.1.50, 20.11.67, 12.9.74 एवं 29.9.88 के अनुसार ईस्वी सन् 2002 में राज्य में घोषित अहिंसक अगताओं की माहवार सूची, नीचे दी जा रही है। इन दिनों बूचड़खाने एवं कसाईखाने व पशुओं को कत्ल कर, मांसादि का विक्रय करना कानूनन बन्द है।

क्र.सं.	दिनांक	नाम अगता	वार	घोषित तिथि
01.	26 जनवरी	गणतन्त्र दिवस	शनिवार	26 जनवरी
02.	30 जनवरी	गांधी निर्वाण दिवस	बुधवार	30 जनवरी
03.	12 मार्च	महाशिवरात्रि	मंगलवार	फाल्गुन कृ.13/14
04.	21 अप्रेल	रामनवमी	रविवार	चैत्र शु. 9
05.	25 अप्रेल	महावीर जयंती	गुरुवार	चैत्र शुक्ला 13
06.	26 मई	बुद्ध पूर्णिमा	रविवार	वैशाख शु. 15
07.	15 अगस्त	स्वतन्त्रता दिवस	गुरुवार	15 अगस्त
08.	31 अगस्त	जन्माष्टमी	शनिवार	भाद्रपद कृ. 8
09.	10 सितम्बर	गणेश चतुर्थी	मंगलवार	भाद्रपद शु. 4
10.	11 सितम्बर	ऋषि पंचमी	बुधवार	भाद्रपद शु. 5
11.	20 सितम्बर	अनन्त चतुर्दशी	शुक्रवार	भाद्रपद शु. 14
12.	02 अक्टूबर	गांधी जयन्ती	बुधवार	2 अक्टूबर
13.	1 नवम्बर	पेड़ा ग्यारस	शुक्रवार	कार्तिक कृ.11
14.	3 नवम्बर	छोटी दीपावली	रविवार	कार्तिक कृ. 13
15.	4 नवम्बर	दीपावली	सोमवार	कार्तिक कृ. 14
16.	19 नवम्बर	कार्तिक पूर्णिमा	मंगलवार	कार्तिक शु. 15

नोट– 1. राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर खण्डपीठ के निर्णय रिट याचिका संख्या 1101/80 दिनांक 26.7.88 तथा श्रम विभाग के आदेश क्रमांक एफ–11/9/श्रम/86 दिनांक 22.11.88 के अनुसार प्रत्येक शुक्रवार को भी अहिंसक अगता घोषित है।

2. अगतों के पालनार्थ कृपया संबंधित पालिकाधिकारी व जिला कलेक्टर/उपखण्ड अधिकारी/ तहसीलदार व पुलिस अधीक्षक/थानाधिकारी व श्रम विभाग अधिकारी से सम्पर्क करें।

–अध्यक्ष/मंत्री, जीव दया मण्डल ट्रस्ट (रजि.) टोंक (राज.

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

300/- रूपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

(अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् की योजना के अन्तर्गत)

7008 डॉ. के.एल. बोरा, धुलिया (महा.)
7009 श्री किरण जी मेहता, जोधपुर (राज.)
7010 श्रीमती बबीता जी मेहता, मारगोआ
7011 सौ. शोभा लक्ष्मीकान्त रायसोनी, भिगवण, पुणे (महा.)
7012 डूंगरवाल राजकीय पाठशाला कुशालपुर, रायपुर हरीपुर, पाली (राज.)
7013 श्री बृजरत्न जी आचार्य, कुशालपुर, रायपुर-हरीपुर, पाली (राज.)
7014 श्री भरतनारायण जी आचार्य, कुशालपुर, रायपुर-हरीपुर, पाली (राज.)
7015 श्री ठाकुर सुरेन्द्रसिंहजी, कुशालपुर, रायपुर-हरीपुर, पाली (राज.)
7016 Smt. Saroj Bahenji, Bangalore (Karnataka)
7017 Shri Babubhai Ji Chedda, Cochin
7018 Shri C.U.Shah, Chennai (T.N.)
7019 Shri Babulal Ji Khivsara, Raichur (Karnataka)
7020 Shri Mithalal Mahendra Kumar Saklecha Ji, Jalna
7021 Shri R. Dharmichand Ji Dungarwal, Chennai (T.N.)
7022 Shri M.Dharmichand Ji Surana, Chennai (T.N.)
7023 Shri Gisulala Shantilal Ji Kothari, Chennai (T.N.)
7024 Shri Bharti Harkishandas Ji Sait, Junagarh (T.N.)
7025 Shri Jayantilal Ji Katrela, Coimbatore (T.N.)
7026 Shri J. Mohanlal Ji Surana, Chennai (T.N.)
7027 Shri Nihalchand Ji Taleda, Vaniyambadi (T.N.)
7028 Shri Jaswantmal Ji Dugad, Bangalore (T.N.)
7029 Shri Parasmal Ji (Lodha) Bangalore (T.N.)
7030 श्री पदमचन्द जी मेहता, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)
7031 श्री पवन कुमार जी जैन, अलीगढ़, टोंक (राज.)
7032 श्री महेन्द्र कुमार जी जैन, सहाड़ी, अलवर (राज.)
7033 श्री रामजीलाल जी जैन, खेरली; अलवर (राज.)
7034 श्री अजित कुमार जी जैन, मानसरोवर, जयपुर
7035 श्री भोरीलाल जी जैन, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)
7036 श्री आर.एस. जैन जी, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)
7037 श्री रमेश कुमार जी भण्डारी, पृथ्वीराजनगर, जयपुर (राज.)
7038 श्री रणवीरसिंह जी मेहता, अग्रवाल फार्म, जयपुर (राज.)
7039 श्री विपिन कुमार जी तोतूका, बरकत नगर, जयपुर (राज.)
7040 श्री अशोक कुमार जी जैन, चांदपोल, जयपुर (राज.)
7041 श्री महावीर प्रसाद जी जैन, गांधीनगर, जयपुर (राज.)
7042 श्री रमेशचन्द जी जैन, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

7043 श्री दयाचन्द जी जैन, बाईसगोदाम, जयपुर (राज.)
7044 श्री मनोज कुमार जी कांकरिया, कानोता बाग, जयपुर (राज.)
7045 श्री विजय जी लोढ़ा, एम.एस.बी. का रास्ता, जयपुर (राज.)
7046 श्री उम्मेदमल जी बैद, बड़ी चौपड़, जयपुर (राज.)
7047 श्री वर्द्ध. स्था. जैन श्रावक संघ, कजगांव (महा.)
7048 श्री नरेश जी मेहता, लालकोठी, जयपुर (राज.)
7049 श्री पारसमल जी जैन, आदर्शनगर, जयपुर
7050 श्री यशवन्त जी लोढ़ा, सी–स्कीम, जयपुर (राज.)
7051 श्री कमल जी जैन, जवाहर नगर, दिल्ली
7052 श्री मृणाल जी जैन, हवा सड़क, जयपुर (राज.)
7053 श्री सतीश जी सिंघवी, किशनपोल बाजार, जयपुर (राज.)
7054 श्री अजय जी गुप्ता, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)
7055 Shri S.Gyanchand Ji Jain, Chiltoor
7056 श्री राजेन्द्र जी कोठारी, बोलपुर, वीरभूम (पं बंगाल)
7057 श्री प्रसन्नकुमार जी सिंघवी, ब्यावर (राज.)
7058 श्री गौतमचद जी बोहरा, ब्यावर(राज.)
7059 श्री हुकमीचन्द जी मेहता, ब्यावर (राज.)
7060 श्री चेतनमल जी नाहटा, ब्यावर (राज.)
7061 श्री बाबूलाल जी लखीचन्द जी ओस्तवाल, उमराणा, नासिक (महा.)
7062 डॉ. राधेश्याम जी अग्रवाल, धुलिया (महा.)
7063 श्री नरेन्द्र कुमार जी ओस्तवाल, सेंधवा (म.प्र.)
7064 श्री महेन्द्र कुमार जी ओस्तवाल, सेंधवा (म.प्र.)
7065 श्री सुरेश जी जैन ओस्तवाल, सेंधवा (म.प्र.)
7066 श्री अशोक जी साण्ड, सूरत (गुजरात)
7067 श्री अशोक जी बाफना, अहमदाबाद (गुजरात)
7068 श्री नगीनचन्द बंशीलाल जी कांकरिया, नन्दुरबार (महा.)
7069 श्री नेमीचन्द जी मोहरचन्द जी नाहटा, कुरा, रायपुर (छत्तीसगढ़)
7070 श्री बबलू जी मुणोत, बागवरा (छत्तीसगढ़)
7071 श्री अमोलकचन्द बंशीलाल जी लूंकड़, देवला, नासिक (महा.)
7072 श्री वर्द्धमान जी बरमेचा, मुलुंड, मुम्बई (महा.)
7073 श्री रमेश जी बाफना, इन्दौर (म.प्र.)
7074 श्री उत्तमचन्द जी कोठारी, इन्दौर (म.प्र.)
7075 श्री नेमीकुमार जी मुणोत, नवसारी (गुजरात)
7076 श्री नरेन्द्र जी बंशीलाल जी लुंकड़, कोटा (राज.)
7077 श्री एम.आर.जी विजयराज जी कांकरिया, कोटा (राज.)
7078 श्री यशवन्त जी जीतमल जी सुराणा, जयपुर (राज.)
7079 श्री करणसिंह जी पुत्र श्री नारायणसिंह जी वेद मेहता, मुम्बई (महा.)
7080 श्री रोहित जी पुत्र श्री रघुवीरचन्द जी कोठारी, बड़ौदा (गुजरात)

7081 श्री प्रकाशमल जी पुत्र श्री जीतमल जी सुराणा, कोटा(राज.)
7082 श्री संतोष कुमार जी पुत्र श्री सुगनचन्द जी कोठारी, भोपाल (म.प्र.)
7083 श्री कमलापत जी पुत्र श्री मालचन्द जी धाड़ेवा, सरदारशहर (राज.)
7084 श्री रिखबदास जी पुत्र श्री बाबुलाल जी संचेती, वैजापुर, औरंगाबाद (महा.)
7085 श्री पारसमल जी पुत्र श्री भीवकराज जी संचेती, वैजापुर, औरंगाबाद (महा.)
7086 श्रीमती जयकंवर बाई जी श्री रविन्द्र कुमार जी संचेती, वैजापुर (महा.)
7087 श्री स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, वैजापुर औरंगाबाद (महा.)
7088 श्री कैलाश जी पुत्र श्री बाबूलाल जी संचेती, खंडावा, औरंगाबाद (महा.)
7089 श्री सुरेशचन्द जी पुत्र श्री उत्तमचन्द जी संचेती, चालीसगांव,जलगांव (महा.)
7090 श्री प्रेमचन्द जी पुत्र श्री कचरदास जी संचेती, शिरजागांव, जलगांव (महा.)
7091 श्री ललित कुमार जी जोगड़, पिलखोड़, जलगांव (महा.)
7092 श्री आनन्द कुमार जी बोरा, पिलखोड़, जलगांव (महा.)
7093 श्री सुन्दर जी मिठाईवाला, चालीसगांव, जलगांव (महा.)
7094 श्री कानमल जी बाफना, चालीसगांव, जलगांव (महा.)
7095 श्री सुशील कुमार जी बाफना, विल्होली, नासिक (महा.)
7096 श्री सुमतिलाल जी बोरा, वरखेड़ा, नासिक (महा.)
7097 श्री फूलचन्द जी पीपाड़ा, पिपलगांव बसवना, नासिक (महा.)
7098 सौ. सुजाता जी संचेती, खण्डावा, औरंगाबाद (महा.)
7099 श्री राजमल जी बरड़िया, बोरखेड़ा (पिरोचे), जलगांव (महा.)
7100 श्री महेन्द्र कुमार जी पुत्र श्री अशोक कुमार जी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)
7101 श्री छोगालाल जी पुत्र श्री बसराज जी बागमार, अहमदाबाद (गुजरात)
7102 श्री सुरेश कुमार घी वाला, अहमदाबाद (गुजरात)
7103 श्री मदनलाल जी संकलेचा, नरडाना, धुलिया (महा.)
7104 श्री भीकमचन्द जी अलिझाड़, पोना चौपड़ा, जलगांव (महा.)
7105 सौ. नमिता जी पारख, नांदगांव, नासिक (महा.)
7106 श्री दिलीपचन्द जी विनायक्या, सटाणा, नासिक (महा.)
7107 श्री अध्यक्ष महोदय, वर्द्ध. स्था. जैन श्री संघ, सटाणा, नासिक (महा.)
7108 श्री शान्तिलाल जी रांका, सटाणा, नासिक (महा.)
7109 सौ. सुरेश जी बागरेचा, लासलगावं (महा.)
7110 Shri Sampatraj Ji Munot, Hyderabad (A.P.)
7111 Shri Kalash ji Kothari, Gangavati (Karnataka)
7112 Shri Ramesh Ji Salecha, Gangavati, Koppal (Karnataka)
7113 Smt. Indirabai Ji Dhariwal, Hyderabad (A.P.)
7114 Shri Parasmal Ji Bhandari, Hyderabad (A.P.)
7115 Shri Prakashchand Ji Sahlot, Khairatabad(A.P.)
7116 Shri Suryaprakash Ji Nabria, Secunderabad(A.P.)
7117 Shri Amritkumar Ji Porwal, Hyderabad (A.P.)
7118 Shri Lokesh Kumar Ji Chhajer, Hyderabad (A.P.)

7119 Shri Gajraj Ji Kawad, Hyderabad (A.P.)
7120 Shri H- Sajjanraj Ji Jain, Hyderabad (A.P.)
7121 Shri Subhashchand Ji Munot, Hyderabad (A.P.)
7122 Shri Suresh Ji Bhansali, Secunderabad (A.P.)
7123 Shri Umesh Kumar Ji, Hyderabad (A.P.)
7124 Shri Sushiladevi Bantia, Chennai (T.N.)
7125 Shri Dilip Ji Sankala, Bangalore (Karnataka)
7126 Shri Sushil Kumar Ji Jain, Secunderabad (A.P.)
7127 Shri Hukmichand Ji Sancheti, Secunderabad (A.P.)
7128 श्री सम्पतमल जी पुत्र श्री बस्तीमल जी डोसी, पाली मारवाड़ (राज.)
7129 Shri Moolchand Ji Golecha, Hyderabad (A.P.)
7130 Shri M.Khayilal Ji Jain, Bangalore (Karnataka)
7131 Shri Ladualal Ji Jain, Bangalore (Karnataka)
7132 Shri Kanihaylal Ji Surana, Bangalore (Karnataka)
7133 Shri K.Nemichand Ji Anchaliya, Bangalore (Karnataka)
7134 Shri G. Pukhraj Ji Mehta, Bangalore (Karnataka)
7135 Shri Rameshchand Ji Jain, Bangalore (Karnataka)
7136 Shri G.Shantilal Ji Jain, Bangalore (Karnataka)
7137 Shri S. Shobhagmal Ji Ranka, Bangalore (Karnataka)
7138 Shri Vasanth Kumar Ji Ranka. Bangalore (Karnataka)
7139 Shri Chainraj Ji Chhajjed, Bangalore (Karnataka)
7140 Shri Malaram Ji Bafna, Bangalore (Karnataka)
7141 Shri Kanyalal Ji Ganna, Bangalore (Karnataka)
7142 Shri Durgachand Ji Bhandari. Bangalore (Karnataka)
7143 Shri Mahendra Ji Munot, Bangalore (Karnataka)
7144 Shri Virendra Ji Betala, Bangalore (Karnataka)
7145 Shri Megraj Ji Choudhary, Bangalore (Karnataka)
7146 Shri Parasmal Ji Chuttar, Bangalore (Karnataka)
7147 Shri Tejmal Ji Bhandari, Bangalore (Karnataka)
7148 Shri Lalith Kumar Ji Gandhi. Bangalore (Karnataka)
7149 Shri Manohar Ji Roonwal, Bangalore (Karnataka)
7150 श्री लालचन्द जी जैन, एडवोकेट दिल्ली
7151 श्री खुशालचन्द जी जैन, शाहदा, नन्दूरबार (महा.)
7152 श्री अक्षय जी पगारिया, जोधपुर (राज.)
7153 श्री विपुल जी जैन, जोधपुर (राज.)
7154 श्री रविन्द्र जी मेहता, जोधपुर (राज.)
7155 श्री राजकुमार जी पोरवाल, जोधपुर (राज.)
7156 श्री रवि जी भंसाली, जोधपुर (राज.)

7157 श्री विरेन्द्र जी तेहरान, जोधपुर (राज.)
7158 श्री सुनील जी मोहनोत, जोधपुर (राज.)
7159 श्री ऋषभ जी मेहता, जोधपुर (राज.)
7160 श्री रतनराज जी बालड़, जोधपुर (राज.)
7161 श्री ऋषभ जी चोरड़िया, बालेसर, दुर्गावता, जोधपुर (राज.)
7162 श्री मोहनलाल जी जैन, केसरीसिंहपुर (राज.)
7163 श्री श्रीपाल जी जैन, केसरीसिंहपुर (राज.)
7164 श्री रामस्वरूप जी जैन, झालावाड़ (राज.)
7165 श्री नरेद्र कुमार जी जैन, इन्दौर (म.प्र.)
7166 श्री राकेश कुमार जी जैन,जयपुर (राज.)
7167 श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
7168 श्री ओमप्रकाश जी जैन, जयपुर (राज.)
7169 श्री शिखरचन्द जी कोठिया, जयपुर (राज.)
7170 श्री दीनदयाल जी जैन, जयपुर (राज.)
7171 श्री दिनेश कुमार जी जैन, झोटवाड़ा, जयपुर (राज.)
7172 श्री महावीर प्रसाद जी जैन, इन्दौर (म.प्र.)
7173 श्री रामकरण जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
7174 श्री ऐवन्ता कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
7175 श्री दीपक कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
7176 डॉ. राजेन्द्र कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
7177 श्री सुनील जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
7178 श्री नरेश जी जैन, जोधपुर (राज.)
7179 श्री ताराचन्द जी गोलिया, जोधपुर (राज.)
7180 श्री एस.जे. कोठारी, दिल्ली
7181 श्री सुरेन्द्र जी भंसाली, जोधपुर (राज.)
7182 श्री प्रकाशचन्द जी नाहटा, जलगांव (महा.)
7183 श्री सुभाषचन्द जी रांका, पिपलनेर, धुलिया (महा.)
7184 श्री शान्तिलाल जी दर्डा, जलगांव (महा.)
7185 श्री चन्दनमल जी रेदासनी, जलगांव (महा.)
7186 श्री राजमल जी बोरा, जलगांव (महा.)
7187 श्री पारसमल जी सोनी, जलगांव (महा.)
7188 श्री प्रसन्न कुमार जी मंडलेचा, जामनेर, जलगांव (महा.)
7189 श्री महेन्द्र कुमार जी मंडलेचा, जामनेर, जलगांव (महा.)
7190 सौ. सरोजदेवी जी मेहता, जलगांव (महा.)
7191 श्री अशोक कुमार जी खिंवसरा, जलगांव (महा.)
7192 श्री भीकमचन्द जी टाटिया, खेतिया, बडवानी (म.प्र.)
7193 श्री शान्तिलाल जी विनायक्या, खेतिया, बड़वानी (म.प्र.)
7194 श्री नवीन कुमार जी विनायक्या, खेतिया, बड़वानी (म.प्र.)

7195 श्री प्रमोद जी संचेती, जलगांव (महा.)
7196 श्री राजेन्द्र जी संचेती, जलगांव (महा.)
7197 श्री चम्पालाल जी सोनी, जलगांव (महा.)
7198 श्री उगमचन्द जी मंडलेचा, फत्तेपुर, जलगांव (महा.)
7199 श्री प्रवीण कुमार जी बोहरा, जामनेर, जलगांव (महा.)
7200 श्री ईश्वरलाल जी साबद्रा, जामनेर, जलगांव (महा.)
7201 श्री नन्दलाल जी मंडलेचा, भुसावल, जलगांव (महा.)
7202 श्री दिलीप कुमार जी मंडलेचा, भुसावल, जलगांव (महा.)
7203 श्री प्रदीप कुमार जी जैन, इन्दौर (म.प्र.)
7204 श्री सज्जनराज जी सोनी, जलगांव (महा.)
7205 श्री मांगीलाल जी वेदमूथा, जामनेर, जलगांव (महा.)
7206 श्री निलेश जी शाह, मुम्बई (महा.)
7207 श्री सुरेश कुमार जी सोनी, जलगांव (महा.)
7208 श्री जेठूसिंह जी राजपुरोहित, जलगांव (महा.)
7209 श्री जवरीलाल जी शर्मा, जलगांव (महा.)
7210 श्री रमेश जी दुसाणे, जलगांव (महा.)
7211 श्री संजय जी शर्मा, जलगांव (महा.)
7212 श्री राजेन्द्र जी लोढ़ा, नासिक (महा.)
7213 श्री दीपचन्द जी नाहटा, सोनाला, जलगांव (महा.)
7214 श्री प्रकाश जी जगताप, जलगांव (महा.)
7215 श्री राजकुमार जी बिरारी, जलगांव (महा.)
7216 श्री सुरेशचन्द जी साबद्रा, जामनेर, जलगांव (महा.)
7217 श्री ईश्वरचन्द जी बोहरा, जामनेर, जलगांव (महा.)
7218 श्री राजेन्द्र जी कावड़िया, जामनेर, जलगांव (महा.)
7219 श्री सुरेश जी ओस्तवाल, जामनेर, जलगांव (महा.)
7220 री सुंबरलाल जी ललवाणी, जामनेर, जलगांव (महा.)
7221 श्री कचरूलाल जी बोहरा, जामनेर, जलगांव (महा.)
7222 श्री सुभाषचन्द जी बोहरा, जामनेर, जलगांव (महा.)
7223 श्री कान्तिलाल जी बोहरा, जामनेर, जलगांव (महा.)
7224 श्री मनोज कुमार जी चोरड़िया, फत्तेपुर, जलगांव (महा.)
7225 Shri Goutam Chand Ji Jain, Bangalore (Karnataka)
7226 श्रीमती कमलादेवी जी मूथा, पीपाड़शहर, जोधपुर (राज.)
7227 श्री सम्पतराज जी लुणावत, पीपाड़ शहर, जोधपुर (राज.)
7228 Shri Ganeshmal Ji Jain, Chennai (T.N.)
7229 श्री हुक्मीचन्द जी बाफना, पीपाड़ शहर, जोधपुर (राज.)
7230 श्री नन्दलाल जी कटारिया, पीपाड़ शहर, जोधपुर (राज.)
7231 श्री पारसमल जी जैन, पालासनी, जोधपुर (राज.)
7232 श्री शान्तिलाल जी जैन, पालासनी, जोधपुर (राज.)

7233 श्री शान्तिलाल जी सुराणा, नई दिल्ली
7234 पिंकी जी श्री रविन्द्र जी सिंघवी, पीपाड़ शहर, जोधपुर (राज.)
7235 श्री रमेशचन्द जी बाघमार, पीपाड़शहर, जोधपुर (राज.)
7236 श्रीमती विमला देवी जी बोहरा, पीपाड़ शहर, जोधपुर (राज.)
7237 श्रीमती मधू जी बोहरा, पीपाड़ शहर, जोधपुर (राज.)
7238 Shri Anil Ji Katariya, Kodli, Satara (Maharashtra.)
7239 श्रीमती सुमित्रा जी चौधरी, पीपाड़शहर, जोधपुर (राज.)
7240 श्रीमती शान्तिबाई जी सुराणा, पीपाड़ शहर, जोधपुर (राज.)
7241 Shri Sajjanraj Ji Munoth, Chronepet, Chennai (T.N.)
7242 श्री बुद्धमल जी खींवसरा, पुंदलु (पुलु) नागौर (राज.)
7243 श्रीमती उच्छबकंवर जी कांकरिया, पीपाड़शहर, जोधपुर (राज.)
7244 श्री तेजराज जी भण्डारी,, खेजड़ला, जोधपुर (राज.)
7245 Shri K.M. Madanraj Ji Jain, Chidambaram, Cudlore (T.N.)
7246 श्री शान्ति गुरु एजेन्सी, त्रिचनापल्ली (तमि.)
7247 श्री सुरेन्द्र जी वेद, भिलाई (म.प्र.)
7248 श्री मानचन्द जी चौधरी, जोधपुर (राज.)
7249 श्री विजयप्रकाश जी मूथा, पीपाड़सिटी, जोधपुर (राज.)
7250 श्री सुमेरनाथ जी पुत्र श्री माणकनाथ जी मोदी, जोधपुर (राज.)
7251 श्री सायरचन्द जी किस्तुरचन्द जी बाघमार, पीपाड़ सिटी, जोधपुर (राज.)
7252 श्रीमती मधु जी जैन धर्मपत्नी श्री कमल जी जैन,पीपाड़ सिटी,जोधपुर (राज.)
7253 श्री नेमीचन्द जी कांकरिया, पीपाड़ शहर, जोधपुर (राज.)
7254 श्रीमती ललिता जी कोठारी, पीपाड़ सिटी, जोधपुर (राज.)
7255 श्री कीर्ति एल.शाह, सूरत (गुजरात)
7256 श्री ताराचन्द जी अभिषेक कुमारजी सांखला, जोधपुर (राज.)
7257 श्री नरेश कुमार जी संचेती, जोधपुर (राज.)
7258 Anju Ji Nahar, Chennai (T.N.)
7259 Shri Chotmal Ji Munot, Chromepet, Chennai (T.N.)
7260 श्री बुधराज जी मूथा, बाला, जोधपुर (राज.)
7261 Shri Ramswaroop Chandera Ji Mouth, Chennai (T.N.)
7262 सौ. प्रिया जी ललवाणी, जलगांव (महा.)
7263 सौ. प्रतिभा नीलम जी जैन, मुम्बई (महा.)
7264 सौ. भारती विजय जी जैन, मुम्बई (महा.)
7265 श्री पवन कुमार जी बाफना, भोपालगढ़, जोधपुर (राज.)
7266 श्री राजीव जी भानावत, आनन्द (गुजरात)
7267 श्री पोपटलाल जी ओस्तवाल, पाचोरा जलगांव (महा.)
7268 श्री लक्ष्मीकान्त जी चौधरी, जलगांव (महा.)
7269 श्री कचरदास जी चोरड़िया, नासिक (महा.)
7270 श्री प्रकाश जी कारंजकर, जलगांव (महा.)

7271 श्री आनन्दा जी गवली, जलगांव (महा.)
7272 श्री रविन्द्र जी थुदगर, जलगांव (महा.)
7273 श्री राजाराम जी जगताप, जलगांव (महा.)
7274 श्री राजेश जी जगदाले, जलगांव (महा.)
7275 श्री रविकिरण जी वर्मा, जलगांव (महा.)
7276 श्री राहुल जी ललवाणी, जामनेर, जलगांव (महा.)
7277 श्री महेन्द्र जी पुत्र श्री शाह दुर्लभ जी, जलगांव (महा.)
7278 श्री बंशीलाल जी चोरड़िया, जलगांव (महा.)
7279 श्री रणजीत कुमार जी जैन, जलगांव (महा.)
7280 श्री वेल्जी जी पटेल, जलगांव (महा.)
7281 श्री महेश जी चौधरी, जलगांव (महा.)
7282 श्री विजयचन्द जी बोरा, विटनेर, जलगांव (महा.)
7283 श्री सुरेन्द्र जी लोढ़ा, जलगांव (महा.)
7284 श्री गिरीश कुमार जी जैन, जलगांव (महा.)
7285 श्री भंवरलाल जी लुणिया, जलगांव (महा.)
7286 श्री अनिल जी बाफना, जलगांव (महा.)
7287 श्री बंशीलाल जी तातेड़, जलगांव (महा.)
7288 श्री ईश्वरलाल जी कोठारी, जामनेर, जलगांव (महा.)
7289 श्री प्रकाशचन्द जी बोरा, सिहाड़े, औरंगाबाद (महा.)
7290 श्री दिलीप जी झांवड़ 'जैन', जलगांव (महा.)
7291 श्री किशोर जी सुराणा, जलगांव (महा.)
7292 श्री दिलीपकुमार जी दर्डा, जलगांव (महा.)
7293 श्री आदेशकुमार जी जैन, राजणी,, जामनेर (महा.)
7294 श्री प्रवीण कुमार जी ललवाणी, जलगांव (महा.)
7295 श्री मनोज भाई,
7296 श्री सुशीलकुमार जी बोहरा, जामनेर, जलगांव (महा.)
7297 श्री हेमन्त कुमार जी ललवाणी, जामनेर, जलगांव (महा.)
7298 श्री सुशील कुमार जी सिंसोदिया, जामनेर, जलगांव (महा.)
7299 श्री अशोक जी कोटेचा, मुक्ताई नगर, जलगांव (महा.)
7300 श्री अनिल कुमार जी अलिझाड़, मुक्ताई नगर, जलगांव (महा.)
7301 श्री उमेश कुमार जी बोहरा, जामनेर, जलगांव (महा.)
7302 श्री प्रकाशचन्द जी नवलखा, जामनेर, जलगांव (महा.)
7303 श्री मुकेश जी जैन, जलगांव (महा.)
7304 श्री संजय जी भामरे, जलगांव (महा.)
7305 श्री विकास कुमार जी जैन, कोटा (राज.)
7306 श्री पाबूदान जी संचेती, खेतिया, बड़वानी (म.प्र.)
7307 श्री नवीन कुमार जी विनायकिया, खेतिया, बड़वानी (म.प्र.)
7308 श्री माणकलाल जी विनायकिया, खेतिया, बड़वानी (म.प्र.)

7309 श्री दीपचन्द जी लोढ़ा, खेतिया, बड़वानी (म.प्र.)
7310 श्री जसराज जी टाटिया, खेतिया, बड़वानी (म.प्र.)
7311 श्री मुकेश कुमार जी लुणावत, खेतिया, बड़वानी (म.प्र.)
7312 श्री मिठालाल जी भंसाली, खेतिया, बड़वानी (म.प्र.)
7313 श्री विजयकुमार जी लुणावत, खेतिया, बड़वानी (म.प्र.)
7314 श्री हीरालाल जी संचेती, खेतिया, बड़वानी (म.प्र.)
7315 श्रीमती पुष्पाबाई जी बाफना, खेतिया, बड़वानी (म.प्र.)
7316 श्री झूंबरलाल जी मूथा, देवुर बु., धुलिया (महा.)
7317 श्री अध्यक्ष महोदय, देवुर बु., धुलिया (महा.)
7318 श्री आदेश कुमार जी मूथा, देवुर, बु., धुलिया (महा.)
7319 श्री कांतिलाल जी रांका, जलगांव (महा.)
7320 श्री सुरेश कुमार जी झांबड़, जलगांव (महा.)
7321 श्री , जलगांव (महा.)
7322 श्री स्वरूपकुमार जी लूंकड़, जलगांव (महा.)
7323 श्री दिलीपकुमार जी श्रीश्रीमाल, जलगांव (महा.)
7324 श्री रमेशचन्द जी पुत्र श्री जवरीलाल जी संकलेचा, जलगांव (महा.)
7325 श्री प्रकाशचन्द जी कोठारी, जलगांव (महा.)
7326 श्री अजय कुमार जी ललवाणी, जलगांव (महा.)
7327 श्री जवरीलाल जी रांका, जलगांव (महा.)
7328 श्री उत्तमचन्द जी पारख, जलगांव (महा.),
7329 श्री संदीप कुमार जी मूथा, जलगांव (महा.)
7330 श्री अनिल कुमार जी कोटेचा, जलगांव (महा.)
7331 श्री प्रमोद कुमार जी जैन, जलगांव (महा.)
7332 श्री देवीचन्द जी जैन, जलगांव (महा.)
7333 श्री कंवरलाल जी टाटिया, जलगांव (महा.)
7334 श्री विजयचन्द जी जैन, जलगांव जलगांव (महा.)
7335 श्री मगराज जी बाफना, जलगांव (महा.)
7336 श्री सुरेशचन्द जी बाफना, जलगांव (महा.)
7337 श्री प्रवीणचन्द जी बोहरा, जलगांव (महा.)
7338 श्री उत्तमचन्द जी चोरड़िया, जलगांव (महा.)
7339 श्री राजेन्द्र जी सांखला, जलगांव (महा.)
7340 डॉ. जीवनलाल जी बोरा, कजगांव, जलगांव (महा.)
7341 श्री मांगीलाल जी हीरण, कजगांव, जलगांव (महा.)
7342 श्री सुगनमल जी ललवाणी, कजगांव, जलगांव (महा.)
7343 श्री नरेश कुमार जी धाड़ीवाल, कजगांव, जलगांव (महा.)
7344 श्री नीतिन कुमार जी धाड़ीवाल, कजगांव, जलगांव (महा.)
7345 श्री छोटूलाल जी खिंवसरा, कजगांव, जलगांव (महा.)
7346 श्री सुरेश कुमार जी हिरण, कजगांव, जलगांव (महा.)
7347 श्री सुनिल कुमार जी पारख, वडाले, जलगांव (महा.)

7348 श्री विजय कुमार जी छाजेड़, सोंदाड़ा, नासिक (महा.)
7349 सौ. कंचनबाई जी छाजेड़, सटाणा, नासिक (महा.)
7350 श्री दिलीप कुमार जी टाटिया, सटाणा, नासिक (महा.)
7351 सौ. सविता जी सुराणा, देवला, नासिक (महा.)
7352 सौ. सरलाबाई जी हीरालाल जी छाजेड़, इगतपुरी, नासिक (महा.)
7353 श्री जवरीलाल जी छाजेड़, इगतपुरी, नासिक (महा.)
7354 सौ. पुष्पाबाई जी लुणावत, इगतपुरी, नासिक (महा.)
7355 श्री मनसुखलाल जी लुणावत, इगतपुरी, नासिक (महा.)
7356 श्री सुभाषचन्द जी हीरालाल जी गादिया, पिपलगांव, नासिक (महा.)
7357 श्री अध्यक्ष महोदय, पीपलगांव, नासिक (महा.)
7358 कु. रूपाली जी कोठारी, निफाड़, नासिक (महा.)
7359 श्री सरूपचन्दजी बांठिया, वैजापुर, औरंगाबाद (महा.)
7360 श्री चांदमल जी हिरण, वैजापुर, औरंगाबाद (महा.)
7361 श्री प्रकाशचन्द जी जैन, वडाला वडाली, जलगांव (महा.)
7362 श्री महेन्द्र कुमार जी बागरेचा, कजगांव, जलगांव (महा.)
7363 श्री नरेन्द्र कुमार जी धाड़ीवाल, कजगांव, जलगांव (महा.)
7364 श्री वर्द्धमान जी चोरड़िया, कजगांव, जलगांव (महा.)
7365 श्री मोहनलाल जी श्रीश्रीमाल, हिमायतनगर, नान्देड़ (महा.)
7366 श्री संजय जी संकलेचा, बोरकुंड, धुलिया (महा.)
7367 श्री किशोर जी सिंघवी, फागणा (महा.)
7368 श्री नीलेश कुमार जी गोठी, घोटी, नासिक (महा.)
7369 श्री सागर जी सेठिया, होलनांथा, धुलिया (महा.)
7370 श्री किशनलाल जी लुणावत, इगतपुरी, नासिक (महा.)
7371 श्री किशनलाल जी पिंचा, घोटी, नासिक (महा.)
7372 श्री सुआलाल जी लखीचन्द जी लुणावत, नासिक रोड़ (महा.)
7373 श्री मेघराज जी लुणावत, इगतपुरी, नासिक (महा.)
7374 श्री दिलीप जी अग्रवाल, धुलिया (महा.)
7375 श्री विनय कुमार जी मेहता, सोलसुंबा, वलसाद (महा.)
7376 श्री महावीर जी बोथरा, बल्लारी (कर्नाटक)
7377 श्री नितिन कुमार जी बोथरा, बीजापुर (कर्नाटक)
7378 Shri Ajitraj Ji Kothari,. Chennai (T.N.)
7379 Shri Nainmal Ji Jain,. Chennai (T.N.)
7380 Shri Pathanraj Ji chhalani, Chennai (T.N.)
7381 Shri Prakashchand Ji Surana, Cuddldre (T.N.)
7382 Shri Premchand Ji Menta,. Chennai(T.N.)
7383 श्रीमती शारदा जी सुराणा, जोधपुर (राज.)
7384 Shri Kamal Ji Chordia, Chennai (T.N.)
7385 Shri Hansraj Ji Gang, Chennai (T.N.)

7386 Shri Ajeet Ji Khumbat, Kalyan (M.S.)
7387 श्री मोहित जी बाफना, जोधपुर (राज.)
7388 श्री अनिल जी मेहता, जोधपुर (राज.)
7389 श्री प्रकाशमल जी कटारिया, जैतारण, पाली (राज.)
7390 Shri Bhanwalal Ji Katariya, Hyderabad (A.P.)
7391 Smt. Rekha Ji, Secundrabad (A.P.)
7392 श्री दीपक कुमार जी जैन, भरतपुर (राज.)
7393 श्री राजेन्द्र जी व्यास, रायपुर, पाली (राज.)
7394 Shri Lakshmichand Ji Nahata, Chennai (T.N.)
7395 श्री प्रदीपकुमार जी जैन, गंगापुर सिटी, सवाईमाधोपुर (राज.)
7396 Shri Prakashchand Ji Surana, Chennai (T.N.)
7397 Shri P. Mithalal Ji Pokrana, Vellore (T.N.)
7398 श्री मोहनलाल जी लुणिया, देशनोक, बीकानेर, (राज.)
7399 Shri P. Sajanraj Ji Rajesh Kumar Ji Kothari, Chennai (T.N.)
7400 Shri Sohanraj Ji, Perambur, Chennai (T.N.)
7401 Shri Mahesh Kumar Ji Singhvi, Chennai (T.N.)
7402 श्री नरेश कुमार जी जैन, कोटा (राज.)
7403 श्रीमती शान्ता कुमारी जी पटवा, रतलाम (म.प्र.)
7404 श्रीमती प्रभा जी जैन धर्मपत्नी श्री उमेशचन्द जी जैन, कोटा (राज.)
7405 श्री पी.के.जैन, तुगलकाबाद, दिल्ली
7406 श्री सुधीर जी भंसाली, जयपुर (राज.)
7407 श्री नरेन्द्र जी सिंघवी, जयपुर (राज.)
7408 श्री अशोक जी बाफना, अहमदाबाद (महा.)
7409 श्री भंवरलाल जी सोनी, गिरी, पाली (राज.)
7410 श्री धर्मीचन्द जी चौहान, गिरी, पाली (राज.)
7411 मैसर्स जगदम्बा टेन्ट हाउस, गिरी, पाली (राज.)
7412 श्री प्रेम कुमार जी गांधी, चन्द्रपुर (महा.)
7413 श्री हेमन्त जी मल्हारा, औरंगाबाद (महा.)
7414 श्री अजित कुमार जी मूथा, सातारा (महा.)
7415 श्री शशिकुमार जी गांधी, सातारा (महा.)
7416 श्री विमलचन्द जी जैन, जयपुर (राज.)
7417 Shri Suganraj Ji Bhandari, Chennai(T.N.)
7418 Shri Motilal Ji Samdari, Kelambakam (T.N.)
7419 Shri Indrachand Ji Nabharia, Chennai (T.N.)
7420 Shri Dharmichand Ji Marlecha, Chennai (T.N.)
7421 Shri Shantilal Ji Marlecha, Chennai (T.N.)
7422 Shri Piyarelal Ji Bohra, Chennai (T.N.)
7423 Shri Lalchand Ji Kataria, Chennai (T.N.)

7424 Shri Phoolchand Ji Kataria, Chennai (T.N.)
7425 Shri Premchand Ji Jain, Chennai (T.N.)
7426 Shri Mahaveerchand Ji Marlecha, Chennai (T.N.)

जिनवाणी को साभार प्राप्त

7000/- गुप्तदानी ब्यावर से जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

1101/- श्रीमती सौभाग्यकंवर जी गोलेच्छा, ब्यावर, स्व. श्री मीठालाल जी गोलेच्छा (गिरीवाला) ब्यावर की पुण्य स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

1000/- लाडश्रीबेन लाभचन्द जी नाहर, संग्रामपुरा, सूरत (गुजरात), जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

1000/- श्री मिश्रीलाल जी महावीरचन्द जी कांकरिया, जोधपुर, श्री गौतममुनि जी म. सा. आदि ठाणा 3 के पीपाड़ में दर्शन करने की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

501/- श्री खेमीचन्द जी नवरतनमल जी कांकरिया, पीपाड़शहर, सौ. का. तारादेवी जी की अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री बदरमल जी सूरजमल जी धोका, यादगिरि, सुश्राविका श्रीमती तारादेवी (धर्मपत्नी स्व. श्री पूरणमल जी धोका) का स्वर्गवास 20.11.2001 को मद्रास में हो गया। उनकी पुण्य स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

500/- सौ. का. वन्दना (सुपुत्री कुशलचन्द जी मेहता, पल्लीपट्ट) का 30.11.2001 को चि. राकेश जी (सुपुत्र श्री प्रकाशचन्द जी गोलेच्छा, चेन्नई) के साथ विवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में नौरतनमल कुशलचन्द मेहता की ओर से जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

500/- श्री भाऊलाल जी भागचन्द जी बम्ब, बोरकुण्ड (धुलिया), माताश्री श्रीमती सूरजबाई जी बम्ब की प्रथम पुण्य तिथि दिनांक 18.11.2001 के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती चूंकीकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री मांगीलाल जी गोलेछा (गिरीवाले), ब्यावर, अपनी सुपौत्री सौभाग्यवती श्रीमती प्रमिला-विनोद कुमार जी बोहरा, जैतारण के सकुशल सुपुत्री जन्म के उपलक्ष्य में भेंट।

351/- श्री गौतमचन्द जी मीठालाल जी, महावीरचन्द जी पगारिया, चेन्नई, माताश्री का देहावसान हो जाने की पुण्य स्मृति में भेंट।

251/- श्री विजयराज जी गौतमचन्द जी मूथा, (मादलिया) पीपाड़ शहर, कमलादेवी की 35 की तपस्या के उपलक्ष्य में जिनवाणी को भेंट।

251/- श्री मांगीलाल जी, गौतमचन्द जी कटारिया, पीपाड़ शहर, 31 की तपस्या के उपलक्ष्य में जिनवाणी को भेंट।

250/- श्री प्रेमराज जी बेताला, इन्दौर, परम पूज्य श्री मालवसिंह जी, परम विदुषी महासती पूज्य श्री कौशल्याकंवर जी म.सा. आदि ठाणा-7 के जानकीनगर चातुर्मास के सफल एवं आनन्ददायक समापन के अवसर पर सहर्ष जिनवाणी को भेंट।

200/- श्री शान्तिलाल जी बुधराज जी मूथा, पीपाड़सिटी, विजयलक्ष्मी के अठाई की

तपस्या की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

200/– श्री नन्दलाल जी कटारिया, पीपाड़ शहर, संगीता जी कटारिया के अठाई की तपस्या की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

151/– श्री चंचलराज जी मेहता, जयपुर, श्रीमती सोहनकुमारी जी के स्वर्गवास दिनांक 1.10.2001 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

101/– श्री ओमील, सुपुत्र श्री प्रवीण कुमार जी गांग के जन्म दिवस की शुभ वर्षगांठ दिनांक 30.12.2001 के उपलक्ष्य में श्री नौरतनमल जी साहब एवं श्री प्रवीण कुमार जी गांग, जोधपुर की तरफ से जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

100/– श्री प्रसन्नचन्द जी सिंघवी, पीपाड़ शहर, श्रीमती पिंकी–रवि सिंघवी की अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

100/– श्री हजारीलाल जी शीतलप्रसाद जी जैन, हिण्डौन सिटी, स्व. श्रीमती बीनादेवी जी जैन धर्मपत्नी श्री हजारीलाल जी जैन की पुण्य-स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

51/– श्री रामदयाल जी जैन गंगापुर सिटी, श्री भागचन्द जी जैन के सुपुत्र विकास के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को साभार-प्राप्त

151/– श्री चंचलराज जी मेहता, जयपुर, धर्मपत्नी श्रीमती सोहनकुमारी जी मेहता का स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में सम्यग्ज्ञानप्रचारक मण्डल को सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार-प्राप्त

500/– श्री कल्याणमल चंचलमल चोरड़िया ट्रस्ट, जोधपुर।

पर्युषण सहायता

वडाला	501.00	शेलवड़	151.00

अहिंसावर्ष में गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध आवश्यक

भगवान महावीर के 2600वें जन्म कल्याणक वर्ष को भारत सरकार ने अहिंसा वर्ष घोषित किया है, किन्तु अहिंसा को लेकर सरकार द्वारा बृहद्स्तर पर कोई घोषणा नहीं की गई। अहिंसाप्रेमियों की मांग है कि इस वर्ष में भारत सरकार को यह घोषणा कर देनी चाहिए कि भारतभर में अब कहीं भी गोवध नहीं होगा। यदि ऐसा किया गया तो यह अहिंसावर्ष सदियों तक याद रखा जाएगा। सभी अहिंसा प्रेमियों से निवेदन है कि वे इस आवश्यक एवं उचित मांग को बुलन्दी दें, ताकि भारत सरकार इस निर्णय के लिए तत्पर हो। यह कोई असम्भव कार्य नहीं है।

–राजेन्द्र प्रसाद जैन, एडवोकेट, भवानीमण्डी (राज.)

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर को पुस्तक प्रकाशन हेतु साभार-सहयोग प्राप्त

60000/— श्रीमान् मनोहरराज जी पुत्र स्व. श्री मोहनलाल जी कांकरिया, चेन्नई। बोर्ड की विभिन्न कक्षाओं की 10000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु।

33,443/— श्री पारसमल जी, धर्मचन्द जी पुत्र स्व. श्री इन्द्रचन्द सा हीरावत, मुम्बई। जैन धर्म प्रथमा की 5000 प्रतियों के प्रकाशनार्थ।

32,747/— संघ संरक्षक श्री मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। जैन धर्म मध्यमा की 5000 प्रतियों के प्रकाशनार्थ।

31000/— श्रीमती विमलाजी धर्मपत्नी श्री नारायणचन्द जी मेहता, जोधपुर। जैन धर्म परिचय की 5000 प्रतियों के प्रकाशनार्थ।

31000/— गुप्त दानी, विजयनगर, राज.। जैन धर्म चन्द्रिका की 2000 प्रतियों के प्रकाशनार्थ।

20000/— संघाध्यक्ष श्रीमान् रतनलाल सी. बाफना, जलगांव। पुस्तक प्रकाशनार्थ अग्रिम

15000/— श्रीमती प्रेमलता/श्री चन्द्रराज जी सिंघवी, जोधपुर। जैन धर्म प्रवेशिका की 2000 प्रतियों के प्रकाशनार्थ।

10001/— श्रीमान् महावीर चन्द्र जी, महेन्द्रचन्द्र जी पुत्र स्व. श्री करोड़ीमल जी लोढ़ा, जोधपुर। जैन सिद्धान्त प्रभाकर की 1100 प्रतियों के प्रकाशनार्थ।

सहयोग

2000/— श्रीमान् के. सोहनलाल जी ओस्तवाल (चेन्नई)

1500/— श्रीमान् रमेश जी दुग्गड़ (चेन्नई)

500/— सौ. मधुबाला जी, जीवनलाल जी ओस्तवाल, नासिक (महा.)

300/— श्रीमान् अनोपचन्द जी जैन (चेन्नई)

बोर्ड की परीक्षाएँ 6 जनवरी 2002 को

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की आगामी परीक्षा 6 जनवरी 2002 रविवार को दोपहर 12 से 3 बजे तक लगभग 170 केन्द्रों पर कक्षा एक से नव तक की आयोजित होंगी। जिन्होंने परीक्षा हेतु आवेदन पत्र भिजवा दिये हैं, उनके पास प्रवेश-पत्र भेजे जा रहे हैं। परीक्षार्थी नियत समय से 15 मिनिट पूर्व अपने परीक्षा केन्द्र पर अवश्य पहुंच जायें। —**नवरतन डागा, सचिव**

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-२ की परीक्षा का केन्द्र दुर्ग में भी

श्री रतनलाल सी. बाफना फाउण्डेशन द्वारा जैन धर्म का मौलिक इतिहास *भाग– 2 (आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. द्वारा रचित) पर आयोजित परीक्षा का* केन्द्र छत्तीसगढ़वासियों की सुविधा के लिए दुर्ग में भी स्थापित हो, इसके लिए हमारा प्रयत्न चल रहा है। फाउण्डेशन के नियमानुसार 25 से अधिक परीक्षार्थी होने पर परीक्षा केन्द्र खोला जा सकता है। छत्तीसगढ़ के इच्छुक परीक्षार्थी इस पते पर सम्पर्क करें—**कन्हैयालाल कटारिया, सचिव श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सुजान भवन, महावीर नगर, दुर्ग (छत्तीसगढ़) फोन नं. 323913(कार्यालय)**

जीवन को बनाने या बिगाड़ने का
सारा दायित्व चरित्र पर ही निर्भर है।

-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments from :

S. D. GEMS

&

SURBHI DIAMONDS

202, RATNA DEEP, BEHIND PANCHRATHNA.
OPERA HOUSE, MUMBAI - 400 004
PHONE : (O) 3690189, 3684091 (R) 8724429, 8735824
MOBILE : 98200-30872

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

Gurudev

SURANA

Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company
With Fraternity Feel, Holding Hands
With Customers in Their Success

Just Contact For

- Hire Purchase
- Leasing
- Bills Discounting
- Foreign Exchange

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chn@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O. : No. 16, Whites Road, II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014.

Branches :

• Bangalore • Coimbatore • Ernakulam
• Kollidam • New Delhi

JAI MAHAVEER JAI GURU HASTI

With Best Compliments from :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 5, CAR STREET, POONAMALLEE,

CHENNAI 600 056

PHONE : 6272609

BANKERS : PHONE / 6272906

No. 5 A, CAR STREET, POONAMALLEE,

CHENNAI 600 056

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

"आचार्य श्री हस्ती"

With Best Compliments From:

EVEREST GEMS LTD.

16 B, KOK PAH MANSION,
68-60 CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON,
HONGKONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : *Sunil Lunawat*
Raj Mohan Kothari

With Best Compliments From

धन रोग और शोक दोनों का घर है, जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को काटने वाला है।

– आचार्य श्री हस्ती

M/s HIMA GEMS

7th Floor,
KOKPAH,
58-60, Cameron Road,
T.S.T. Kowloon
HONGKONG.
Tel 23671457

Director
HEMANT SANCHETI

परंपरागत कलाकृती का
बेहतरीन अलंकार...

आधुनीक युगका
सुवर्ण श्रृंगार..!

हम पीढियों से दे रहे हैं
आपकी भावनाओं को शुद्ध, सच्चे व बेमिसाल आभूषणों की शक्ल.
आप बरसों से कर रहे हैं हमारे रिश्तों पर खरे मन से विश्वास...

A HOUSE OF TRUST
RL
GROUP
SINCE 1854

मे. राजमल लखीचंद
(गोल्ड एम्पोरियम)
१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव-४२५ ००१, (महाराष्ट्र) फोन : (०२५७) २२६६८१, ८२, ८३

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पंजीकृत संख्या 3653/57

THE CLOSEST YOU CAN STAY TO KANDIVALI STATION.

Kalpataru Vatika-Phase II, is an imposing 14 storeyed residential tower that is far away from the hustle and bustle, yet near enough to the station.

It features 2 wings each having 4 apartments per floor of 2 BHK. It offers superior quality amenities (already developed) within the complex such as lush landscaped garden, swimming pool, club house with gymnasium, steam and sauna.

While Kalpataru Vatika-Phase I is already complete, with 4 wings of 7 storeys each, Kalpataru Vatika-Phase II is well under construction.

For further details or for a site visit, call Sangeeta or Rajeev at 282 2679/282 2888.

KALPA-TARU

Site address: Akurli Road, Opposite ESIS Hospital, Kandivali (East). Tel: 887 1911.
Kalpataru Group of Companies: 111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai 400 021. Fax: 204 1548 / 288 4778.
E-mail: sales@kalpataru.com or visit us at www.kalpataru.com

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर ✆ 562929, 564771